भास्वती

2071-02-30

॥ श्रीः ॥

काशी संस्कृत ग्रन्थमाला

४६



श्रीमाञ्छतानन्द विरचिता

# भास्वती

श्रीमज्ज्यौतिषीन्द्रमुकुटमणि श्री ६ छत्रधरसूरिसूनुना मिरजापुरमण्डलान्तर्गताहीग्रामस्थशङ्करपाठशालायाः प्रधानाध्यापकेन सनातनधर्म्मोपदेशकेन गणक श्रीमातृप्रसाद ( दैवज्ञभूषण ) पाण्डेयेन कृतां छात्रबोधिनीनाम संस्कृतसोदाहरण भाषा टीकासहिता

**आचार्य रामजन्म मिश्र**

ज्योतिषविभागाध्यक्ष, संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, द्वारा संशोधन,

टिप्पण्यादिभिरलंकृता



**चौखम्भा संस्कृत संस्थान**

भारतीय सांस्कृतिक साहित्य के प्रकाशक तथा विक्रेता

पो० आ० चौखम्भा, पो० बा० नं० ११३९

जडाव भवन, के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेन

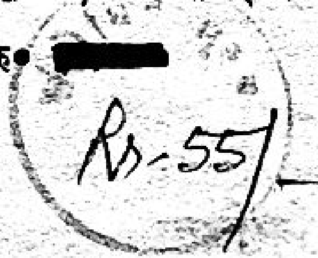
वाराणसी ( भारत )

प्रकाशक : चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी

मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

संस्करण : द्वितीय, वि० संवत् २०४२

मूल्य : रु० [redacted]






फोन : ६५८८९

अन्य प्राप्तिस्थान

**चौखम्भा विश्वभारती**

पोस्ट बाक्स नं० १०८४

चौक ( चित्रा सिनेमा के सामने )

वाराणसी-२२१००१ ( भारत )

फोन ६५४४४

THE

KASHI SANSKRIT SERIES

46

*****

# BHĀSVATI

OF

ŚRĪ ŚATĀNANDA

*with*

*Sanskrit and Hindi Commentries*

By

MĀTṚPRASĀDA PAṆḌEYA

Edited with Notes

By

ĀCHĀRYA RĀMAJANMA MIŚRA

*Head, Department of Jyotisa,*

*Sanskrit Vidyā Dharma Vijnāna Sankāya*

*Banaras Hindu University*

CHAUKHAMBHA SANSKRIT SANSTHAN

*Publishers and Distributors of Oriental Cultural Literature*

P. O. Chaukhambha, Post Box No. 1139

Jadau Bhawan, K. 37/116, Gopal Mandir Lane

VARANASI ( INDIA )

Phone : 65889

Second Edition : 1985

Price : Rs. [redacted]

*Also can be had of*

**CHAUKHAMBHA VISVABHARATI**

**Post Box No. 1084**

**Chowk ( Opposite Chitra Cinema )**

**VARANASI-221001**

**Phone : 65444**

# समर्पण

श्री६तातचरण,

आपकी ही आज्ञा को शिरोधार्य करके मैंने इस भास्वती की संस्कृत तथा सोदाहरण भाषा टीका बनाई है, अन्य विद्वान् लोग तो इसकी यथोचित समालोचना करेहींगे परन्तु इसे अविकल सुनने से आपको विशेष आनन्द होगा।

जौ बालक कर तोतरि बाता,
सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता।

अत एव आपके ही श्रीचरणों में अर्पण करते हुए मुझे विशेष आनन्द होता। इति शम्।

सम्वत् १९९८ वैक्रम
अक्षयतृतीया

भवदीय वात्सलय भाजन—
मातृप्रसाद पाण्डेय

# प्रस्तावना

ज्योतिषशास्त्र अपने उत्कृष्टतम गुणों के आधार पर आज के वैज्ञानिक युग में भी जनमानस पर छाया हुआ है। इससे स्वतः इसकी वैज्ञानिकता सिद्ध होती है। 'ज्योतिषशास्त्र अनेक भेद विततं स्कन्धत्रयाधिष्ठितं' के अनुसार संहिता होरा और सिद्धान्त इन तीन स्कन्धों में ज्योतिषशास्त्र का वर्णन प्राप्त है।

सृष्टि के आरम्भ में प्रथम संहिताशास्त्रों का आश्रय लेकर ही जन-जीवन पल्लवित और पुष्पित होता था। तदनन्तर मनुष्य के जीवन पर ग्रहों का प्रभाव किन-किन रूपों में कब-कब होता है इत्यादि जिज्ञासा की पूर्ति के रूप में होराशास्त्र रूप द्वितीय स्कन्ध का अवतरण हुआ और संहिता तथा होरा को गाणिति सिद्धान्तों की कसौटी पर कसने के लिए निकष रूप सिद्धान्त भाग का प्रादुर्भाव हमारे पूर्वाचार्यों एवं महर्षियों ने अपनी जिज्ञासा से किया। इन्हीं सिद्धान्तगणित के पुस्तकों की कोटि में भास्वती का नाम भी आता है। इसके प्रणेता आचार्य शतानन्द भास्कराचार्य से पूर्व अपने समय के बड़े ही स्वनामधन्य सिद्धान्तवेत्ता थे। इनकी भास्वती का अध्ययन बड़े स्नेह समादर से लोग करते थे और उन दिनों भास्वती के जानकार विद्वान् का बड़ा समादर होता था। मेरे बाल्यकाल में मेरे चाचा जी श्री पण्डित रूद्रदत्त मिश्र जी अपने बड़े भाई श्री बबुआ जी मिश्र के सम्बन्ध में बड़े आदर से कहा करते थें 'कि भाई जी को भास्वती अच्छी लगी हुई है'।

आचार्य शतानन्द के सम्बन्ध में तथा 'भास्वती' के सम्बन्ध में आचार्य सुधाकर द्विवेदी जी ने अपने 'गणकतरंगिणी' में लिखा है।

"अस्य माता सरस्वती पिता च शङ्करनामाऽऽसीत्। अयं च पुरुषोत्तम पुरी निवासी शशि युग्मखैकमिते ( १०२१ ) शके भास्वती नामक करण ग्रन्थ वराहमिहिर स्वीकृत सूर्य सिद्धान्त संमतं व्यलिखत्। अहं शतानन्द इति बुद्धया सञ्चारेणास्मिन् ग्रन्थे प्रायो गुणहाराः शतसंख्याका एव साधितः शतानन्देन।"

श्री पण्डित सुधाकर द्विवेदी जी ने शकाब्द १०२१ में भास्वती की रचना को माना है। भारतवर्ष में चिरकाल तक इसकी अत्यधिक प्रसिद्धि थी पद्मावती के वर्णन प्रसङ्ग में हिन्दी के कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने लिखा है।

"भावसती औ व्याकरन पिङ्गल पाठ पुराण।
वेद भेद सो बात कहि जनुलागे हिय वान॥"

भास्वती की अनेक टीकायें संस्कृत में तथा हिन्दी भाषा में भी लिखी गई हैं। हिन्दी की टीकायें कुछ प्राचीन आरम्भिक हिन्दी में लिखो गई हैं। जिसे गणकतरंगिणी में देखा जा सकता है।

ग्रन्थ के मङ्गलाचरण से ही लेखक का नाम ग्रन्थारम्भ काल तथा आराध्य परम्परा का ज्ञान हो जाता है।

"नत्वामुरारेश्चरणारविन्दं श्री माञ्छतानन्द इति प्रसिद्धः।
तां भास्वतीं शिष्यहितार्थमाह शाके विहीने शशिपक्षखैकैः॥ १॥"

आचार्य ने कुल ६ अध्यायों में १–तिथ्यादिध्रुवाधिकार, २–ग्रहध्रुवाधिकार, ३–पञ्चाङ्गस्पष्टाधिकार, ४–ग्रहस्पष्टाधिकार, ५–त्रिप्रश्नाधिकार, ६–चन्द्र ग्रहणाधिकार, ७–सूर्यग्रहणाधिकार, ८–परिलेखाधिकार। में सिद्धान्त के पूरे पूरे सभी भागों का समावेश बड़े सरल विधि से कर दिया है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में अत्यधिक रुचि रखने के कारण ही यह प्रकाशित हो सकी है इसके प्रकाशन में वाराणसी के ख्यातनाम प्रकाशक चौखम्भा संस्कृत संस्थान के स्वामी श्री मोहनदास जी गुप्त तथा उनके चि० राजेन्द्र कुमार के सहयोग की सराहना के साथ ही हम इस संस्थान के निरन्तर विकाश की कामना करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रेस के सञ्चालक श्री व्रजरत्न दास जी एवं अन्य कर्मचारियों ने भी प्रचुर सहयोग दिया है जिसके लिए ये सभी सज्जन धन्यवाद के पात्र हैं।

जो कुछ भी इस प्रकाशन में कार्य किया है व्यस्तता एवं पारिवारिक उलझनों के कारण सन्तोषप्रद नहीं हुआ है। वैसे भी चाहे सचेष्ट जितना भी रहा जाय कुछ न कुछ त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। मैं पाठकों की संतुष्टि को ही अपनी सफलता मानता हूँ और त्रुटियों के लिए आप हमें सूचित कर अनुगृहीत करें जिससे अग्रिम प्रकाशन के अवसर पर मैं आपको सन्तुष्ट कर सकूँ।

राम जन्म मिश्र

# भूमिका

सत्स्वादुमोदकमदन्नपि भक्तहस्ताद्दूर्वादलं कृषति जेमनहेतवे यः ।
तं ज्ञप्ति वैभववशाद्विबुधादि पूज्यं वन्दे महागणपतिं निजबुद्धिवृद्ध्यै ॥१॥

प्रियपाठकगण,

अपनी भाषा की उन्नति ही सब प्रकार के उन्नतियों का मूल है। अत एव देशोन्नति साधन के लिये, साक्षर लोगों का यह कर्त्तव्य है कि पहले अपने यहां के प्राचीन ज्ञान विज्ञानों से भाषा के भण्डार को पुष्ट करें तत्पश्चात् नवीन विज्ञानों के समावेश से समलंकृत करें।

साधारण कृषक से लेकर बड़े बड़े नरपति तक सभी इस बात को जानते हैं कि कार्य के सफलता में काल ( समय) एक असाधारण कारण है। समय पर किया हुआ कार्य थोड़े से प्रयत्न में ही ऐसी सफलता प्राप्त करता है, कि वैसी सफलता असमय में कोटि यत्न करने पर भी असम्भव है समय के प्रतिकूल होने से किसी की कुछ नहीं चलती और समय के अनुकूल होने से सिद्धि करतलगत सी रहती है।

प्राचीन काल में समय पर कार्य करने का इतना ध्यान दिया गया, कि इसका एक पृथक् विज्ञान ( Science ) ही बन गया। समय विज्ञान ज्योतिष मुहूर्त विज्ञानादि उसी के नाम हैं। इस विज्ञान की भी दो शाखाएं हुई ( १ ) गणित और ( २ ) फलित, फलित में इस विषय का वर्णन है कि किस मुहूर्त में कौन सा कार्य करना चाहिये और गणित में समय का निर्धारण किया जाता है।

समय निर्धारण एक गहन विषय है और इसके लिये सूर्य सिद्धान्त ब्रह्मसिद्धान्त आदि बहुत से बड़े बड़े सिद्धान्तग्रन्थ बन चुके हैं परमकारुणीक पण्डितों ने अल्पबोध लोगों के लिये करणकुतूहल-ग्रहलाघव-मकरन्दादि अनेक ग्रन्थ बनाकर उस विज्ञान को और भी सुलभकर दिया, और इन्ही ग्रन्थों के आधार पर सब पञ्चाङ्ग बनते हैं जिससे कि सर्व साधारण को लौकिक वैदिक कार्य्य करने का समय निश्चित करने में अत्यन्त सुविधा हो गई है।

धर्म्मानुरागी आर्य्य सन्तान को कार्य करने के लिये सिवाय पञ्चाङ्ग के अन्य गति नहीं है।

यह "भास्वती" ग्रन्थ जो पञ्चाङ्ग बनाने में करणकुतूहल-ग्रहलाघव-मकरन्दादि के श्रेणी का है परन्तु विशेषता इसमें इतनी है कि यह सूर्यसिद्धान्त[1] का अनुसरण करती है इसी से इसका नाम ( भास्वती ) रक्खा गया है।

इस ग्रन्थ को बने हुए ८१२ वर्ष हुआ और वराहमिहिर[2] के उपदेशानुसार वेध करके ग्रहों की ठीक स्थिति जानकर इसकी रचना की गई है इसी से लोकोक्ति भी प्रसिद्ध है कि 'ग्रहणे भास्वती धन्या' ग्रहण का समय निकालने में भास्वती धन्या है। और ज्योतिष-शास्त्र के प्रत्यक्ष होने में सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण ही प्रधान साक्षी हैं। यथा-'प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।'

इस ग्रन्थ की तीन छपी हुई प्रतियां मुझे बड़े यत्न करने पर मिलीं, एक तो 'अखबार प्रेस' की सम्वत् १९२३ की छपी हुई प्रति, दूसरी 'विनायक प्रेस' की सम्वत् १९४२ की छपी हुई प्रति, और तीसरी 'भारतजीवन प्रेस' की सम्वत् १९४९ की छपी हुई प्रति, और मेरे वृद्ध प्रपितामह श्री ६ पण्डित शङ्कर पाण्डेयजी के पिता श्री ६ पण्डित सदाशिव पाण्डेय जी की एक हस्तलिखित प्रति सम्वत् १८३२ की स्वयम् मेरे पास वर्तमान थी। सुहृद्वर पण्डित श्रीराधाकान्त पाण्डेय जी नव्वाबगंज काशी से

---

१. श्रीसूर्य सिद्धान्त समं समासात्। भा०

२. अथ प्रवक्ष्ये मिहिरोपदेशात्। भा०

मुझे सम्वत् १६२३ की लिखी उनके पूर्वज अखिल ज्योतिषशास्त्र पारावारीण पण्डित श्री काशी प्रसाद पाण्डेय जी की लिखी हुई प्राप्त हुई और पण्डित श्री शारदा प्रसाद तिवारी भदैनी बनारस से उनके पूर्वज पण्डित आत्माराम त्रिपाठी की लिखी हुई सम्वत् १८३५ की एक खण्डित प्रति प्राप्त हुई अत एव उक्त महानुभावों को अनेकानेक धन्यवाद देता हूं।

इसी प्रकार मैंने इन छवों प्रतियों को मिलाया और जहाँ पर इनमें भेद पड़ा वहाँ पर जिस ग्रन्थ का पाठ मुझे प्राचीन तथा शुद्ध जान पड़ा उसी का ग्रहण किया और उस पर अपनी भाषा की उन्नति तथा छात्रों के उपकारार्थ उदाहरणों के सहित 'छात्रबोधिनी' नाम की संस्कृत तथा हिन्दी टीका बनाई और निजनिर्मित 'करणमञ्जरी' नामक ग्रन्थ से सारणी भी दे दिया और वर्षादिक का विश्वा कल्पादिक का गत वर्ष संख्या तथा दिन-गण संख्या और अधिमास जानने का प्रकार भी रख दिया है।

अब यदि इस पुस्तक से छात्रों का कुछ भी उपकार होगा तो मैं अपने को कृतकार्य समझूंगा। इति शम्।

भवदीय कृपापात्र
**मातृप्रसाद पाण्डेय**
शङ्कर पाठशाला
मौ. आही, पो. कछवा
**जिला मिर्जापुर**

# विषय-सूची

## १–तिथ्यादि ध्रुवाधिकार



## २–ग्रहध्रुवाधिकार

## ५–त्रिप्रश्नाधिकार

## ६–चन्द्रग्रहणाधिकार



## ७–सूर्यग्रहणाधिकार



## ८–परिलेखाधिकार

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

# भास्वती

## संस्कृतभाषाटीकोदाहरणविशिष्टटिप्पण्यादिभिः समन्विता—

गौरीविलासिनः पादौ ध्यायं ध्यायं पुनःपुनः।
भास्वत्याः क्रियते टीका मयेयं छात्रबोधिनी ॥ १ ॥

मङ्गलं ग्रन्थसमयश्च—

**नत्वा मुरारेश्चरणारविन्दं श्रीमाञ्छतानन्द इति प्रसिद्धः।**
**तां भास्वतीं शिष्यहितार्थमाह शाके विहीने शशिपक्षखैकैः[1] ॥१॥**

अन्वयः—श्रीमान् शतानन्द इति प्रसिद्धः (ज्योतिर्विदः=ग्रन्थकारः) मुरारेः चरणारविन्दं नत्वा। तां भास्वतीं शशिपक्षखैकैः विहीने शाके शिष्यहितार्थम् आह।

सं० टी०—ग्रन्थादौग्रन्थमध्येग्रन्थान्ते ग्रन्थनिर्विघ्नं समाप्त्यर्थं तथा शिष्येभ्य आनुषङ्गिकमङ्गलार्थञ्च मङ्गलाचरणमाचरणीयमिति शिष्टाचारः, श्रीमाञ्छतानन्द संज्ञकेनेति प्रसिद्धः य आचार्यवर्यः सः मुरारेश्चरणारविन्दं श्रीकृष्णस्य-पादपद्मं नत्वा शिष्यहितार्थं तां भास्वतीमाह कदा शशिपक्षखैकैर्विहीनेशाके, अत इष्टशकमध्ये शशिपक्षखैकैर्विहीने, ऊनिते सति ग्रन्थोत्पत्तेरब्दा भवन्ति ॥ १ ॥

भा० टी०—भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द को प्रणाम कर श्रीमान् शतानन्द आचार्य ने शिष्यों के हित के लिए १०२१ (१०९९ ई०) शकाब्द में भास्वती नाम का ग्रन्थ बनाया ॥ १ ॥

उदाहरण—वर्त्तमान शकाब्द १८३३ में १०२१ घटाया तो शास्त्राब्द ८१२ हुआ ॥ १ ॥

---

१. इस चतुर्थ पद का द्व्यर्थक प्रयोग आचार्य ने किया है। एक तो 'शशिपक्ष खैकैः शाके भास्वतीं शिष्य हितार्थमाह' संकेतित है और दूसरा 'शशिपक्ष खैकैः १०२१ शाके (वर्तमान शकात्) विहीने शास्त्राब्दा ८१२ पिण्डः स्यात्' यह भाव होता है। करण ग्रन्थों में सर्वत्र इस विधि का अनुसरण किया गया है। ग्रहलाघव में 'द्व्यब्धीन्द्रोनित....इत्यादि के अनुसार अहर्गण लाकर वर्तमान शकाब्द से ग्रन्थारम्भ तथा गणित का लाघव दोनों प्रदर्शित किया गया है।

गतकलिः प्रकारान्तरेण शास्त्राब्दविधिश्च—

**शाको नवाद्रीन्दुकृशानुयुक्तः कलेर्भवत्यब्दगणस्तुवृत्तः ।**
**वियन्नभोलोचनवेदहीनः शास्त्राब्दपिण्डः कथितः स एव ॥२॥**

अन्वयः—शाको (वर्तमान शकः) नवाद्रीन्दुकृशानुयुक्तः कलेरब्दगणः भवति (स च) वियन्नभोलोचनवेदहीनः शास्त्राब्दपिण्डः स एव (पूर्व कथित) कथितः ।

सं० टी०—इष्टशकमध्ये नवाद्रीन्दुकृशानुयुक्ते सति कलेर्गताब्दा गतवर्षा भवन्ति तेषु कलिगत वर्षेषु वियन्नभोलोचनवेद हीने सति स एवाब्दपिण्डो भवति तमेव शास्त्राब्द पिण्डं कथयन्ति दैवज्ञाः ॥ २ ॥

भा० टी०—वर्तमान शकाब्द में ३१७९ युक्त करने से गत कलि होता है । गत कलि में ४२०० को घटाने से शास्त्राब्द पिण्ड कहा जाता है ॥ २ ॥

उदाहरण—वर्तमान शकाब्द १८३३ में ३१७९ युक्त किया तो गतकलि ५०१२ हुआ और गतकलि ५०१२ में ४२०० घटाया तो शास्त्राब्द ८१२ हुआ ॥२॥

संवत् शाकविधिः—

**कृतयुगाम्बरवह्निभिरुज्झितो गतकलिः किल विक्रमवत्सरः ।**
**शरहुताशनचन्द्रवियोजिते भवति शाक इह क्षितिमण्डले ॥३॥**

अन्वयः—इह क्षितिमण्डले गतकलिः कृतयुगाम्बरवह्निभि रुज्झितो किल विक्रमवत्सरः (स च) शरहुताशनचन्द्रवियोजिते शाकः भवति ।

सं० टी०—गतकलिमध्ये कृतयुगाम्बरवह्निभिरुज्झिते सति श्रीमद्विक्रमादित्यसम्वत्सरो भवति तस्मिन् वत्सर मध्ये शरहुताशनचन्द्र वियोजिते विगते सति इह क्षितिमण्डले भूमण्डले शालिवाहनीयः शाको भवतीति नियमः ॥ ३ ॥

भा० टी०—गतकलि में ३०४४ घटाने से विक्रमसंवत्सर होता है और विक्रम संवत्सर में १३५ घटाने से इस भूमण्डल में शकाब्द होता है ॥ ३ ॥

उदाहरण—गतकलि ५०१२ में ३०४४ घटाया तो विक्रम-संवत् १९६८ हुआ । इस विक्रम-सम्वत् १९६८ में १३५ घटाया तो शालिवाहन का शकाब्द* १८३३ हुआ ॥ ३ ॥

---

* वर्तमान शकाब्द में ७८ युत करने से ईस्वी सन्, ५१५ हीन करने से फसली सन्, ५०४ हीन करने से हिजरी सन् ( १०० वर्ष कुमरी में तीन वर्ष बढ़ता है । अतः अन्तर का ध्यान रखना चाहिए ) होता है । जैसे शकाब्द १८३३ में ७८ युत किया तो ईस्वी सन् १९११ हुआ । शकाब्द १८३३ में ५१५ हीन किया तो फसली और बंगला सन् १३१८ हुआ । शकाब्द १८३३ में ५०४ हीन किया तो हिजरी सन् १३२९ हुआ ।

सम्वत्सरपालक-शुद्धि सूर्य्यध्रुवविधयः—

**अथ प्रवक्ष्ये मिहिरोपदेशाच्छ्रीसूर्य्यसिद्धान्तसमं समासात् ।**

**शास्त्राब्दपिण्डः स्वरशून्यदिग्घ्नस्तानाग्नियुक्तोष्टशतैर्विभक्तः ॥४॥**

**लब्धन्नगैः शेषितमङ्गयुक्तः सूर्य्यादिसम्वत्सरपालकः स्यात्[१] ।**

**शेषं हरे प्रोह्यपृथग् गजाशा लब्धं रवेरौदयिको ध्रुवः स्यात् ॥५॥**

अन्वयः—अथ मिहिरोपदेशात् समासात् श्रीसूर्यसिद्धान्तसमं प्रवक्ष्ये । शास्त्राब्द पिण्डः । स्वरशून्यदिग्घ्नः तानाग्नि युक्तः ( सन् ) अष्टशतैः विभक्तः । यत् लब्धं ( तत् ) अङ्गयुक्तः नगैः शेषितम् सूर्यादिसम्वत्सर पालकः स्यात् । शेषं हरे प्रोह्य पृथक् गजाशालब्धं रवेः औदयिकः ध्रुवः स्यात् ।

सं० टी०—अथानन्तरं मिहिरोपदेशात् सूर्यशिक्षातः समासात् संक्षेपात्, श्रीसूर्यसिद्धान्तसमं तुल्यं यथास्यात् तथा वक्ष्ये पूर्वोक्त शास्त्राब्द पिण्डः स्वरशून्यदिग्भिर्गुणितस्तानाग्निभिर्युक्तस्तदष्टशतैर्विभक्तो लब्धं ग्राह्यम् । पूर्वानीतं यल्लब्धं तत्राङ्गयुक्तं सप्तभिः शेषितं सूर्य्यादिसंवत्सरपालकः स्यात्, यदष्टशतविभक्तेऽवशिष्टं शेषं तद्धरेप्रोह्य शोध्य शेषं शुद्धि संज्ञा स्यात् सा शुद्धिर्द्विधास्थाप्यागजाशाभिर्भक्तैकत्र लब्धः सूर्यस्योदयकालिको ध्रुवः स्यात् ॥ ४ ॥ ५ ॥

भा० टी०—अब मैं आचार्य बाराह मिहिर के उपदेश से संक्षेपतः श्रीसूर्य्यसिद्धान्त के समान (सूर्य के स्पष्ट करने की विधि) कहता हूँ । शास्त्राब्द पिण्ड को १००७ से गुणाकर उसमें ३४९ युक्त करके ८०० से भाग दे फिर लब्ध में ६ युक्त करके ७ का भाग देने से जो शेष रहता है । वह सूर्य्यादि सम्वत्सर का पालक होता है, और पूर्व शेष को भाजक में घटाने से शुद्धि होती है । उसको दो जगह रक्खे एक जगह १०८ का भाग देने से जो लब्धि (फल) मिले वह मध्यमसूर्य का ध्रुवाङ्क होता है भागफल तीन अवयव तक ग्रहण करना चाहिए ॥ ४ ॥ ५ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को १००७ से गुणा किया तो ८१७६८४ हुआ इसमें ३४९ युत किया तो ८१८०३३ हुआ इसमें ८०० का भाग देने से लब्धि १०२२ शेष ४३३ मिले । लब्धि १०२२ में ६ युक्त किया तो १०२८ हुआ इसमें ७ का भाग दिया तो शेष ६ बचा अतः सूर्य से छठवाँ शुक्र सम्वत्सर का पालक हुआ । पूर्वोक्त हर ८०० में पूर्व शेष ४३३ को घटाया तो शुद्धि ३६७ हुई शुद्धि ३६७ में १०८ का भाग दिया तो लब्धि ३ शेष ४३ को ६० से गुणा किया तो

१. पिण्डः नगैः शेषितभूमिहीनः ।
सूर्य्यादि सम्वत्सरपालकः स्यात् ॥ इति केचित् ।

२५८० हुआ इसमें हर १०८ का भाग दिया तो लब्धि २३ शेष ९६ को ६० से गुणा किया तो ५७६० हुआ इसमें १०८ का भाग दिया तो लब्धि ५३ मिलो इस प्रकार चैत्रशुक्ल पूर्णिमा के प्रातःकाल सूर्य का अंशादि ध्रुवाङ्क ३।२३।५३ हुआ।

स्फुटार्थ उदाहरण–शास्त्राब्द ८१७ × १००७=८१७६८४ + ३४९=८१८०३३

८०० ) ८१८०३३ ( १०२२ लब्धि + ६ = १०२८ ÷ ७=६

८१७६००  = सूर्यादि सम्वत्सर पालक

४३३ शेष

८०० – ४३३ = ३६७ शुद्धिः + १०८

१०८ ) ३६७ ( ३ अंश

३२४

४३ × ६० = २५८० ( २३ कला

२४८४

९६ × ६० = ५७६० ( ५३ विकला

५७२४

अतः चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के  ३६

प्रातःकाल सूर्य का ध्रुवाङ्क ३।२३।५३ अंशादिक हुआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

चन्द्रध्रुवविधिः—

**सहस्रनिघ्नः खविधूनितोऽधः खसिद्धिभागोनभचक्रशेषः।**
**खपञ्चसंयुक्तदशघ्नशुद्धेश्चन्द्राष्टभागाभ्यधिकः शशांकः॥ ६ ॥**

अन्वयः—( शास्त्राब्दः ) सहस्रनिघ्नः खविधूनितोऽधः खसिद्धिभागोन भचक्रशेषः खपञ्चसंयुक्तदशघ्नः चन्द्राष्टभागाभ्यधिकः शशाङ्कः स्यात् ( मध्यम चन्द्रस्य ध्रुवकः स्यादित्यर्थः )।

सं० टी०—अब्दपिण्डः शास्त्राब्दः सहस्रगुणितः खविधूनितः दशरहितोऽधः स्थानद्वये प्रस्थाप्यः तले-खसिद्धि २४० भागात्तफलेनोनस्तदेव भचक्र २७०० शेषः तदेवशुद्धे खपञ्चयुक्तो दशघ्नः चन्द्राष्टभागेन यल्लब्धं तद्भचक्रशेषमध्ये युते सति चन्द्रध्रुवः स्यात् ॥ ६ ॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को १००० से गुणा कर उसमें १० घटा, दो स्थान में स्थापित कर एक स्थान में २४० का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको दूसरे

स्थान पर रक्खे हुए अङ्क में घटावे फिर उसको भचक्र २७०० मे शेषित करे । शुद्धि में ५० युत करके १० से गुणाकर उसमें ८१ का भाग देने से जो लब्धि मिले वह भचक्र के भाग से जो शेष बचा है उसमें युक्त करने से मध्यम चन्द्रमा का ध्रुवा स्पष्ट होता है ॥ ६ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को १००० से गुणा तो ८१२००० हुआ इसमें १० घटाया तो ८११९९० हुआ इसको दो स्थान में स्थापित किया प्रथम स्थान ८११९९० में २४० का भाग दिया तो अंशादि लब्धि ३३८३।१७।३० मिली इसको दूसरे स्थान ८११९९० में घटाया तो ८०८६०६।४२।३० हुआ । इसको भचक्र २७०० से शेषित किया तो शेष १३०६।४२।३० बचा । शुद्धिध्रुवा ३६७ में ५० युक्त किया तो ४१७ हुआ इसको १० से गुणा किया तो ४१७० हुआ इसमें ८१ का भाग देने से लब्धि अंशादि ५१।२८।५३ मिली इसमें भचक्र से शेषित अङ्क १३०६।४२।३० को युक्त किया तो मध्यम चन्द्रमा का ध्रुवाङ्क १३५८।११।२३ हुआ ॥ ६ ॥

**स्फुटार्थ उदाहरण**—शास्त्राब्द ८१२ × १०००=८१२०००
८१२०००–१०=८११९९० ÷ २४०

२४० ) ८११९९० (३३८३
८११९२०
७० × ६०
२४०) ४२०० (१७
४०८०
१२० × ६०
२४०) ७२०० (३०
७२००
×

८११९९० । ० । ०
३३८३ । १७ । ३०
२७००) ८०८६०६ । ४२ । ३० (२९९
८०७३००
१३०६ । ४२ । ३०

शुद्धिध्रुवा ३६७ + ५०=४१७ × १०=४१७० ÷ ८१
=(५१ । २८ । ५३)+(१३०६ । ४२ । ३०)
= १३५८ । ११ । २३ मध्यम चन्द्रमा का ध्रुवाङ्क हुआ ।

केन्द्रध्रुवविधिः—

**रुद्राहतोवेदयुतस्त्रिवेदशेषश्चतुःषष्टिगुणो रदाढ्यः ।**
**पृथक् खखागाप्तयुतेन्दुकेन्द्रो शुद्ध्यष्टभागाब्दनखांशयुक्तः ॥७॥**

अन्वयः—रुद्राहतो वेदयुतः त्रिवेदशेषश्चतुःषष्टि गुणो रदाढ्यः पृथक् ( स्थानद्वये स्थाप्यः ) खखागाप्त युतः ( पुनः ) शुध्यष्टभागः, शास्त्राब्दनखांश-भागश्च युक्तः ( सन् ) इन्दुकेन्द्रो ( भवति )।

सं० टी०—अब्दपिण्डः शास्त्राब्दः रुद्राहत एकादशगुणितो वेदैःचतुर्भिर्युतस्त्रि-वेदैः शेषितस्तदेवचतुःषष्टिगुणितो रदाढ्यः द्वात्रिंशद्युतः तत्पृथक् स्थानद्वयेस्थाप्यः प्रथम स्थाने खखागाप्तफलेनान्यत्रपुनः पुनः (शुद्ध्यष्टभागेनचाब्दनखांशेन युत इन्दुकेन्द्रोभवति ॥७॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को ११ से गुण के ४ युत करे फिर उसमें ४३ का भाग देने से जो शेष बचे उसको ६४ से गुण के उसमें ३२ युक्त कर दो स्थान में स्थापित करे। एक स्थान में ७०० का भाग देने से जो लब्धि मिले उसे दूसरे में युत करे फिर शुद्धि में ८ का और शास्त्राब्द में २० का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको भी इसमें युक्त करने से चन्द्रमा का केन्द्रध्रुवा स्पष्ट होता है ॥ ७ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को ११ से गुणा किया तो ८९३२ हुआ इसमें ४ युत किया तो ८९३६ हुआ इसमें ४३ का भाग दिया तो शेष ३५ को ६४ से गुणा किया तो २२४० हुआ इसमें ३२ युत किया तो २२७२ हुआ इसको दो जगह स्थापित किया एक जगह २२७२ में ७०० का भाग दिया तो अंशादि लब्धि ३।१२।४४ को दूसरे जगह २२७२ में युक्त किया तो अंशादि २७५।१४।४५ हुआ शुद्धि ३६९ में ८ का भाग दिया तो अंशादि लब्धि ४५।५२।३० मिली और शास्त्राब्द ८१२ में २० का भाग दिया तो लब्धि अंशादि ४०।३६।० मिली सबको एकत्र जोड़ दिया तो मध्यम चन्द्रकेन्द्र का ध्रुवाङ्क २३६१।४३।१४ हुआ ॥ ७ ॥

चन्द्रध्रुवेकेन्द्रसंस्कारविधिः—

**केन्द्रे भवघ्नादिषु नेत्रचन्द्रैर्लब्धोनितो मध्यविधुः ध्रुवःस्यात् ॥८॥**

अन्वयः— सुगमम्।

सं० टी०—चन्द्रकेन्द्राद् भवघ्नादिषुनेत्रचन्द्रैर्यल्लब्धं तेनोनितो मध्य विधुः स्पष्ट मध्यचन्द्र ध्रुवः स्यात् ॥ ८ ॥

भा० टी०—चन्द्रमा के केन्द्र ध्रुवा को ११ से गुणा कर १२५ का भाग दे जो लब्धि मिले वह चन्द्रमा के ध्रुवा में घटाने से चन्द्रमा का स्पष्ट ध्रुवा होता है ॥ ८ ॥

उदाहरण—चन्द्रमा के केन्द्रध्रुवा २३६१।४३।१४ को ११ से गुणा तो २५९७८।५५।३४ हुआ इसमें १२५ का भाग दिया तो लब्ध २०७।४९।५१ मिली इसको चन्द्रमा के ध्रुवा १३५८।११।२३ में घटाया तो स्पष्ट चन्द्रमा का ध्रुवाङ्क ११५०।२१।३० हुआ ॥ ८ ॥

राहुध्रुवविधिः—

**पातः शरघ्नो नगनेत्रयुक्तस्त्रिनन्दशेषो गगनाङ्कनिघ्नः ।**
**द्विरिन्दुरामाप्तखरामहीनः सांशोब्दवृन्दात्पुनरङ्कचन्द्रैः ॥९॥**

अन्वयः (अब्दपिण्डः) शरघ्नः नगनेत्रयुक्तः त्रिनन्दशेषः गगनाङ्क निघ्नः द्वि (स्थानद्वयेति) इन्दुरामाप्तं (लब्धं) खरामं च हीनः कार्यः पुनः अब्दवृन्दः अङ्कचन्द्रै अंशः स (सहितः) पातः (पातस्य ध्रुवो भवति)।

सं० टी —अब्दपिण्डःशरघ्नः पञ्चगुणितः नगनेत्रैः सप्तविंशतिभिर्युतस्त्रि-नन्दैः शेषितः भक्तः गगनाङ्केन निघ्नः गुणितः द्विस्थः प्रथमस्थाने इन्दुरामाप्तै-श्चन्द्ररामैर्भक्तःसन् यल्लब्धं तत्खरामसंयुक्तं सहितम्। द्वितीय स्थानतःहीनं पुनरब्द-पिण्डादङ्कचन्द्रैर्भवते यल्लब्धं तेन युतः पातध्रुवः स्यात् । त्रिनन्दशेषेयदाशून्यं-स्यात्तदाचतुःपञ्चशतानि संयोज्य ततोगगनाङ्कनिघ्नेति क्रियाकार्या किन्त्वत्र-चतुःपञ्चाशत् योजिते सति पातध्रुवो भवतीतिनियमः ॥ ९ ॥

"न प्राप्यते यत्र त्रिनन्दशेषस्तदाखखाब्धीषुयुतं प्रकुर्यात् ।
तदा बुधैः षष्ठिगुणं विधेयम् पूर्वोक्तवत्पातखगो ध्रुवः स्यात्" ॥ १ ॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को ५ से गुणा कर उसमें २७ युक्त करके ९३ का भाग दे शेष को ६० से गुण के दो जगह रक्खे, एक जगह ३१ के भाग से जो लब्धि मिले वह दूसरे जगह घटावे फिर उसमें ३० घटाकर शास्त्राब्द में १९ का भाग देने से जो लब्धि मिले वह उसमें युक्त करने से राहु का ध्रुवांक स्पष्ट होता है।।९।।

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को ५ से गुणातो ४०६० हुआ इसमें २७ युक्त किया तो ४०८७ हुआ इसमें ९३ का भाग दिया तो शेष ८८ बचा इसको ६० से गुणातो ५२८० हुआ फिर इसको दो स्थान में स्थापित किया एक स्थान ५२८० में ३१ का भाग देने से लब्धि अंशादि १७०।१९।२१ मिली इसको दूसरे स्थान में रक्खे हुए ५२८० में घटाया तो ५१०९।४०।३९ हुआ इसमें ३० घटाया तो ५०७९।४०।३९ हुआ शास्त्राब्द ८१२ में १९ का भाग देने से लब्धि अंशादि ४२।४५।० मिली इसको ५०७९।४०।३९ में युत किया तो राहु का ध्रुवाङ्क ५१३०।२५।३९ हुआ ॥ ९ ॥

सूर्यचन्द्रयोः चन्द्रकेन्द्रस्य बीजविधिः—

**पलप्रभाषड्भिहता दशाप्ता पुनश्च भुक्त्या गुणितः क्रमेण ।**
**शतोद्धृतं तदृणकं रवेः स्याद् धनं च चन्द्रे खलु केन्द्रके च ।१०।**

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—पलप्रभा इष्टपलभाषड्भिर्गुणितादशभिर्भक्ता पुनः स्वस्वभुक्त्या क्रमेण गुणिता शताप्ता यल्लब्धं तत्सूर्य्यस्य ऋणाभिधानं चन्द्रचन्द्रकेन्द्रयोः धनाभिधानं देशान्तरं भवति ॥ १० ॥

भा० टी०—पलभाको ६ से गुणकर १० का भाग देवे लब्धि को अपनी-अपनी भुक्ति से गुणा करके १०० का भाग देने से लब्धि सूर्य का ऋण और चन्द्र एवं चन्द्रकेन्द्र का धन संज्ञक अंशादि बीज होता है ॥ १० ॥

उदाहरण—काशी की पलभा ५।४५ को ६ से गुणा कर ३४।३० में १० का भाग दिया, लब्धि ३।२७ को सूर्य की भुक्ति ७ से गुणा किया तो २४।१ हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो लब्धि सूर्य का बीज अंशादि ऋण ०।१४।२९ हुआ। पूर्व की लब्धि ३।२७ को चन्द्रमा की भुक्ति ९० से गुणा किया तो ३१०।३० हुआ इसमें १०० का भाग देने से चन्द्रमा का बीज अंशादि धन ३।६।१८ हुआ। पूर्व की लब्धि ३।२७ को चन्द्रकेन्द्र की भुक्ति १०० से गुणा किया तो ३४५।० हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो चन्द्रकेन्द्र का बीज अंशादि धन ३।२७।० हुआ ॥ १० ॥

"मेषादिगे सायनभागसूर्ये दिनार्द्धभा या पलभाभवेत्सा ।
त्रिष्टा हतास्युर्दशभिर्भुजङ्गैर्दिग्भिश्चराद्धानि गुणोघृतान्त्या ॥ १ ॥
कलासप्त ७ रवेर्भुक्तिः खनन्दाश्च ९० विधोः स्मृताः ।
शतं १०० कलानि केन्द्रस्य राहोश्चैव जिना २४ गतिः" ॥ २ ॥

देशान्तरविधिः—

**रेखास्वदेशान्तरयोजनघ्नी गतिर्ग्रहस्याभ्रगजैर्विभक्ता ।**
**लब्धा हि लिप्ता खचरे विधेयाः प्राच्यामृणं पश्चिमतो धनन्ताः ॥ ११ ॥**

अन्वयः—ग्रहस्य गतिः रेखास्वदेशान्तरयोजनघ्नी अभ्रगजैः विभक्ता लब्धा हि लिप्ता खचरे प्राच्यामृणं पश्चिमतो धनन्ता विधेया ।

सं० टी०—रेखाजनितस्वदेशान्तरयोजनं ग्रहभुक्त्यागुणितोऽभ्रगजैर्विभक्ता लब्धं रेखायाः पूर्वपश्चिमक्रमेणऋणधनसंज्ञकं देशान्तरं भवति ॥ ११ ॥

"पुरीरक्षसां देवकन्याथकाञ्ची सितः पर्वतः पर्यलीवत्सगुल्मो ।
पुरी चोज्जयिन्याह्वयं गर्गराटं कुरुक्षेत्रमेरू भुवो मध्यरेखा ॥ १ ॥
यल्लङ्कोज्जयिनीपुरीपरिकुरुक्षेत्रादिदेशान्स्पृशत् ।
सूत्रं मेरुगतं बुधैर्निगदिता सा मध्यरेखा भुवः" ॥ २ ॥

भा० टी०—रेखा के योजन को भुक्ति से गुणा कर ८० का भाग देने से जो लब्धि मिले वह कलादि रेखा के पूर्व पश्चिम क्रम से ऋण धन संज्ञावाला देशान्तर होता है ॥ ११ ॥

उदाहरण—कुरुक्षेत्र से ६४ योजम काशी है इसको सूर्य की भुक्ति ७ से गुणा तो ४४८ हुआ, इसमें ८० का भाग दिया ता सूर्य का देशान्तर कलादि ५।३६ हुआ एवं चन्द्रमा का ७२।० चन्द्रकेन्द्र का ८८।० रेखा से काशी पूर्व है अतः देशान्तर ऋण संज्ञक हुआ ॥ ११ ॥

**देशान्तरं दृग्गणितात् प्रसाध्य**
**इतीह कल्पान्तसमोध्रुवः स्यात् ॥ १२ ॥**

इति श्रीमच्छतानन्दविरचितायां भास्वत्यां
तिथ्यादि ध्रुवाधिकारः प्रथमः ॥ १ ॥

---

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—रेखायां स्वदेश संस्कारोनास्तितस्मात्प्राक् पश्चाद् भागे देशान्तरो नास्तीति सा रेखाकस्मिन् कस्मिन् देश इत्याकांक्षया श्रीसूर्यसिद्धान्ते "राक्षसालयदेवौकः शैलयोर्मध्यसूत्रगाः । रोहितकमवंती च यथा सन्निहितंसर" इत्यादिशेषाज्ञातव्या रेखेति देशान्तरंदृग्गणितमित्यत्रदृग्गणितग्रहणं तस्माद्देशान्तरं साध्यम् तेन संस्कृता स्वदेशेदृग्गोचराः सन्तीत्युक्तम् तद्यथा यदा ग्रहणेखग्रासो भवति तदा देशान्तरसंस्कारं विना ग्रहणगणितं कृत्वा तद्देशान्तरं रेखाजनितं ज्ञेयम् तत्रोन्मीलनकालः साध्यः स्वदेशे च यन्त्रादिनोन्मीलनकालः साध्यः तयोरन्तरं रेखास्वदेशान्तर घटिका ज्ञातव्या ताभिर्घटिकाभिरनुपातेन देशान्तरयोजनानि साध्यानि तानि रेखास्वदेशान्तरयोजनानि सन्तिरेखोन्मीलनकालात्स्वदेशोन्मीलन कालं यदाधिकं स्वदेशरेखातः प्राग् ज्ञेयम् यद्यन्यं तदापश्चाद्ज्ञेयम् ( देशान्तरं तु प्राग् ऋणं पश्चाद्धनं मतिबोद्धव्यम् ) अथानुपातप्रकारं स्वदेशजनित अक्षांशेनोनानवति ९० लम्बांशास्युःतेषां ज्यालंवज्या अतोनुपातः त्रिज्ययाभूपरिधिर्लभ्यते तदा लंवज्यायाः किमिति यल्लब्धंतत्स्वदेशजनिताभूपरिधिर्लभ्यते पुनरनुपातः यदि षष्टिघटिकाभिः स्वदेशपरिधि प्राप्यते तदा रेखास्वदेशोन्मीलनकालयोरन्तरघटिकाभिः किं फलं यल्लब्धंतद्रेखास्वदेशान्तरयोजनानि तैर्योजनैर्ग्रहाणां-

देशान्तर संस्कारःकार्य्यः तत्पूर्वं स्वदेशजभूपरिधियोजनैर्ग्रहगतिकला लभ्यते तदादेशान्तर योजनैः किं फलं लब्धं ग्रहाणांदेशान्तरकलास्तैः संस्कृताः खेटा देशान्तर संस्कृता भवन्त्येव यथोन्मीलनकालात्कृतं तथोन्मीलनकालादपि कृतं तथैव भवतीति विशेषतः सूर्यग्रहण एव देशान्तरसंस्कारकृते सति भास्वत्या कल्पान्त पर्य्यन्तं समध्रुवः स्यात् ॥ १० ॥

"रसद्मदेशान्तर योजनेभ्यो लब्धं फलं पक्षरसैः कलाद्यम् ।
रेखा परप्राक् स्वमृणं प्रकुर्य्यादर्कध्रुवोऽस्मिन्करणेशतांशे ॥ १ ॥
देशान्तरं खाङ्कनिघ्नं विभजेदभ्रभूधरैः ।
चन्द्रेकेंवत्फलं पाते योजनेभ्यः खखेन्दुभिः ॥ २ ॥
उज्जयिनी रोहितककुव्हर्ये मुनिहिमनिवासमेरूणां देशांतरं न कार्यम् ।
तद्रेखा मध्यसंस्थानदेशेषु तद्देशांतरं योजनात्मकं दृग्गणितात्प्रसाध्यम्" ॥३॥

भा० टी०—दृग्गणित से देशान्तर क्रिया करने पर कल्पान्त के समान ध्रुवा होता है और देशान्तर संस्कार विना स्वदेश में ग्रहणगोचर होने में असंभव रहता है अतएव देशान्तर संस्कार अवश्य करना चाहिये खग्रास में देशान्तर संस्कार के बिना भी ग्रहण दृष्टिगोचर होता है ॥ १२ ॥

इति श्री ज्यौतिषीन्द्रमुकुटमणि श्रीछत्रधरसूरिसूनुना गणक-
मातृप्रसादेन विरचितायां भास्वत्याः छात्रबोधिनी
नाम टीकायां तिथ्यादिध्रुवाधिकारः प्रथमः ॥१॥

---

# अथ ग्रहध्रुवाधिकारः

वर्षाधिपविधिः—

**शास्त्रादि सौराब्दगणात्कलेर्वा वर्षाधिपाः सप्तहृतावशेषाः।**
**शुक्रेन्दुवाचस्पतिसूर्यसौम्याः शनिश्चरारौ क्रमशो भवन्ति ॥१॥**

अन्वयः– शास्त्रादि सौराब्द गणात् गत कलेर्वर्षात् वा सप्तहृता अवशेषाः क्रमशः शुक्रेन्दु वाचस्पति सूर्य सौम्याः शनिश्चरारो वर्षाधिपा भवन्ति।

सं० टी०—शास्त्रं भास्वती तस्यादिः शास्त्रादिरिति शास्त्रादि सौराब्द-गणाद् अब्दपिण्डाद् अथवा गत कलिवर्षात् सप्तावशेषे सति गत वर्षाधिपतिः शुक्रेन्दुवाचस्पतीति क्रमेण वर्षाधिपतिर्भवति यथा–शून्यशेषेशुक्र एकेनचन्द्रः द्वाभ्यांगुरुस्त्रिभिः सूर्यः चतुर्भिर्बुधः पञ्चभिः शनिः षड्भिः भौमः क्रमेण ज्ञेयम्। प्रकारान्तरेण शास्त्राब्दपिण्डमेकविंशतिभिरूनितं कृत्वाष्टषड्भिर्हरेत् यल्लब्धन्ते-नैकोनेनयुतोवर्षाधिपतिः। वाब्दपिण्डमनुनितमष्टषड्भिर्भजेल्लब्धान्वितो वर्षाधि-पतिर्ब्रह्मसिद्धान्ततुल्यः सावनवर्षाधिपशुक्रेन्दुवाचस्पतीति क्रमेण भवतीति सूर्य-सिद्धान्ते प्रदर्शिताः गोलक्रमेण शनीज्यारोर्कोशनेन्दुजेन्दव इति॥

अत्र करणारम्भे शुक्रो वर्षाधिपतिरभूत्तस्माच्छुक्रादिगणना।
कृताशुक्रात्तृतीयः चन्द्रः चन्द्रात्तृतीयो[1] गुरुरित्यादि॥१॥

---

१. कक्षागणनया इति ज्ञेयम्। यथा शुक्रात्-१-शुक्रः, २-बुधः, ३-चन्द्रेति दिक्। उक्तञ्च सूर्य सिद्धान्ते—

मन्दादधः क्रमेण स्युश्चतुर्था दिवसाधिपाः।
वर्षाधिपतयस्तद्वत् तृतीया परिकीर्तिताः॥७८॥
उर्ध्वक्रमेण शशिनो मासानामधिपाः स्मृताः।
होरेशाः सूर्यतनयादधोऽधः क्रमशस्तथा॥७९॥

सू० सि० भूगोलाध्याय।

उपरोक्त अपनी व्याख्या में टीकाकार ने तृतीय कहने पर जो गणना की है वह टीका से स्पष्ट हो रहा है। इसका ज्ञान भी भास्कराचार्य के सिद्धान्त शिरोमणि गोलाध्याय में उल्लिखित कक्षा क्रम से करना चाहिए यथा-'भूमेः पिण्डः शशाङ्कज्ञ कवि रवि कुजेज्यार्किनक्षत्र कक्षाः' इत्यादि।

वर्षाधिपति शनि कक्षा से नीचे तीसरा, चन्द्रमा से उर्ध्वक्रम से क्रमशः मासाधिपति तथा शनि से अधः क्रम से क्रमशः होरेश का ज्ञान करना चाहिए।

भा० टी०—शास्त्राब्द या गतकलि में ७ का भाग देने से क्रमशः शुक्र-चन्द्र-गुरु-सूर्य-बुध-शनि-मंगल सौर वर्षाधिपति होते हैं ( शून्यशेष में शुक्र एक शेष में चन्द्र इत्यादि ) ॥ १ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८।२ में ७ का भाग दिया तो शेष शून्य बचा और गतकलि ५०१२ में ७ का भाग दिया तो भी शेष शून्य बचा यह दोनों प्रकार से गतवर्षाधिपति शुक्र और वर्तमान वर्षाधिपति चन्द्रमा हुआ ॥ १ ॥

मासाधिपविधिः—

**अब्दोऽर्कनिघ्नो रविमासयुक्तः सप्तावशेषे रविमासनाथाः ।**
**ज्ञशुक्रसूर्य्यारसुरेज्यसौरिचन्द्रा युगात्सावनमासतोऽन्ये ॥ २ ॥**

अन्वयः—अर्कनिघ्नः शास्त्राब्दः रविमासयुक्तः सप्तावशेषे ज्ञशुक्रसूर्यार-सुरेज्यसौरिचन्द्राः रविमासनाथाः ( भवन्ति ) अन्ये युगात् सावनमासनाथाः भवन्तीत्येवं कथयन्ति ।

सं० टी०—अब्दपिण्डोऽर्कनिघ्नो द्वादशभिर्गुणितः, गतरविमासयुक्तः सप्ताव-शेषे सति बुध-शुक्र-सूर्य्याद्येकान्तरेण रविमास नाथाः सौरमासाधिपा भवन्ति-तद्यथा शून्यावशिष्टेबुध एकेनशुक्रो द्वाभ्यांरविस्त्रिभिर्भौमश्चतुर्भिर्गुरुः पञ्चभिः शनिः षड्भिश्चन्द्रइत्येकान्तरक्रमेण रविमासनाथाभवन्ति, अन्येयुगात्सावनमास-नाथा भवन्तीति कथयन्ति । अत्रापि करणारम्भे मासाधिपोबुधोऽभूत्तस्माद्बुधा-दितोगणनेति ॥ २ ॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को १२ से गुणा करके गत सौरमास युक्त कर उसमें ७ का भाग देने से शेष क्रमशः बुध-शुक्र-सूर्य-मंगल-बृहस्पति-शनि-चन्द्र-गतसौर मासाधिपति होते हैं, और किसी के मत से गतकलि ५०१२ को भी १२ से गुणा कर सावन मास युक्त कर हर (७) का भाग देने से वर्तमान सावन मासाधिप बुध शुक्र-आदिक होते हैं ॥ २ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को १२ से गुणा किया तो ९७४४ हुआ इसमें गत सौरमास शून्ययुत किया तो ९७४४ हुआ इसमें ७ का भाग दिया तो शून्य शेष बचा इससे गत सौरमासाधिप बुध वर्तमान मासाधिप शुक्र हुआ ।

गतकलि ५०१२ को १२ से गुणा किया तो ६०१४४ हुआ इसमें वर्तमान मास वैशाख की संख्या एक जोड़ा तो ६०१४५ हुआ इसमें ७ का भाग दिया तो शेष एक बचा इससे वर्तमान मासाधिप शुक्र हुआ ॥ २ ॥

संवत् विधिः—

**अब्दः पृथक् खेशगुणः शरागरामाङ्कलब्धेन्द्रियचान्द्रयुक्तः ।**
**तत्षष्टि शेषादिषुभिर्युगानि[1] लब्धानि शेषेऽङ्गिरसः समाः स्युः ।३।**

अन्वयः—अब्दः पृथक् (स्थानद्वये स्थाप्यः) खेश गुणः (पञ्च चन्द्रे-सुलोचनाः क्षेपकादेयास्ततः) शराग रामाङ्क लब्धे (वर्षादयः भवन्ति)। (वर्षः आप्तवर्षेतिभावः) इन्द्रिय चन्द्रयुक्तः (ततो द्वितीयस्थानस्थाब्द पिण्डे युक्तः) तत्षष्टि शेषात् लब्धानि अंगिरसः समाः स्युः। तच्च इषुभिः शेषात् युगानि (पञ्चवर्षात्मकं युगमानं) स्युः।

सं० टी०—अब्दपिण्डः पृथक् स्थानद्वये स्थाप्यः प्रथम स्थाने खेशगुणस्तत्र-वक्षमाणश्लोकोक्त पञ्चचन्द्रेषुलोचनाः क्षेपका देयास्ततः शरागरामङ्कैर्लब्धं वर्षादिर्वर्षैपञ्चदशभिः १५ सहितं द्वितीय स्थाने युक्तं तत् षष्टिशेषिते सति गत सँव्वत्सरं वर्षाद्यं भवति तत्रापि वर्षे इषुभिः भक्ते लब्धानि युगानि भवन्ति।

"अब्दे खेशगुणो देयाः पञ्चचन्द्रेषुलोचनाः।
भास्वतीकरणे नित्यं वत्सरं मिहिरोदितम्" ॥१॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को दो स्थान में स्थापित करके एक स्थान में ११० से गुणाकर उसमें क्षेपक २५१५ युक्त करके ९३७५ का भाग देवे लब्धि वर्ष होता है, शेष को १२ से गुण हर ९३७५ का भाग देने से लब्धि मास होता है, शेष को ३० से गुण कर उक्त हर का भाग देने से लब्धि दिन होता है, शेष को ६० से गुण कर उक्त हर का भाग देने से घटी पलादि होते हैं। वर्ष में १५ युक्त कर दूसरे जगह रक्खे हुए शास्त्राब्द में युक्त करके ६० का भाग देने से जो शेष बचे वह गुरुमान से भुक्त वर्षादि स्पष्ट होता है ॥ ३ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को दो स्थान में स्थापित किया एक स्थान के अंक ८१२ को ११० से गुणा तो ८९३२० हुआ इसमें क्षेपक २५१५ युत किया तो ९१८३५ हुआ फिर इसमें ९३७५ का भाग दिया तो वर्षादि लब्धि ९।९।१६। २७।५१। मिली वर्ष ९ में १५ युत किया तो २४।९।१६।२७।५१। हुआ, इसको दूसरे जगह रक्खे हुए शास्त्राब्द ८१२ में युत किया तो ८३६।९।१६।२७।५१। हुआ वर्ष ८३६ में ६० का भाग देने से शेष वर्षादि ५६।९।१६।२७।५१ हुआ तथा ५६ में ५ का भाग देने पर लब्धि ११ गतयुग तथा १२ वां वर्तमान युग होगा।

---

१. 'युगं स्यात्पञ्चभिर्वर्षैर्युगानि द्वादशैव ते' ना० सं० ३।१४ (शेष पृष्ठ १५ टीप्पणीमें)।

स्पष्ट उदाहरण—

शास्त्राब्द ८१२ ८१२

८१२ × ११० = ८९३२० + २५१५

= ९१८३५ ÷ ९३७५

९३७५) ९१८३५ (९

८४३७५

७४६०

× १२

८९५२० (९

८४३७५

५१४५

× ३०

१५४३५० (१६

९३७५

६०६००

५६२५०

४३५०

× ६०

२६१००० (२७

१८७५०

७३५००

६५६२५

७८७५

× ६०

४७२५०० (५१ आसन्नमान

४६८७५

३७५० = ९।९।१६।२७।५१ वर्षादि

बष ९ में + १५ = २४।९।१६।२७।५१ द्वितीय स्थान स्थित

८१२ का योग किया तो ८१२ :

$$\frac{२४।९।१६।२७।५१}{८३६।९।१६।२७।५१}$$

वर्ष ८३६ में ६० का भाग देने पर वर्षादि ५६।९।१६।२७।५१ हुआ तथा ५६ में ५ का भाग देने पर लब्धि ११ गत युग तथा १२ वां वर्तमान युग होगा।

अब्दादि निर्माणाय शकाङ्काः।

| १८३३ | १८५७ | १८८१ | १९०५ | १९२९ | १९५३ | १९७७ | २००१ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५६ | २१ | ४५ | ६ | ३४ | ५८ | २२ | ४६ | वर्ष |
| ९ | ० | ४ | ७ | ० | ३ | ६ | १० | मास |
| १६ | २७ | ९ | २० | १ | १३ | २४ | ६ | दिन |
| २७ | ५० | १२ | ३४ | ५८ | २० | ४३ | ५ | घटी |
| ५१ | २४ | ५७ | ३१ | ४ | ३८ | १२ | ४५ | पल |

ग्रहध्रुवाधिकारः।

| २०२५ | २०४९ | २०७३ | २०९७ | २१२१ | २१४५ | २१६९ | २१९३ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | ३५ | ५९ | २३ | ४८ | १२ | ३६ | १ | वर्ष |
| १ | ४ | ८ | ११ | ३ | ६ | ९ | १ | मास |
| १७ | २९ | १० | २१ | २ | १४ | २६ | ७ | दिन |
| २८ | ५१ | १४ | ३७ | ५९ | २२ | ४४ | ७ | घटी |
| १९ | ५२ | २६ | ० | ३३ | ७ | ४८ | १४ | पल |

१. तेषामीशाः क्रमाज्ज्ञेया विष्णुर्देवपुरोहितः ॥ १४ ॥
पुरन्दरो लोहितश्च त्वष्टाहिबुर्ध्नसञ्ज्ञकः।
पितरश्च ततो विश्वे शशीन्द्राग्नी भगोऽश्विनौ ॥ १५ ॥
युगस्य पञ्च वर्षेशा वह्नीनेंद्वब्जजेश्वराः। इत्यादि।

ना० सं० ३/१४, १५, १६

शेषाङ्काः।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | वर्ष |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | मास |
| ४ | ८ | १२ | १६ | २१ | २५ | २९ | ३ | दिन |
| १३ | २६ | ४० | ५३ | ७ | २० | ३४ | ४७ | घटी |
| २६ | ५३ | १९ | ४६ | १२ | ३८ | ५ | ३१ | पल |

| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | वर्ष |
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | मास |
| ८ | १२ | १६ | २० | २४ | २९ | ३ | ७ | दिन |
| ० | १४ | २७ | ४१ | ५४ | ८ | २१ | ३५ | घटी |
| ५८ | २४ | ५० | १६ | ४३ | १० | ३६ | २ | पल |

| १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | वर्ष |
| २ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | मास |
| ११ | १६ | २० | २४ | २८ | २ | ७ | ११ | दिन |
| ४८ | १ | १५ | २८ | ४२ | ५५ | ९ | २२ | घटी |
| २९ | ५५ | २२ | ४८ | १४ | ४१ | ७ | ३३ | पल |

भा० टी०—इष्ट शकाब्द में पुस्तकीय शक तब तक घटावै जब तक कि आगे का पुस्तकीय शक न आवे। यदि इष्टशक पुस्तकीय शक के बाद का हो तो उस इष्टशक के पूर्व जो पुस्तकीय शक हो उसको इष्टशक में घटावे। यदि इष्टशक और पुस्तकीय समान ( बराबर ) हो तो पुस्तकीय शक ही से कार्य हो जाता है, या उस इष्टशक के समानता करने वाले पुस्तकीय शक के पूर्व जो पुस्तकीय शक हो उसको इष्टशक में घटा के बनावे। इष्टशक में पुस्तकीय शक घटाने से जो शेष मिले उसके तुल्य शेष कोष्ठ का और पुस्तकीय शक के कोष्ठ का अंक एक जगह

जोड़ने से संवत्सर वर्षादिक होता है। * पंच तारा में भी उक्त क्रिया करने से अंशादि ध्रुवा होता है।

उदाहरण--इष्ट शकाब्द १८४० में पुस्तकीय शकाब्द १८३३ को हीन किया तो शेष ७ बचा, इस शेष के नीचे का वर्षादि ७।०।२९।३४। ५ है और पुस्तकीय शका के नीचे का वर्षादि ५६।९।१६।२७।५१ है इन दोनों को जोड़े तो इष्टशका में संवत्सर वर्षादिक ६३।९।४६।१।५६ हुआ, वर्ष ६३ हैं इससे इसको ६० से शेषित किया तो संवत्सर वर्षादिक ३।९।४६।१।५६ हुआ। जब तक इष्ट शका १८५७ न आवे तब तक इष्ट शका में पुस्तकीय शका १८३३ ही घटावे, इष्ट शका १८५७ के बाद होने पर इष्ट शका में १८५७ पुस्तकीय शका घटावे जब तक पुस्तकीय शक १८८१ न आवे इसके बाद भी इसी प्रकार क्रिया करे और इष्ट शका १८५७ है तथा पुस्तकीय शाका भी १८५७ ही है तो इसमें इसके पहले के पुस्तकीय शका १८३३ को हीन किया तो शेष २४ बचा पुस्तकीय शका १८३३ के नीचे का ५६।९।१६।२७।५१ है और शेष२४ के नीचे का अंक २४।३।११।२२।३३ है, इन दोनों का योग किया तो संवत्सर वर्षादिक २१।०।२७।५०।२४ हुआ और इष्ट शका १८५७ में पुस्तकीय शका १८५७ को घटाया तो शेष ० बचा पुस्तकीय शका १८५७ के नीचे का अंक २१।०।२७।५०।२४ है, और शून्य के अभाव से अंक का भी अभाव है, इससे संवत्सर वर्षादिक २१।०।२७।५०।२४ हुआ।

भौमध्रुवविधिः--

**शास्त्राब्दपिण्डो वसुवह्निषट्घ्नः सशीतरश्मीज्वलनो महीजः।**
**शताहतद्वादशराशिचक्रैः शेषोऽब्धिबाणैश्च युतोऽब्दवृन्दात् ॥४॥**

अन्वयः--शास्त्राब्द पिण्डः वसुवह्निषट्घ्नः स शीतरश्मीज्वलनः अब्धि बाणैः अब्दवृन्दात् शेषः युतः शताहतद्वादशराशिचक्रैः च शेषो महीजः (भवति)।

सं० टी०--शास्त्राब्दपिण्डो वसुवह्निषट्घ्नः गुणितः सः शीतरश्मीज्वलनेन

---

* शुद्धि प्रत्येक वर्ष २०७ घटती है। सूर्य के ध्रुवा में १।५५ हीन करने से चन्द्रध्रुवा में ६१०।३० और चन्द्र केन्द्रध्रुवा में ६७९। ११ युत करने से अग्रिम वर्ष का ध्रुवा होता है। जिस वर्ष शुद्धि चक्र से सम्बन्ध करती है उस वर्ष उक्त ग्रहों की ध्रुवा, न्यूनाधिक होती है। और राहु कलादि ३।१०।४५ सदा न्यून होता है, जिसके स्थान पर इस ग्रन्थ में प्रति वर्ष का २९०।२४ कलादि लिखा है ( और यह प्रति वर्ष इतना घटता है ) इन्हीं कारणों से उक्त ग्रहों की सारणी नहीं बनायी गई है।

संहित एकत्रिंशद् युक्तश्च पुनरब्दपिण्डादब्धिवाणैः प्राप्त फलेन युतशताहतद्वादश-राशि चक्रैः द्वादशशतेन शेषितः महीजः, भौमो भवति ॥ ४ ॥

भा॰ टी॰—शास्त्राब्द को ६३८ से गुणकर उसमें ३१ युत करे फिर शास्त्राब्द में ५४ का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको भी उसमें युक्त करके १२०० का भाग दे शेष मङ्गल का ध्रुवा स्पष्ट होता है ॥ ४ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को ६३८ से गुणा किया तो ५१८०५६ हुआ इसमें ३१ युत किया तो ५१८०८७ हुआ और शास्त्राब्द ८१२ में ५४ का भाग दिया तो लब्धि अंशादि १५।०।१३ मिली इसको पूर्व अंक ५१८०८७ में युत किया तो ५१८१०२।२।१३ हुआ इसको १२०० से शेषित किया तो शेष मङ्गल का ध्रुवांक अशादि ९०२।२।१३ स्पष्ट हुआ ॥ ४ ॥

| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९४२ | ३८० | १०१८ | ४५६ | १०९४ | ५३२ | ११७० | ६०८ | अंश |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | कला |
| ० | ६ | १३ | २० | २६ | ३३ | ४० | ४६ | विकला |
| **१७** | **१८** | **१९** | **२०** | **२१** | **२२** | **२३** | **२४** | **शेष** |
| ४६ | ६८४ | १२२ | ७६० | ११८ | ८३६ | २७४ | ९१२ | अश |
| १८ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | कला |
| ५३ | ० | ६ | १३ | २० | २६ | ३३ | ४० | विकला |

बुधोच्चध्रुव विधिः—

**ज्ञोच्चं खखाश्विघ्नमथो दशघ्नं**
**तिथीन्दुलब्धांगरसाश्वि हीनम् ।**

अन्वयः – सुगमम् ।

सं॰ टी॰—अब्दपिण्डं खखाश्विगुणितं द्विस्थं तत्र ( प्रथम स्थाने ) दशभि-र्गुणितं तस्मात् तिथीन्दुभिर्भक्तं लब्धमुपरि ( द्वितीय स्थाने ) हीनं पुनः, अङ्ग-रसाश्वि हीनं ( शताहत द्वादशराशिचक्रैः शेषितं ) अशाद्यं बुधशीघ्रम् भवति ।

भा॰ टी॰—शास्त्राब्द को २०० से गुणा करके दो स्थान में स्थापित करे, एक स्थान के अंक को १० से गुणा कर ११५ का भाग देने से जो लब्धि मिले वह दूसरे स्थान में घटाकर फिर उसमें २६६ घटावे ( बाद १२०० का भाग देने से ) जो शेष बचे वह बुध का शीघ्र ध्रुवाङ्क होता है ।

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को २०० से गुणा किया तो १६२४०० हुआ इसको दो जगह रक्खे, एक जगह १० से गुणा किया तो १६२४००० हुआ इसमें ११५ का भाग दिया तो लब्धि अंशादि १४१२१।४४।२० मिली इसको दूसरे जगह रक्खे हुए १६२४०० में हीन किया तो १४८२७८।१५।४० हुआ फिर इसमें २६६ हीन किया तो १४८०१२।१५।४० हुआ, इसमें १२०० का भाग दिया तो शेष अंशादि बुध का उच्च ध्रुवाङ्क ४१२।१५।४० हुआ।

शकाङ्काः।

| १८३३ | १८५७ | १८८१ | १९०५ | १९२९ | १९५३ | १९७७ | २००१ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४१२ | ११९४ | ७७७ | ३६० | ११४२ | ७२५ | ३०७ | १०९० | अंश |
| १५ | ५२ | २८ | ५ | ४१ | १८ | ५४ | ३१ | कला |
| ४० | १२ | ४४ | १६ | ४८ | २० | ५२ | २४ | विकला |
| **२०२५** | **२०४९** | **२०७३** | **२०९७** | **२१२१** | **२१४५** | **२१६९** | **२१९३** | **शक** |
| ६७३ | २५५ | १०३८ | ६१० | २०३ | ९८६ | ५३८ | १५१ | अंश |
| ७ | ४४ | २१ | ५७ | ३४ | १० | ४७ | २३ | कला |
| ५६ | २८ | ० | ३२ | ४ | ३६ | ८ | ४० | विकला |

शेषाङ्काः।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८२ | ३६५ | ५४७ | ७३० | ९१२ | १०९५ | ७८ | २६० | अंश |
| ३६ | १३ | ४९ | २६ | २ | ३९ | १५ | ५२ | कला |
| ३१ | ३ | ३४ | ६ | ३७ | ९ | ४० | ११ | विकला |
| **९** | **१०** | **११** | **१२** | **१३** | **१४** | **१५** | **१६** | **शेष** |
| ४४३ | ६२६ | ८०८ | ९९१ | ११७३ | १५६ | ३३९ | ५२१ | अंश |
| २८ | ५ | ४१ | १८ | ५४ | ३१ | ७ | ४४ | कला |
| ४३ | १४ | ४५ | १७ | ४८ | १९ | ५० | २२ | विकला |
| **१७** | **१८** | **१९** | **२०** | **२१** | **२२** | **२३** | **२४** | **शेष** |
| ७०४ | ८८६ | १०६९ | ५२ | २३४ | ४१७ | ६०३ | ७८२ | अश |
| २१ | ५७ | ३३ | १० | ४६ | २३ | ० | १६ | कल |
| ५३ | २४ | ५६ | २७ | ५८ | २७ | १ | ३२ | विकल |

गुरुध्रुवविधिः—

**शताहतोऽधः खनवाप्तनेत्र-**
**सूर्य्याढ्यजीवोऽब्दनखांशयुक्तः ॥ ५ ॥**

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—अब्दपिण्डः शताहतः शतगुणितः, अधः स्थानद्वयेस्थाप्यः तले खनवाप्तः, लब्धेन सहितः नेत्रसूर्य्यैस्तैरुपरियोज्यः पुनरब्दपिण्डःनखांशयुक्तः गुरुध्रुवको भवति ( द्वादशशतेन शेषितोऽत्रापि ज्ञातव्यः ) ॥ ५ ॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को १०० से गुणाकर दो स्थान में स्थापित करे, एक स्थान में ९० का भाग देने से जो अंशादि फल मिले वह दूसरे स्थान में युक्त करके उसमें १२२ और युत करे, फिर शास्त्राब्द में २० का भाग देने से जो लब्धि मिले वह भी उसी में युक्त करने पर ( उसमें १२०० का भाग देने से जो शेष बचे वही ) मध्यम बृहस्पति का अशादि ध्रुवाङ्क होता है ॥ ५ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को १०० से गुणा तो ८१२०० हुआ इसको दो जगह रक्खे, एक जगह ९० का भाग दिया तो लब्धि अंशादि ९०२।१३।२० मिली, इसको दूसरे जगह रक्खे हुए ८१२०० में युत किया तो ८२१०२।१३।२० हुआ इसमें १२२ युक्त किया तो ८२२२४।१३।२० हुआ, फिर शास्त्राब्द ८१२ में २० का भाग दिया तो लब्धि अंशादि ४०।३६।० मिली, इसको ८२२२४।१३।२० में युत किया तो ८२२६४।४९।२० हुआ, इसमें १२०० का भाग दिया तो शेष मध्यम बृहस्पति का अंशादि ध्रुवाङ्क ६६४।४९।२० हुआ ॥ ५ ॥

शकाङ्काः ।

| १८३३ | १८५७ | १८८१ | १९०५ | १९२६ | १९५३ | १९७७ | २००१ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६६४ | ६९२ | ७२० | ७४८ | ७७६ | ८०४ | ८३२ | ८६० | अश |
| ४९ | ४१ | ३३ | २५ | १७ | ९ | १ | ५३ | कला |
| २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | विकला |

| २०२५ | २०४९ | २०७३ | २०९७ | २१२१ | २१४५ | २१६९ | २१९३ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८८७ | ९१५ | ९४३ | ९७१ | ९९९ | १०२७ | १०५४ | १०८२ | अंश |
| ४५ | ३७ | २९ | २१ | १३ | ५ | ५७ | ४९ | कला |
| २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | विकला |

शेषाङ्काः ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०१ | २०२ | ३०३ | ४०४ | ५०५ | ६०६ | ७०८ | ८०९ | अंश |
| ९ | ११ | २९ | ३८ | ४८ | ५८ | ७ | १७ | कला |
| ४० | २० | ० | ४० | २० | ० | ४० | २० | विकला |

| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९१० | १०१५ | १११२ | १३ | ११५ | २१६ | ३१७ | ४१८ | अंश |
| २७ | ३६ | ४६ | ५६ | ५ | १५ | २५ | ३४ | कला |
| ० | ४० | २० | ० | ४० | २० | ० | ४० | विकला |

| १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५१६ | ६२० | ७२२ | ८२३ | ९२४ | १०२५ | ११२६ | २७ | अंश |
| ४४ | ५४ | ३ | १३ | २३ | ३२ | ४२ | ५२ | कला |
| २० | ० | ४० | २० | ० | ४० | २० | ० | विकला |

शुक्रोच्चध्रुवविधिः—

**खेषुस्वरघ्नोऽङ्कशराग्नियुक्तः**

**सितोच्चमाढ्यं कुनृपैः शतघ्नात् ।**

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—अब्दपिण्डः खेषुस्वरघ्नः कार्योऽङ्कशराग्निभियुक्तः, पुनरब्दपिण्डाच्छतघ्नात्-कुनृपैर्भक्तेयल्लब्धं तत् पूर्वाङ्कयुक्तं (द्वादशशतेन शेषितं । शुक्रोच्चं भवति ।

भा० टी०—शास्त्राब्द को ७५० से गुणा करके उसमें ३५९ युक्त करे, फिर शास्त्राब्द को १०० से गुणा करके १६१ का भाग देने से जो फल मिले उसको पूर्व अंक में युक्त करने पर (उसमें हर का भाग देने से शेष) शुक्र के उच्च का ध्रुवाङ्क होता है ।

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को ७५० से गुणा तो ६०९००० हुआ इसमें ३५९ युक्त किया तो ६०९३५९ हुआ, फिर शास्त्राब्द ८१२ को १०० से गुणा किया तो ८१२०० हुआ इसमें १६१ का भाग देने से लब्धि अंशादि ५०४।२०।५२ मिली, इसको ६०९३५९ में युक्त किया तो ६०९८६३।२०।५२ हुआ, इसमें १२०० का भाग दिया तो शेष शुक्र का उच्चध्रुवाङ्क अंशादि २६३।२०।५२ हुआ ।

शकाङ्काः ।

| १८३३ | १८५७ | १८८१ | १९०५ | १९२९ | १९५३ | १९७७ | २००१ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६३ | २७८ | २९३ | ३०८ | ३२३ | ३३७ | ३५२ | ३६७ | अंश |
| २० | १५ | ९ | ४ | ५८ | ५२ | ४७ | ४१ | कला |
| ५२ | १७ | ४२ | ७ | ३२ | ५७ | २२ | ४७ | विकला |
| २०२५ | २०४९ | २०७३ | २०९७ | २१२१ | २१४५ | २१६९ | २१९३ | शक |
| ३८२ | ३९७ | ४१२ | ४२७ | ४४२ | ४५७ | ४७२ | ४८६ | अंश |
| ३६ | ३० | २५ | १९ | १३ | ८ | २ | ५६ | कला |
| १२ | ३७ | २ | २७ | ५२ | १७ | ४२ | ७ | विकला |

शेषाङ्काः ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७५० | ३०१ | १०५१ | ६०२ | १५३ | ९०३ | ४५४ | ४ | अंश |
| ३७ | १४ | ५१ | २९ | ६ | ४३ | २० | ५८ | कला |
| १६ | ३२ | ४८ | ४ | २० | ३६ | ५२ | ८ | विकला |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | शेष |
| ७५५ | ३०६ | १०५६ | ६०७ | १५८ | ९०८ | ४५९ | ९ | अंश |
| ३५ | १२ | ४९ | २७ | ४ | ४१ | १९ | ५६ | कला |
| २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ० | १६ | विकला |
| १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | शेष |
| ७६० | ३११ | १०६१ | ६१२ | १६३ | ९१३ | ४६४ | १४ | अंश |
| ३३ | १० | ४८ | २५ | २ | ३९ | १७ | ५४ | कला |
| ३३ | ४९ | ५ | २१ | ३७ | ५३ | ९ | २५ | विकला |

मध्यमशनिध्रुवविधिः—

खवेदनिघ्नोऽब्धिनवेषु युक्तः ।

शनिर्दशघ्नात् सहितश्च शक्रैः ॥ ६ ॥

अन्वय—सुगमम् ।

सं० टी०—अब्दपिण्डः खवेदनिघ्नः कार्य्योऽब्धिनवेषुयुक्तः पुनरब्दपिण्डाद् दशघ्नाद् दशभिर्गुणिताच्छक्रैश्चतुर्दशभिर्भजेत् यल्लब्धमंशादिः तेनाधिकः कर्तव्यः, (अत्रापिद्वादशशतशेषितः) मध्यमशनिध्रुवो भवतीति ॥ ६ ॥

भा० टी०-शास्त्राब्द को ४० से गुण के उसमें ५९४ युक्तकरे, फिर शास्त्राब्द को १० से गुणा करके १४ का भाग देने से जो अंशादि फल मिले वह पूर्व के अङ्क में युक्त करने पर (हरका भाग देने से शेष) मध्यम शनि का ध्रुवाङ्क अंशादि होता है ॥ ६ ॥

उदाहरण-शास्त्राब्द ८१२ को ४० से गुणा किया तो ३२४८० हुआ इसमें ५९४ युतकिया तो ३३०७४ हुआ, फिर शास्त्राब्द ८१२ को १० से गुणा तो ८१२० हुआ इसमें १४ का भाग दिया तो लब्धि अंशादि ५८०।०।० मिली, इसको ३३०७४ में युक्त किया तो ३३६५४।०।० हुआ, इसमें १२०० का भाग देने से शेष मध्यम शनि का ध्रुवाङ्कअंशादि ५४।०।० हुआ ॥ ६ ॥

शकाङ्काः ।

| १८३३ | १८५७ | १८८१ | १९०५ | १९२९ | १९५३ | १९७७ | २००१ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५४ | १०३१ | ८०८ | ५८५ | ३६२ | १३९ | १११६ | ८९३ | अंश |
| ० | ८ | १७ | २५ | ३४ | ४२ | ५१ | ५९ | कला |
| ० | ३४ | ८ | ४२ | १६ | ५० | २४ | ५८ | विकला |
| २०२५ | २०४९ | २०७३ | २०९७ | २१२१ | २१४५ | २१६९ | २१९३ | शाका |
| ६७१ | ४४८ | २२५ | २ | ९७९ | ७५६ | ५३३ | ३११ | अंश |
| ८ | १६ | २५ | ३४ | ४२ | ५१ | ५९ | ८ | कला |
| ३२ | ६ | ४० | १४ | ४८ | २२ | ५६ | ३० | विकला |

शेषाङ्काः ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४० | ८१ | १२२ | १६३ | २०३ | २४४ | २८५ | ३२५ | अंश |
| ४२ | २५ | ८ | ५१ | ३४ | १७ | ० | ४२ | कला |
| ५१ | ४३ | ३४ | २६ | १७ | ९ | ० | ५१ | विकला |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | शेष |
| ३६६ | ४०७ | ४४८ | ४८८ | ५२९ | ५७० | ६१० | ६५१ | अंश |
| २५ | ८ | ५१ | ३४ | १७ | ० | ४२ | २५ | कला |
| ४३ | ३४ | २६ | १७ | ९ | ० | ५१ | ४३ | विकला |

| १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६९२ | ७३२ | ७७३ | ८१४ | ८५५ | ८९५ | ९३६ | ९७७ | अंश |
| ८ | ५१ | ३४ | १७ | ० | ४३ | २५ | ८ | कला |
| ३४ | २६ | १७ | ९ | ० | ५१ | ४३ | ३४ | विकला |

शास्त्राब्दागतस्पष्टसूर्यादिमध्यमग्रहाः ।

| सू. | च. | च. के. | गु. | म. | बु. शी. | बृ. | शु. शी. | श. | ग्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ११५० | २३६१ | ५१३० | १०० | ४८२ | ६८४ | २६३ | ५४ | अं. |
| २३ | २१ | ४२ | २८ | २ | १५ | ४९ | २० | ० | क. |
| ५३ | २० | १५ | ३२ | १३ | ४० | २० | ५२ | ० | वि. |

भौमादि ग्रहाणां बीजविधिः—

**शास्त्राब्दपिण्डाद् गुणितात्कुजादेस्सूर्य्याम्बराक्षीषुकुखेषुवेदैः ।**
**लब्धं क्रमेणाष्टशतैः फलं यच्चन्द्राष्टतत्त्वाब्धिशशाङ्कशिष्टम् ॥७॥**

इति श्रीमच्छतानन्दविरचितायां भास्वत्यां ग्रहध्रुवाधिकारो द्वितीयः ॥ २ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—शास्त्राब्दपिण्डात् पञ्चधास्थाप्यात् क्रमेण सूर्य्याम्बराक्षीषुकुखेषु-वेदैर्गुणिताद् अष्टशतैर्यत्लब्धं यत्फलंतत्तत् क्रमेण चन्द्राष्टतत्त्वाब्धिशशाङ्कशिष्टम् शेषितं कुजादेर्बीजं भवति ॥ ७ ॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को १२।२०।१५।५०।४ से अलग-अलग गुणा करके ८०० का भाग देने से जो लब्धि प्राप्त हो उसको १।८।२५।४।१ से शेषित करने से क्रमशः मङ्गल आदि का कलादि बीज होता है ॥ ७ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को १२ से गुणा तो ९७४४ हुआ इसमें ८०० का भाग दिया तो लब्धि १२।११ मिली। इसे १ से शेषित किया तो भौम का कलादि बीज ०।११ हुआ।

शास्त्राब्द ८१२ को २० से गुणा तो १६२४० हुआ इसमें ८०० का भाग दिया तो लब्धि २०।१८ मिली। इसे ८ से शेषितकिया तो बुध का कलादि बीज ४।१८ हुआ।

शास्त्राब्द ८१२ को १५ से गुणा तो १२१८० हुआ इसमें ८०० का भाग दिया तो लब्धि १५।१३ मिली। इसे २५ से शेषित किया तो बृहस्पति का कलादि बीज १५।१३ हुआ।

शास्त्राब्द ८१२ को ५० से गुणा तो ४०६०० हुआ इसमें ८०० का भाग दिया तो लब्धि ५०।४५ मिली। इसे ४ से शेषित किया तो शुक्र का कलादि बीज २।४५ हुआ।

शास्त्राब्द ८१२ को ४ से गुणा तो ३२४८ हुआ इसमें ८००का भाग दिया तो लब्धि ४।१ मिली । इसे १से शोधित किया तो शनि का कलादि वीज ०।३ हुआ।।७।।

भौमादीनां वीजनिर्माणाय शकाङ्काः ।

| श्रीः | १८३३ | १८५७ | १८८१ | १९०५ | १९२९ | १९५३ | १९७७ | २००१ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भौ. | ०<br>१०<br>४८ | ०<br>३२<br>२४ | ०<br>५४<br>० | ०<br>१५<br>३६ | ०<br>१७<br>१२ | ०<br>५८<br>४८ | ०<br>२०<br>२४ | ०<br>४२<br>० | कलादि |
| बु. | ४<br>१८<br>० | ४<br>५४<br>० | ५<br>३०<br>० | ६<br>६<br>० | ६<br>४२<br>० | ७<br>१८<br>० | ७<br>५४<br>० | ०<br>३०<br>० | कलादि |
| गु. | १५<br>१३<br>३०<br>० | १५<br>४०<br>१०<br>० | १६<br>७<br>३०<br>० | १६<br>३४<br>३०<br>० | १७<br>१<br>३०<br>० | १७<br>२८<br>३०<br>० | १७<br>५५<br>३०<br>० | १८<br>२१<br>३०<br>० | कलादि |
| शु. | २<br>४५<br>० | ०<br>१५<br>० | १<br>४५<br>० | ३<br>१५<br>० | ०<br>४५<br>० | २<br>१५<br>० | ३<br>४५<br>० | १<br>१५<br>० | कलादि |
| श. | ०<br>३<br>३६ | ०<br>१०<br>४८ | ०<br>१८<br>० | ०<br>२५<br>१२ | ०<br>३२<br>२४ | ०<br>३९<br>३६ | ०<br>४६<br>४८ | ०<br>५४<br>० | कलादि |
| श्रीः | २०२५ | २०४९ | २०७३ | २०९७ | २१२१ | २१४५ | २१६९ | २१९३ | शक |
| भौ. | ०<br>३<br>३६ | ०<br>२५<br>१२ | ०<br>४६<br>४८ | ०<br>८<br>२४ | ०<br>३०<br>० | ०<br>५१<br>३६ | ०<br>१३<br>१२ | ०<br>३४<br>४८ | कलादि |
| बु. | १<br>६<br>० | १<br>४२<br>० | २<br>१८<br>० | २<br>५४<br>० | ३<br>३०<br>० | ४<br>६<br>० | ४<br>४२<br>२ | ५<br>१८<br>० | कलादि |
| गु. | १८<br>४९<br>३०<br>० | १९<br>१६<br>३०<br>० | १९<br>४३<br>३०<br>० | २०<br>१०<br>३०<br>० | २०<br>३७<br>३०<br>० | २१<br>४<br>३०<br>० | २१<br>३१<br>३०<br>० | २१<br>५८<br>३०<br>० | कलादि |
| शु. | २<br>४५<br>० | ०<br>१५<br>० | १<br>४५<br>० | ३<br>१५<br>० | ०<br>४५<br>० | २<br>१५<br>० | ३<br>४५<br>० | १<br>१५<br>० | कलादि |
| श. | ०<br>१<br>१२ | ०<br>८<br>२४ | ०<br>१५<br>३६ | ०<br>२२<br>४८ | ०<br>३०<br>० | ०<br>३७<br>१२ | ०<br>४४<br>२४ | ०<br>५१<br>३६ | कलादि |

शेषाङ्काः।

| श्रीः | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ०<br>०<br>५४ | ०<br>१<br>४८ | ०<br>२<br>४२ | ०<br>३<br>३६ | ०<br>४<br>३० | ०<br>५<br>२४ | ०<br>६<br>१८ | ०<br>७<br>१२ | कलादि |
| बु. | ०<br>१<br>३० | ०<br>३<br>० | ०<br>४<br>३० | ०<br>६<br>० | ०<br>७<br>३० | ०<br>९<br>० | ०<br>१०<br>३० | ०<br>१२<br>० | कलादि |
| बृ. | ०<br>१<br>७<br>३० | ०<br>२<br>१५<br>० | ०<br>३<br>२२<br>३० | ०<br>४<br>३०<br>० | ०<br>५<br>३७<br>३० | ०<br>६<br>४५<br>० | ०<br>७<br>५२<br>३० | ०<br>९<br>०<br>० | कलादि |
| शु. | ०<br>३<br>४५ | ०<br>७<br>३० | ०<br>११<br>१५ | ०<br>१५<br>० | ०<br>१८<br>४५ | ०<br>२२<br>३० | ०<br>२६<br>१५ | ०<br>३०<br>० | कलादि |
| श. | ०<br>०<br>१८ | ०<br>०<br>३६ | ०<br>०<br>५४ | ०<br>१<br>१२ | ०<br>१<br>३० | ०<br>१<br>४८ | ०<br>२<br>६ | ०<br>२<br>२४ | कलादि |
| श्रीः | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | शेष |
| म. | ०<br>८<br>६ | ०<br>९<br>० | ०<br>९<br>५४ | ०<br>१०<br>४८ | ०<br>११<br>४२ | ०<br>१२<br>३६ | ०<br>१३<br>३० | ०<br>१४<br>२४ | कलादि |
| बु. | ०<br>१३<br>३० | ०<br>१५<br>० | ०<br>१६<br>३० | ०<br>१८<br>० | ०<br>१९<br>३० | ०<br>२१ | ०<br>२२<br>३० | ०<br>२४<br>० | कलादि |
| बृ. | ०<br>१०<br>७<br>३० | ०<br>११<br>१५<br>० | ०<br>१२<br>२२<br>३० | ०<br>१३<br>३०<br>० | ०<br>१४<br>३७<br>३० | ०<br>१५<br>४५<br>० | ०<br>१६<br>५२<br>३० | ०<br>१८<br>०<br>० | कलादि |
| शु. | ०<br>३३<br>४५ | ०<br>३७<br>३० | ०<br>४१<br>१५ | ०<br>४५<br>० | ०<br>४८<br>४५ | ०<br>५२<br>३० | ०<br>५६<br>१५ | १<br>०<br>० | कलादि |
| श. | ०<br>२<br>४२ | ०<br>३<br>० | ०<br>३<br>१८ | ०<br>३<br>३६ | ०<br>३<br>५४ | ०<br>४<br>१२ | ०<br>४<br>३० | ०<br>४<br>४८ | कलादि |

| श्रीः | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मं. | ०<br>१५<br>१८ | ०<br>१६<br>१२ | ०<br>१७<br>६ | ०<br>१८<br>० | ०<br>१८<br>५४ | ०<br>१९<br>४८ | ०<br>२०<br>४२ | ०<br>२१<br>३६ | कलादि |
| बु. | ०<br>२५<br>३० | ०<br>२७<br>० | ०<br>२८<br>३० | ०<br>३०<br>० | ०<br>३१<br>३० | ०<br>३३<br>० | ०<br>३४<br>३० | ०<br>३६<br>० | कलादि |
| बृ. | ०<br>१९<br>७<br>३० | ०<br>२०<br>१५<br>० | ०<br>२१<br>२२<br>३० | ०<br>२२<br>३०<br>० | ०<br>२३<br>३७<br>३० | ०<br>२४<br>४५<br>० | ०<br>२५<br>५२<br>३० | ०<br>२७<br>०<br>० | कलादि |
| शु. | १<br>३<br>४५ | १<br>७<br>३० | १<br>११<br>१५ | १<br>१५<br>० | १<br>१८<br>४५ | १<br>२२<br>३० | १<br>२६<br>१५ | १<br>३०<br>० | कलादि |
| श. | ०<br>५<br>६ | ०<br>५<br>२४ | ०<br>५<br>४२ | ०<br>६<br>० | ०<br>६<br>१८ | ०<br>६<br>३६ | ०<br>६<br>५४ | ०<br>७<br>१२ | कलादि |

वर्षाद्यानयनम् ।

● "शाकस्त्रिगुण्यो नगभाजितश्च शेषं द्विनिघ्नं सरसंयुतं च ।
वर्षा च धान्यं तृण शीततेजो वायुश्चवृद्धिः क्षयविग्रहौ च ॥ १ ॥

● उदाहरण—शाका १८३३ को ३ से गुणा किया तो ५४९९ हुआ इसमें ७ का भाग देने से लब्धि ७८५ मिली, शेष ४ बचो इस शेष ४ को २ से गुणा किया तो ८ हुआ इसमें ५ युत करने से वर्षा का विश्वा १३ हुआ लब्धि ७८५ को ३ से गुणा किया तो २३५५ हुआ इसमें ७ का भाग देने से लब्धि ३३६ मिली, शेष ३ बचा इस शेष ३ को २ से गुणा तो ६ हुआ इसमें ५ मिलाया तो धान्य का विश्वा ११ हुआ इसी प्रकार से तृण आदिक को भी निकाले ॥

विशेष विवरण

१—१८३३ × ३ = ५४९९ ÷ ७ = लब्धि ७८५ शेष ४ × २ + ५

वर्षाविश्वा = १३ हुआ ।

२—७८५ × ३ = २३५५ ÷ ७ = लब्धि ३३६ शेष ३ × २ + ५

धान्यविश्वा = ११ हुआ ।

३—३३६ × ३ = १००८ ÷ ७ = लब्धि १४४ शेष ० × २ + ५

तृणविश्वा = ५ हुआ ।

* शाकं च वेदगुणितं सप्तभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं द्विघ्नां त्रिभियुक्तं भुक्तविश्वाख्य सङ्ख्यया ॥ २ ॥
क्षुधा तृषा च निद्रा च आलस्योद्यममेव च ।
शान्तिः क्रोधस्तथा दम्भो लोभमैथुनयोः क्रमात् ॥ ३ ॥
ततश्च रसनिष्पत्तिः फलनिष्पतिरेव च ।
उत्साहः सर्व लोकानां फलान्येतानि चिन्तयेत् ॥ ४ ॥
*शाकं च वसुभिर्निघ्नं नवभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं द्विघ्नं रूपयुक्तं प्राप्तविश्वाख्य संज्ञकम् ॥ ५ ॥
उग्रत्व पाप पुण्यानि व्याधिश्च व्याधिनाशनम् ।
आचारश्चाप्यनाचारो मृत्युर्जन्म यथा क्रमम् ॥ ६ ॥

---

४—१४४ × ३ = ४३२ ÷ ७ = लब्धि ६१ शेष ५ × २ + ५
शीतविश्वा = १५ हुआ ।

५—६१ × ३ = १८३ ÷ ७ = लब्धि २६ शेष १ × २ + ५
तेजविश्वा = ७ हुआ ।

६—२६ × ३ = ७८ ÷ ७ = लब्धि ११ शेष १ × २ + ५
वायुविश्वा = ७ हुआ ।

७—११ × ३ = ३३ ÷ ७ = लब्धि ४ शेष ५ × २ + ५
वृद्धिविश्वा = १५ हुआ ।

८—४ × ३ = १२ ÷ ७ = लब्धि १ शेष ५ × २ + ५
क्षवविश्वा = १५ हुआ ।

९—१ × ३ = ३ ÷ ७ = लब्धि ० शेष ३ × २ + ५
विग्रहविश्वा = ११ हुआ ।

अतः 'वर्षा च धान्यं तृणशीततेजो वायुश्च वृद्धिः क्षवविग्रहौ च' उपपन्न हो गया । इसी प्रकार आगे के उदाहरण को भी समझना चाहिए ।

* उदाहरण—शाका १८३३ को ४ से गुणा तो ७३३२ हुआ इसमें ७ का भाग देने से लब्धि १०४७ मिली, शेष ३ बचा इस शेष ३ को २ से गुणा किया तो ६ हुआ इसमें ३ युक्त किया तो क्षुधा का विश्वा ९ हुआ लब्ध से पूर्व प्रक्रिया के अनुसार तृषा आदिक को बनावे ।

* उदाहरण—शाका १८३३ को ८ से गुणा तो १४६६४ हुआ इसमें ९का भाग दिया तो लब्धि १६२९ मिली, शेष ३ बचा इस शेष ३ को २ से गुणा किया तो ७ हुआ इसमें १ युक्त किया तो उग्र का विश्वा ७ हुआ लब्धि से पापादिक का विश्वा भी उक्त प्रकार से बनावे ।

देशोपद्रवस्वास्थ्यञ्च चौरभिश्चौरनाशनम् ।
वह्निनभिर्वह्निनशान्तिश्च ज्ञातव्यानि यथा क्रमम् ॥ ७ ॥

* सप्तघ्नशाकनवभिर्भाजितं शेषकं तथा ।
लोचनघ्नं युतं रामैर्जीवियाच्च यथा क्रमम् ॥ ८ ॥

शलभाश्च शुका अग्रे मुषका स्वर्णताम्रकौ ।
स्वचक्रं परचक्रं च वृष्टिवृष्टिविनाशनम् ॥ ९ ॥

शकः पञ्चभिः सप्तभिर्गोभिरीशैश्चतुर्धाहतः सप्तभक्तावशिष्टः ।
द्विनिघ्नं त्रिभियुक्तमुद्भिज्जरा-
अण्डजास्वेदजानां हि विंशोपकाः स्युः" ॥ १० ॥

जलाढक विधिः—

"युग्माजगोमीनगते शशाङ्के यदा रवौ कर्कटकंप्रयाति ।
शताढमम्भो द्वरिकामुकेऽर्धमुक्तं हि कन्यामृगयोरशीति ॥ १ ॥
तुलालिकुम्भेन्दुगते तमीशे कर्के रवौ षण्णवतिस्तदानीम् ।
त्रिघाहतं दिग्रसवेदसङ्ख्यं जलाढकं विंशति भागलब्धम् ॥ २ ॥
भवेत्समुद्रादिषु वृष्टिकं तज्जलाढसङ्ख्या कथितो मुनीन्द्रैः ।
अर्द्धार्द्धमर्द्धं च क्रमेण तेषां स्यात्पर्वते शेषमिलातले च ॥ ३ ॥

---

* उदाहरण-शाका १८३३ को ७ से गुणा किया तो १२८३१ हुआ इसमें ९ का भाग देने से लब्धि १४२५ मिली शेष ६ बचा, इस शेष ६ को २ से गुणा किया तो १२ हुआ इसमें ३ का युत किया तो शलभका विश्वा १५ हुआ लब्धि से शुकादि का भी विश्वा बनावे ।

उदाहरण-शाका १८३३ को क्रमशः ५, ७, ९, ११ से गुणा तो ९१६५ १२८३१, १६४९७, २०१६३ हुआ सब में ७ का भाग देने से शेष २, ०, ५, ३ बचा इनको २ से गुणा तो ४, ०, १०, ६ हुआ इन सभों में ३ मिलाने से उद्भिज का ७ जरायुज का ३ अंडज का १३ स्वेदज का ९ विश्वा हुआ।

उदाहरण-शाका १८३३ में कर्क की संक्रान्ति कुम्भ राशि के चन्द्रमा में हुई, इससे जल की आढ़क सङ्ख्या ९६ है, इसको तीन जगह रख के क्रमशः १०, ६, ४ से गुणा किया तो ९६०, ५७६, ३८४ हुआ इनमें २० का भाग देने से लब्धि ४८, २८।४८, १९।११ मिलीं। समुद्र में ४८ पर्वत पर २८।४८ पृथ्वी पर १९।१२ आढक जल जाने ।

जलाढक बोधकचक्रम् ।

| कर्कऽर्कऽधा लिखितगा-शाविन्दौ | जलाढक सङ्ख्या | समुद्रे | पर्वते | भूमौ |
|---|---|---|---|---|
| मे वृ.मि मी. | १०० | ५० | ३० | २० |
| सिं.ध. | ५० | २५ | १५ | १० |
| कन्या. म | ८० | ४० | २४ | १४ |
| क.तु वृ.कु. | ९६ | ४८ | १८ ४८ | १९ १२ |

*"राशीश वर्षेशयुतं त्रिगुण्यं शरेण युक्तं तिथि शेषलाभम् ।
लाभं त्रिगुण्यं च शरेण युक्तं तिथ्यावशेषं व्ययमामनन्ति ॥ १ ॥
विंशोत्तर्यनुसारेण रव्यादीनां क्रमाद् ध्रुवाः ।
रसदिक् शैलमेघोऽष्टिर्नखस्त्वेकोनविंशतिः ॥ २ ॥
रसानि वाणेन्दुमितानि चाष्टौ घनानि वैचाङ्कधरामितानि ।
भूपक्षसंज्ञानि खरूपकानि त्वष्टोत्तरीणांरवितो ध्रुवानि" ॥ ३ ॥

---

* उदाहरण—शाका १८३३ में राजा शुक्र है, विंशोत्तरी के मत से शुक्र की ध्रुवा २० है, और मेष राशि का स्वामी मङ्गल है उक्त रीति से मङ्गल की ध्रुवा ७ है, इन दोनों के ध्रुवा को एक जगह जोड़ देने से २७ हुआ इसको ३ से गुणा किया तो ८१ हुआ फिर इसमें ५ युक्त किया तो ८६ हुआ इसमें १५ का भाग देने से लब्धि ५ मिली शेष ११ बचा शेष तुल्य ११ लाभ हुआ लब्ध ५ को ३ से गुणा किया तो १५ हुआ इसमें ५ और युक्त किया तो २० हुआ इसमें १५ का भाग देने से शेष ५ व्यय हुआ ॥

विंशोत्तरीमतेनार्कादीनां नृपेषु-आयव्ययबोधकचक्रम् ।

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | राशयः | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४<br>११ | ८<br>५ | १४<br>२ | ८<br>१४ | ११<br>११ | १४<br>७ | आय<br>व्यय | सूर्यनृपे |
| ११<br>१४ | ५<br>८ | ११<br>५ | ५<br>२ | ८<br>१४ | ११<br>५ | आय<br>व्यय | चन्द्रनृपे |
| २<br>१४ | ११<br>५ | २<br>५ | १४<br>१४ | १४<br>११ | २<br>५ | आय<br>यव्य | भौमनृपे |
| २<br>५ | ११<br>११ | २<br>११ | ११<br>५ | १४<br>२ | २<br>११ | आय<br>व्यय | बुधनृपे |
| १४<br>२ | ८<br>११ | १४<br>८ | ८<br>५ | ११<br>२ | १४<br>८ | आय<br>व्यय | गुरुनृपे |
| ११<br>५ | ५<br>१४ | ११<br>११ | ५<br>८ | ८<br>५ | ११<br>११ | आय<br>व्यय | शुक्रनृपे |
| ८<br>५ | २<br>१४ | ८<br>११ | २<br>८ | ५<br>५ | ८<br>११ | आय<br>व्यय | शनिनृपे |

| तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | राशयः | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८<br>५ | १४<br>११ | ११<br>२ | ५<br>५ | ५<br>५ | ११<br>२ | आय<br>व्यय | सूर्यनृपे |
| ५<br>८ | ११<br>४ | ८<br>५ | २<br>८ | २<br>८ | ८<br>५ | आय<br>व्यय | चन्द्रनृपे |
| १<br>५ | २<br>१४ | १४<br>२ | ८<br>५ | ८<br>५ | १४<br>२ | आय<br>व्यय | भौमनृपे |
| ११<br>११ | २<br>५ | १४<br>८ | ८<br>११ | ८<br>११ | १४<br>८ | आय<br>व्यय | बुधनृपे |
| ८<br>११ | १४<br>२ | ११<br>८ | ५<br>११ | ५<br>११ | ११<br>८ | आय<br>व्यय | गुरुनृपे |
| ५<br>१४ | ११<br>५ | ८<br>११ | २<br>१४ | २<br>१४ | ८<br>११ | आय<br>व्यय | शुक्रनृपे |
| २<br>१४ | ८<br>५ | ५<br>११ | १५<br>१४ | १४<br>१४ | ५<br>११ | आय<br>व्यय | शनिनृपे |

अष्टोत्तरीमतेनार्कादीनां नृपेषु—आयव्ययबोधकचक्रम् ।

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं | क. | राशयः | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ११ | १४ | ८ | १४ | १४ | आय | सूर्यनृपे |
| १४ | ५ | २ | २ | ५ | २ | व्यय | |
| १४ | ८ | ११ | ५ | ८ | ११ | आय | चन्द्रनृपे |
| २ | ११ | ८ | ८ | २ | ८ | व्यय | |
| ८ | २ | ५ | १४ | २ | ५ | आय | भौमनृपे |
| १४ | ८ | ५ | २ | १४ | ५ | व्यय | |
| ५ | १४ | २ | ११ | ५ | २ | आय | बुधनृपे |
| ५ | ११ | ११ | ८ | २ | ११ | व्यय | |
| ११ | ५ | ८ | २ | ५ | ८ | आय | गुरुनृपे |
| ५ | १४ | ११ | ११ | ५ | ११ | व्यय | |
| २ | ११ | १४ | ८ | १ | १४ | आय | शुक्रनृपे |
| ८ | १४ | ११ | ११ | ५ | ११ | व्यय | |
| १४ | ८ | १४ | ५ | ८ | ११ | आय | शनिनृपे |
| १४ | ८ | ५ | ५ | १४ | | व्यय | |

| तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. | राशयः | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | २ | ५ | ८ | ८ | ५ | आय | सूर्यनृपे |
| ५ | १४ | ५ | १४ | १४ | ५ | व्यय | |
| ८ | १४ | २ | ५ | ५ | २ | आय | चन्द्रनृपे |
| ११ | २ | ११ | ५ | ५ | ११ | व्यय | |
| २ | ८ | ११ | १४ | १४ | ११ | आय | भौमनृपे |
| ८ | १४ | ५ | १४ | १४ | ५ | व्यय | |
| १४ | ५ | ८ | ११ | ११ | ८ | आय | बुधनृपे |
| ११ | ५ | ११ | ५ | ५ | ११ | व्यय | |
| ५ | ११ | १४ | २ | २ | १४ | आय | गुरुनृपे |
| १४ | ५ | ११ | ८ | ८ | ११ | व्यय | |
| ११ | २ | ५ | ८ | ८ | ५ | आय | शुक्रनृपे |
| १४ | ८ | १४ | ८ | ८ | ४१ | व्यय | |
| ८ | १४ | २ | ५ | ५ | २ | आय | शनिनृपे |
| ८ | १४ | ८ | २ | २ | ८ | व्यय | |

इति श्रीज्यौतिषीन्द्रमुकुटमणि श्री ६ छत्रधरसूरिसूनुना गणक मातृप्रसादेन विरचितायां भास्वत्याश्छात्रबोधिनी नाम टीकायां ग्रहध्रुवाधिकारो द्वितीयः समासः ।। २ ।।

## अथ पञ्चाङ्गस्पष्टाधिकार

### दिनगणानयनविधिः-

त्रिंशद् गुणा मेषमुखार्कमासा[1] दिनैस्समेता ऋतुवासरोनाः।
द्युवृन्दमेतन्नगभक्तशेषं वारा भवन्त्यब्दमुखादि नाथात् ॥१॥

चन्द्राश्विवह्नियुगभूतरसाश्वतर्क
षड् वाणभूतविषयाश्च यथाक्रमेण।
मेषादिराशिषु खरामगुणेषु देया
भास्वत्यहर्गण इनांशकसंयुतः स्यात् ॥२॥

अन्वयः—मेषमुखार्कमासा त्रिंशद् गुणाः दिनैस्समेता ऋतुवासरोनाः द्युवृन्दम् स्यात्। खरामगुणेषु मेषादिराशिषु इनांशकसंयुतः चन्द्राश्वि वह्नि युग भूत रसाश्वतर्क षड्वाणभूतविषयाश्च यथा क्रमेण देया एतन्नगभक्तशेषम् अब्दमुखादिनाथात् वारा भवन्ति।

सं॰ टी॰—दिनगणः शून्यं तस्मात् तृतीयतिथिमारभ्य परमसंक्रान्तिपर्यन्तं मेषस्तदारभ्याग्रिमसंक्रान्तिपर्यन्तं वृष इतिप्रकारेणाग्रेऽपि ज्ञातव्याः सौरमासाः, ति मेषमुखार्कमासाः मेषादि सौरमासाः त्रिंशद् गुणाः कार्यास्ते वक्ष्यमाणमासस्य गतेनांशेर्गतदिनैः समेताः सहिताः कर्तव्यास्तेषु मेषाद्यर्कमासेषु चन्द्राश्विवह्नि-युगभूतरसाश्वतर्कषड्वाणभूतविषयाश्च यथाक्रमेण योज्याः, तत्र मेषे १, वृषे २, मिथुने ३, कर्के ४, सिंहे ५, कन्यायां ६, तौलिके ७, वृश्चिके ६, धनुषि ६, मकरे ५, कुम्भे ५, मीने ५, योजिते सति भास्वत्यहर्गणो भवति। मेषादिराशिषु मेषादि-गत सावन[2]मासेषु (यस्यां तिथौ मेषसंक्रान्तिर्भवति तदारभ्याग्रिममासस्य सैवतिथिर्यावदयं मेष इत्यनेन क्रमेण सावनमासा भवन्ति) खरामगुणेषु त्रिंशद् गुणेषु प्राप्तमासस्य गततिथयः योज्याः तेषु ऋतुवासरोनाः कार्या एवं कृते पूर्वानीत दिनगणं तुल्यो द्युवृन्दो भवति तन्नगभक्तशेषम्—अब्दमुखादि नाथाद् वारा भवन्तीति (शून्यादि शेषे वर्षेशादयो ज्ञातव्याः) ॥ १–२ ॥

अत्र विशेषः—"अहर्गणेऽस्मिन्नगभक्तशेषे समाधिपा वारमुसन्ति यातम्।
अभीष्टवारार्थमहर्गणोऽयं कुहीनयुक् स्यादिति सम्प्रदायः" ॥ १ ॥

---

१—ऐन्दवस्तिथिभिस्तद्वत् संक्रान्त्या सौर उच्यते। सू. सि. १।१३

२—इनोदयद्वयान्तरं तदर्कसावनं दिनम्।
तदेव मेदिनी दिनं भवासरस्तु भभ्रमः॥ सि. शि. १/१९

"*द्वयब्धीन्द्रोनितशक ईशहृत् फलं स्याच्चक्राख्यं रविहतशेषकं तु युक्तम् ।
चैत्राद्यैः पृथगमुतः सद्व्घ्नचक्राद् दिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥ १ ॥
खत्रिघ्नं गततिथियुङ् नगघ्नचक्राङ्गांशाढ्यं पृथगमुतोऽब्धिषट्कलब्धैः ।
ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद्वै वारः स्याच्छरहतचक्रयुग्गणोऽब्जात् ॥ २ ॥
*"रामेन्दुभूर्वह्निकरक्षमाभिर्युतो दिनौघोग्रहलाघवीयः ।
चक्राङ्गनन्दक्षितिखाब्धियुक्तः स्याद् ब्रह्मतुल्यो द्युगणो विविज्ञ ! ॥ १ ॥
नेत्रेषुवेदाद्रिखखाङ्ग वह्निरिष्वभ्रयुग्माचलसंयुतश्चेत् ।
स्याद् ब्रह्मतुल्यो द्युगणस्तदानीम् भवत्ययं कल्पदिनान्ववायः ॥ २ ॥
बाणाङ्गरामेन्दुरसाष्टवह्निव्योमाब्धिवेदक्षितिशैलयुक्तः ।
चेद् ब्रह्मतुल्यादिवसव्रजं स्यात् तदा भवेत् सृष्टिदिनौघ एषः ॥ ३ ॥

---

* उदाहरण-शकाब्द १८३३ में १४४२ को घटाया तो वर्ष समूह ३९१ हुआ, इसमें ११ का भाग दिया तो फलचक्र ३५ मिला, और शेष ६ बचा इसको १२ से गुणा किया तो ७२ हुआ। इसमें चैत्र से १ मास गत है इसको युत किया तो ७३ हुआ (यह मध्यम मासगण हुआ) इसको दो जगह रक्खे एक जगह द्विगुणित चक्र ७० को जोड़ा तो १४३ हुआ, फिर इसमें १० और युक्त किया तो १५३ हुआ; फिर इसमें ३३ का भाग दिया तो फल अधिमास ४ मिला, इसको दूसरी जगह रक्खे हुए ७३ में युक्त किया तो मास गण ७७ हुआ, इसको ३० से गुणा किया तो २३१० हुआ इसमें गत तिथि १२ युत किया तो २३२२ हुआ इसमें चक्र का छठवाँ भाग ५ युक्त किया तो २३२७ (मध्यमगण हुआ) इसको दो जगह स्थापित किया एक जगह इसमें ६४ का भाग दिया तो फल (क्षय दिन) ३६ मिला इसको दूसरी जगह रखे हुए २३२७ में हीन किया तो दिनगण २२९१ हुआ इससे अभीष्ट वार नहीं आता है अतः इसमें एक युक्त किया तो दिनगण २२९२ हुआ।

चक्र ३५ को ५ से गुणा तो १७५ हुआ, इसको दिनगण २२९२ में युक्त किया तो २४६७ हुआ, इसमें ७ का भाग दियां तो शेष ३ बचा (शून्य शेष में चन्द्र एक में भौम इत्यादि) इससे इष्ट गुरुवार आगया ॥

* उदाहरण—ग्रहलाघव के दिनगण २२९२ में १२३११३ को युत किया तो १२५४०५ हुआ चक्र ३५ से ४०१६ को गुणा किया तो १४०५६० हुआ इसको १२५४०५ में युत किया तो ब्रह्म तुल्य दिनगण २६५९६५ हुआ, इसमें ७२०६३६००७४५२ को युत किया तो कल्प से दिनगण ७२०६३६२७३४१७ हुआ, ब्रह्म तुल्य दिनगण २६५९६५ से ७१४४०३८६१३६५ को युत किया तो सृष्टि गण ७१४४०४१२७३३० हुआ, ब्रह्मतुल्य गण २६५९६५ में १५६४७३८ को युक्त किया तो कलि गण १८३०७०३ हुआ ॥

चेद् ब्रह्मतुल्योदितसवजोऽहिरामाद्रिवेदाङ्ग-शरेन्दुयुक्तः।
भवेत्तदा भोगणकप्रवीण! नूनं कलिप्राप्तिदिनौघ एषः॥४॥
नन्दाद्रिचन्द्राचलनेत्ररत्नयुग्मागखेटेन्दुयुताः शकाब्दाः।
यदा भवेयुर्गणिताधिराज! तदा मिलेत् कल्पगताब्दसङ्ख्याः॥५॥
अङ्काद्रिभूरामभुजङ्गसर्पबाणेषु नन्देन्दुयुताः शकाब्दाः।
सृष्ट्यब्दतां यान्ति विधिज्ञ! मूर्धमालालमार्चितपादपद्म!॥६॥
निधिशैलेन्दुरामैश्चेद् युताः स्युः शकवत्सराः।
तदा सम्पद्यते सङ्ख्यातीनां शरदां कलेः"॥७॥

भा० टी०—गत सावन मास को ३० से गुणा कर के गत तिथि युक्त कर फिर उसमें ऋतु वासर घटाने से दिन गण होता है। गत सौर मास (बीती हुई सूर्य की संक्रान्ति) ३० से गुण कर उसमें सूर्य के गत अंश को युत करै फिर उसमें मेषादि संक्रांति का क्रम से १।२।३।४।५।६।७।६।६।५।५।५ यह क्षेपक युत करने से दिनगण होता। दिनगण में ७ का भाग देने से शेष अब्दनाथ से गणना करने पर बार होता है॥१॥२॥

उदाहरण—श्री सम्वत् १९६८ शकाब्द १८३३ बैसाख शुक्ल १३ बार बृहस्पति के सूर्योदय पर त्रयोदशी है। गत सावन मास० को ३० से गुणा तो० हुआ इसमें गत दिन २७ युक्त किया तो २७ हुआ; इसमें ऋतु वासर० घटाया तो अहर्गण २७ हुआ। गत सूर्य की राशि० को ३० से गुणा तो ० हुआ इसमें गत अंश २६ युत किया तो २६ हुआ; फिर क्षेपक १ युक्त करने पर दिन गण २७ हुआ। इसमें ७ का भाग[1] देने से शेष ६ बचा अतः वर्षेश शुक्र से गिनने पर छठवाँ बृहस्पति बार आया (अभीष्ट वार के लिये एक न्यूनाधिक करे)॥१॥२॥

सूर्य स्पष्ट विधिः—

सूर्ये स्वरघ्नास्तिथयः प्रदेयाः
पृथक् शताप्ताः क्रमशश्च खण्डाः।
शेषाच्च भुक्तोनितभोग्यनिघ्ना-
च्छताप्त युक्तोऽप्यधिकःस्फुटः स्यात्॥३॥

---

× उदाहरण—शकाब्द १८३३ में १९७२९४९१७९ को युत किया तो कल्प से गतवर्ष १९७२९४९०१२ हुआ, शाका १८३३ में १९५५८८३१७९ को युक्त किया तो सृष्टि से गतवर्ष १९५५८८५०१२ हुआ, शाका १८३३ में ३१७९ को युक्त किया तो गतकलि ५०१२ हुआ॥

१—द्युगणोऽभीष्टवारार्थं कार्यः सैको निरेककः। सूर्यसिद्धान्त १।५२

अन्वय:—स्वरघ्नातिथयः सूर्ये प्रदेयाः पृथक् ( स्थानद्वये स्थाप्यः ) एकत्र शताप्ताः क्रमशः खण्डा च शेषाच्च भुक्तो नितभोग्यनिघ्नाच्छताप्तयुक्तः अधि अधिकः स्फुटः स्यात् ।

सं० टी०—स्वरघ्नाः सप्तगुणिताः तिथयः सूर्यध्रुवके प्रदेया योजनीया ( ततो बीजदेशान्तराभ्यां संस्कारितः ) एवं कृतेसति मध्यमसूर्यो भवति, मध्यमसूर्यः पृथक् स्थानद्वये संस्थाप्येकत्र शताप्ताः शतभागेन क्रमशः खण्डा लभ्यते तदग्रे भोग्यः शेषाच्चभुक्तोनित भोग्यनिघ्नाच्छताप्त युक्तः—अर्थाद्भुक्त-भोग्ययोरन्तरेण शतभागशेषं गुणितं शतेन विभाजितं प्राप्तफलं भुक्तखण्डके संयोज्य मध्यमार्के योजयेद् योजिते सति-अधिकः स्फुटः स्यात् स्पष्टसूर्य्यो भवतीति ॥ ३ ॥

भा० टी०—दिनगण को ७ से गुणा करके उसमें सूर्य के ध्रुवा को युक्त कर फर देशान्तर और बीज से संस्कार करके दो स्थान में स्थापित करे एक स्थान में १०० का भाग देने से जो फल मिले उतने संख्या वाले कोष्ठ के अंक को और सके अग्रिम कोष्ठ के अंक को अन्तर करे; फिर शेष को अन्तर से गुण के १०० का भाग देने से जो फल मिले उसको गत खण्डा में युक्त करके फिर उसको दूसरी जगह रखे हुए अंक में युक्त करने से स्पष्ट सूर्य होता है ॥ ३ ॥

सूर्यखण्डाङ्काः—

**सूर्यस्य पञ्चाङ्करवीन्द्रभूपाः घनानवेन्दुः कुयमा जिनाश्च ।**
**सप्ताश्विनश्चन्द्रगुणा रसाग्नी द्व्यब्धीमरुत् सप्तशराः शराङ्गाः ॥४॥**
**पञ्चाद्रयो वेदगजाः कृताङ्कास्त्रिखेन्दवो भानुभुवः कुसूर्य्याः ।**
**अष्टाश्विचन्द्राः शररामचन्द्राश्चन्द्राब्धिचन्द्राः शरवज्रिणश्च ॥५॥**

अन्वय:—सुगमम् ।

सं० टी०—सूर्यस्य दिनेशस्य पञ्चाङ्क रवीन्द्रभूपाः घनानवेन्दुः कुयमा जिनाः सप्ताश्विनः चन्द्रगुणा रसाग्नी द्व्यब्धी मरुत् सप्तशराः शराङ्गाः च पञ्चाद्रयो वेदगजाः कृताङ्कास्त्रिखेन्दवो भानुभुवः कुसूर्य्या अष्टाश्विचन्द्राः शररामचन्द्राश्चन्द्राब्धिचन्द्राश्शरवज्रिणश्चे ति खण्डाङ्का भवन्ति ॥ ४ ॥ ५ ॥

भा० टी०—सूर्य का ५।९।१२।१४।१६।१७।१९।२१।२४।२७।३१।३६।४२।४९। ५७।६५।७५।८४।९४।१०३।११२।१२१।१२८।१३५।१४१।१४५ खण्डाङ्क है, एक लब्ध में ५ दो में ९ इत्यादि क्रमसे जाने ॥ ४ ॥ ५ ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ७ से गुणा तो १८९ हुआ उसको मध्यम सूर्य की ध्रुवा ३।२३।५३ में युत किया तो तात्कालिक मध्यम सूर्य १९२।२३।५३ हुआ, इसमें बीज ऋण ०।१४।१९ को घटाया तो १९२।९।२४ हुआ, इसमें देशान्तर ऋण ०।५।३६

को घटाया तो बीज देशान्तर संस्कारित मध्यम सूर्य ९९२।३।४८ हुआ, इसको दो जगह स्थापित कर एक जगह में १०० का भाग दिया तो फल १ मिला अतः पहिला गत खण्डा ५ और दूसरा भोग्यखण्डा ९ इन दोनों का अन्तर धन ४ हुआ, इससे शेष ९२। ३। ४८ को गुणा तो ३६८। १५। १ हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो लब्धि ३।४०।५७ मिली, इसको गत खण्डा ५ में युक्त किया तो ८।४०।५७ हुआ, इसको दूसरी जगह स्थापित किये हुए ९९२।३।४८ में युत किया तो स्फुटसूर्य २००। ४४। ४५। हुआ ॥ ३-५ ॥

सूर्यखण्डा-अन्तर-भुक्तिबोधकचक्रम्।

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | संख्या |
| ० | ५ | ६ | १२ | १४ | १६ | १७ | १९ | २१ | खण्डा |
| ५ | ४ | ३ | २ | २ | १ | २ | २ | ३ | अन्तर |
| ७<br>२१<br>० | ७<br>१६<br>४८ | ७<br>१२<br>३६ | ७<br>८<br>२४ | ७<br>८<br>२४ | ७<br>४<br>१२ | ७<br>८<br>२४ | ७<br>८<br>२४ | ७<br>१२<br>३६ | भुक्ति |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | संख्या |
| २४ | २७ | ३१ | ३६ | ४२ | ४९ | ५७ | ६५ | ७५ | खण्डा |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ८ | १० | ९ | अन्तर |
| ७<br>१२<br>३६ | ७<br>१६<br>४८ | ७<br>२१<br>० | ७<br>२५<br>१२ | ७<br>२९<br>२४ | ७<br>३३<br>३६ | ७<br>३३<br>३६ | ७<br>४३<br>० | ७<br>३७<br>४८ | भुक्ति |
| १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | संख्या |
| ८४ | ९४ | १०३ | ११२ | १२१ | १२८ | १३५ | १४१ | १४५ | खण्डा |
| १० | ९ | ९ | ६ | ७ | ७ | ६ | ४ | ० | अन्तर |
| ७<br>४२<br>० | ७<br>३७<br>४८ | ७<br>३७<br>४८ | ७<br>३७<br>४८ | ७<br>२९<br>२४ | ७<br>२९<br>२४ | ७<br>२५<br>१२ | ७<br>१६<br>४२ | ७<br>०<br>० | कलादि भुक्तिः |

सूर्य गतिस्पष्ट विधिः—

भुक्ति च धृत्वा गुणयेत्स्व भुक्त भोग्येन हृत्वाम्बरशून्यचन्द्रैः ।
लब्धं फलं मध्यगतौ प्रदद्यादहः परं स्यात्परकर्म कार्यम् ॥६॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—भुक्तीं धृत्वा भुक्तभोग्यखण्डान्तरेण गुणयेदम्बरशून्यचन्द्रैर्हृत्वा लब्धं फलं मध्यगतौ प्रदद्यात् परकर्मकार्यमहः परं स्यात् । ( स्पष्टार्कगतिरष्टभिर्गुणिते सति ग्रहलाघव तुल्या गतिर्भवति ) ॥ ६ ॥

"भोग्यारवेः सप्तगुणाच्छताप्ता सप्ताऽन्विता स्यात् स्फुटसूर्यभुक्तिः" ।

भा० टी०—सूर्य की भुक्ति को खण्डान्तर से गुणाकर १०० का भाग देने से जो लब्धि मिले वह मध्यम भुक्ति में युत करने से स्पष्ट गति होती है ॥ ६ ॥

उदाहरण—सूर्य की भुक्ति ७ को खण्डान्तर ४ से गुणा किया तो २८ हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो फल ०।१६ मिला इसको मध्यम गति ७।० में युक्त किया तो स्पष्टगति ७।१६ हुई ॥ ६ ॥

"तात्कालिक मध्यमचन्द्र-चन्द्रकेन्द्र-स्पष्ट चन्द्रविधयः—

खनन्दनिघ्नास्तिथयः शशाङ्के केन्द्रे शतघ्नास्तिथयः प्रदेयाः ।
केन्द्रे क्रमात्खट् शरसप्तदस्रैः शोध्यो विधुश्चागशराब्धिदस्रैः ॥७॥

इन्दुद्युवृन्दात्सहितः खसूर्यैश्चरार्द्धभागोन युतः समार्द्धात् ।
चरार्द्ध भागा विषुवादिमासैः खचान्द्र नेत्रद्वयचान्द्रखांशाः ॥८॥

पुनर्द्युवृन्दाद्गगनेषु लब्धम्
शीतांशुकेन्द्रे तु युतं प्रकुर्यात् ।
तत्प्रत्यहं स्युः शतशश्च खण्डा
भोग्योद्भवांशैश्च धनं स्फुटः स्यात् ॥९॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—खनन्दनिघ्नाः तिथयः शशाङ्के ध्रुवके प्रदेयाः शतघ्नास्तिथयः केन्द्रध्रुवके प्रदेयास्ततः क्रमात् केन्द्रे षट्शरसप्तदस्रैः षट्पञ्चाशताधिकसप्तविंशतिशतैः शोध्यो विधुश्चागशराब्धिदस्रैः सप्तपञ्चाशताधिकचतुर्विंशतिशतैः शोध्यः पुनर्द्युवृन्दाद् दिनगणात् खसूर्यैर्यल्लब्धं तेनान्वित इन्दुश्चन्द्रः कर्त्तव्य श्चरार्द्धेति समार्द्धाद् अब्दाद् मेषतुलादितश्च-ऊनः-युतः कार्यः, मेषादि षण्मासेषु-ऊनः तुलादिषट् मासेषु युतः कर्त्तव्यः ( विषुव मेषतौलिकम् ) विषुवादि मासेषु

खचन्द्रनेत्रद्वयचन्द्रखांशाश्चराद्धंभागा भवन्ति चराद्धंभागसंस्कारिते सति (बीजदेशान्तराभ्यां संस्कारितः) पुनः दिनगणाद् गगनेषुभिर्यल्लब्धं तच्छीतांशु-केन्द्रे योज्यं तत्प्रत्यहं स्युः (ततो बीजदेशान्तराभ्यां संस्कारितः) केन्द्रो भवति। तस्माच्छतशः भागेन खण्डाः सन्ति। भोग्योद्भवांशैर्धनं स्फुटः स्याच्च केन्द्रे शतशः भागेन चन्द्रखण्डाङ्केषु भुक्तः खण्डः प्राप्यते तदग्रे भोग्यः शतभागादवशिष्टं भुक्तभोग्यखण्डान्तरेण गुणितं शताप्तं भुक्तखण्डके युक्तं कृत्वा चन्द्रे योजयेद् योजिते सति, औदयिकमध्यमेन्दुः स्फुटः स्यात् ॥ ७ ॥ ९ ॥

भा० टी०—दिनगण को ६० से गुणा करके मध्यमचन्द्र ध्रुवा में युक्त करे, फिर दिनगण में १२० का भाग देने से जो अंशादि फल मिले उसे भी उसी में युक्त करे, मेषादि छः राशियों का ०।१।२।२।१।० यह ऋणचरार्द्ध है और यही तुलादि छः राशियों का धन चरार्द्ध है। चरार्द्धको युक्त या हीन करके २४५७ से शेषित करने से शेष मध्यम चन्द्र होता है, फिर उसको बीज और देशान्तर से संस्कार करने पर बीज देशान्तर संस्कारित मध्यम चन्द्रमा होता है। दिनगण को १००से गुण चन्द्र केन्द्र ध्रुवा में युत करके फिर दिनगण में ५० का भाग देने से जो फल मिले उसको भी उसी में युक्त करे फिर उसको १७५६ से शेषित करने से शेष तात्कालिक चन्द्रकेन्द्र होता है फिर उसको बीज और देशान्तर से संस्कार करने पर बीज देशान्तर संस्कारित चन्द्रकेन्द्र होता है। केन्द्र में १०० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही संख्या वाला भुक्त खंडा और उसके आगे का अंक भोग्य खण्डा होता है, भुक्त भोग्य खंडा का अन्तर करके शेष को अन्तर से गुणा करे फिर उसमें १०० का भाग देने से जो लब्धि मिले। उसे भुक्त खण्डा में युक्त करे बाद २४५७ का भाग देने से जो शेष है उसमें उसको युत करने से स्पष्टचन्द्र होता है। (सुगमता के लिये संस्कृत टीका से भाषा टीका में भेद किया गया है) ॥ ७–९ ॥

चन्द्रखण्डाङ्काः :–

इन्दोः खरूपाग्निरसाः खचन्द्रा
नृपा जिनाः पञ्चगुणा रसाब्धयः।
षष्ठिः शरागाः कुनगाष्टकाष्ठाः
षड्भानवो राममनुर्नवाहाः ॥१०॥

पञ्चाम्बुदा खाङ्कभुवो द्विखाश्वि
विश्वाश्वि जात्यश्वि खरामदस्राः।
पञ्चाग्निदृग् गोऽग्नियमाः कुसिद्धा
नेत्राब्धिदृग् वह्निजिनास्त्रिसिद्धाः ॥११॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—इन्दोश्चन्द्रस्य स्वरूपाग्निरसाः खचन्द्रा नृपा जिनाः पञ्चगुणा रसाब्धयः षष्ठिः शरागाः कुनवाष्टकाष्ठा षड्मानत्रो राममनुर्नवाहाः पञ्चाम्बुदा खाङ्कभुवो द्विखाश्वि विश्वाश्वि जात्यश्वि खशमदस्राः पञ्चाग्निदृग् गोऽग्नियमाः कुसिद्धा नेत्राब्धिदृग् वह्निर्जिनास्त्रिसिद्धाखण्डाङ्का भवन्ति ॥ १०, ११ ॥

भा० टी०—चन्द्रमा का ०।१।३।६।१०।१६।२४।३५।४६।६०।७५।९१।१०८ १२६।१४३।१५९।१७५।१९०।२०२।२१३।२२२।२३०।२३५।२३६।२४१।२४२।२४३ २४३ खण्डांक है ॥१०,११॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ९० से गुणा किया तो २४३० हुआ, इसको चन्द्रमा की ध्रुवा ११५० । २१ । ३० में युत किया तो २५८० । २१ । ३० हुआ, फिर दिनगण २७ में १२० का भाग दिया तो अंशादिक ० । १३ । ३० मिला इसको २५८० । २१ । ३० में मिलाया तो २५८० । ३५ । ० हुआ, इसमें चरार्द्ध० को हीन किया तो ३५८० । ३५ । ० बचा इसमें २४५७ का भाग दिया तो शेष ११२३ । ३५ । ० । में चन्द्रमा का अंशादि बीज ३ । ६ । १८ को युक्त किया तो ११२६ । ४१ । १८ हुआ, इसमें अंशादि देशान्तर ऋण १ । १२ । ० घटाया त बीज देशान्तर संस्कारित मध्यम चन्द्रमा ११२५ । २९ । १८ हुआ ।

दिनगण २७ को १०० से गुणा किया २७०० हुआ इसको चन्द्रकेन्द्र ध्रुव २३६१ । ४३ । १४ में युत किया तो ५०६१ । ४३ । १४ हुआ फिर दिनगण २७ में ५० का भाग दिया तो फल अंशादि ०।३२।२४ मिला । इसको ५०६१ । ४३। १४ में युत किया तो ५०६२ । १५ । ३८ हुआ, इसमें २७५६ का भाग देने से शेष २३०६ । १५ । ३८ में चन्द्रकेन्द्र का बीज धन ३।२७।० को युक्त किया तो २३०९।४२।३८ हुआ इसमें चन्द्रकेन्द्र का देशान्तर ऋण अंशादि १।२०।० को घटाया तो बीज देशान्तर संस्कारित चन्द्रमा का मध्यम केन्द्र २३०८।२२।३८ हुआ ।

चन्द्रमा के केन्द्र २३०८।२२।३८ में १०० का भाग दिया तो फलगत खण्डा २३ मिला इससे तेइसवाँ गतखण्डा २३५ है, इसके बाद चौबीसवाँ भोग्य खण्ड २३९ है, इन दोनों का अन्तर धन ४ हुआ इससे शेष ८।२२।३८ को गुणा किया तो ३३।३०।३२ हुआ इसमें हर १०० का भाग दिया तो फल ०।२०।६ मिला इसको भुक्तखण्डा २३५ में मिलाया तो २३५।२०।६ हुआ इसको मध्यम चन्द्रमा ११२५।२९।१८ में युक्त किया तो स्फुट चन्द्रमा १३६०।४९।२४ हुआ ।।७-११॥
११२५

चन्द्र खण्डा-अन्तर-भुक्ति बोधक चक्रम् ।

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | संख्या |
| ० | ० | १ | ३ | ६ | १० | १६ | २४ | ३५ | ४६ | खण्डा |
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ८ | ११ | ११ | १४ | अन्तर |
| ९०<br>० | ९१<br>० | ९२<br>० | ९३<br>० | ९४<br>० | ९६<br>० | ९८<br>० | १०१<br>० | १०१<br>० | १०४<br>० | कलादि गतिः |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | संख्या |
| ६० | ७५ | ९१ | १०८ | १२६ | १४३ | १५९ | १७५ | १९० | २०१ | खण्डा |
| १५ | १६ | १७ | १८ | १७ | १६ | १६ | १५ | १२ | ११ | अन्तर |
| १०५<br>० | १०६<br>४८ | १०७<br>० | १०८<br>० | १०७<br>० | १०६<br>० | १०६<br>० | १०५<br>० | १०२<br>० | १०१<br>० | कलादि गतिः |
| २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | | संख्या |
| २१३ | २२२ | २३० | २३५ | २३९ | २४१ | २४२ | २४३ | २४३ | | खण्डा |
| ९ | ८ | ५ | ४ | २ | १ | १ | ० | ० | | अन्तर |
| ९९<br>० | ९८<br>० | ९५<br>० | ९४<br>० | ९२<br>० | ९१<br>० | ९१<br>० | ९०<br>० | ९०<br>० | | कलादि गतिः |

चन्द्रगति विधिः—

## भुक्तिर्नवत्यन्वितभोग्यामिन्दोः ।

अन्वय :—सुगमम् ।

स० टी०—इन्दोश्चन्द्रस्य खण्डान्तरं नवत्यान्वितं युक्तं भुक्तिर्भवति ॥

भा० टी०—चन्द्रमा के खण्डा के अन्तर में ९० को युक्त करने से चन्द्रमा की गति होती है ।

उदाहरण—चन्द्रमा के खण्डा का अन्तर ४ है, इसमें ९० को युक्त किया तो चन्द्रमा की गति ६४।० हुई ।

तिथि विधिः-

**अर्कोनचन्द्रात्तिथयः खनन्दैः ।**
**शेषोनखाङ्काङ्गगनाङ्गनिघ्नाद्**
**भुक्त्यन्तराप्ता घटिका भवन्ति ॥१२॥**

अन्वयः--चन्द्रात् अर्कोनः खनन्दैः शेषः ( लब्धं ) तिथयः ( भवन्ति ) शेषः ( द्विस्थान स्थापितः क्रमेण ) गगनाङ्ग (६) खाङ्का (९०) निघ्नात् भुक्त्यान्तराप्ता च ( क्रमेण भुक्तभोग्य- ) घटिका भवन्ति ।

सं० टी०--अर्कोनचन्द्रात् खनन्दैर्लब्धंशुक्लप्रतिपदादयोगत तिथयो भवन्ति, यदा चन्द्राद्रविर्नशुद्धयति तदा भगणं दत्वा शोधयेत्, शोधने यत्र शून्यं भवेच्छेषं न भवति तत्र शुल्कप्रतिपत्तिथिर्भवति, शेषोनखाङ्काद् गगनाङ्गनिघ्नात् षष्ठिगुणिताद् भुक्त्यन्तराप्ता घटिका भवन्ति ॥ १२ ॥

भा० टी०—स्पष्ट चन्द्रमा में स्पष्ट सूर्य को घटाकर ( सूर्य से यदि चन्द्रमा न्यून हो तो चन्द्रमा में २७०० को युत करके घटावे ) उसमें ९० का भाग देने से फलगत तिथि मिलती है, शेष को ६० से गुणा करके उसमें चन्द्रमा और सूर्य की भुक्ति के अन्तर (अर्थात् चन्द्रमा की भुक्ति में सूर्य की भुक्ति घटाने से जो शेष बचे) का भाग देने से वर्तमान तिथि की भुक्त घटी आदि मिलती है, शेष को हर ९० में घटाकर उसको ६० से गुणा करके उसमें भुक्ति के अन्तर का भाग देने से वर्तमान तिथि की भोग्य घटी आदि होती है ॥ १२ ॥

उदाहरण—स्पष्ट चन्द्रमा १३६० । ४६ । २४ में स्पष्ट सूर्य २०० । ४४ । ४५ को घटाया तो शेष ११६० । ४ । ३९ बचे इसमें ९० का भाग दिया तो लब्ध गत तिथि १२ वीं मिली, भाग शेष ८०।४।३९ को ६० से गुणा करके सजातीय किया तो भाज्य २८८२७९ हुआ चन्द्रमा कि गति ६४ । ० में सूर्य की गति ७ । १६ को घटाया तो ५६ । ४४ बचा इसको स जातीय किया तो भाजक ५२०४ हुआ, इसका भाज्य २८८२७९ में भाग दिया तो फल वर्तमान तिथि का भुक्त घटी ५५ पल २४ पूर्व भाग शेष मिला । ८०।४।३९ को हर ९० में हीन किया तो ९।५५।२१ बचा इसको सजातीय किया तो ३५७२१ हुआ इसमें भाजक ५२०४ का भाग किया तो फल वर्तमान तिथि की भोग्य घडी ६ पल ५२ मिला वर्तमान तिथि का भुक्त भोग्य का योग ६२।१६ तिथिका मान हुआ ॥ १ ॥

स्पष्टज्ञानार्थम्—

स्प चन्द्रमा = १३६० । ४६ । २४

— स्प सूर्य = २०० । ४४ । ४५

६०) ११६० । ४ । ३९ ( १२ गततिथि

१०८०

८० । ४ । ३९ शेष

शेष ८० । ४ । ३९ × ६० = ४८०० । २४० । २३४०

= ४८०४ । ३९ सजातीय कियातो २८८२७९

चन्द्रमा की गति ९० । ०— सूर्य की गति ७ । १६ = ८६ । ४४ = ५२०४

५२०४ ) २८८२७९ ( ५५

२६०२०

२८०७९

२६०२०

२०५९ × ६० = १२३५४०

५२०४ ) १२३५४० ( २४ स्वल्पान्तरात् अतः ५५ । २४ वर्तमानतिथि का

१०४१० भुक्त घटिकादि हुआ

१९४४०

९०—८० । ४ । ३९ = ९ । ५५ । २१ = ३५७२१ सजातीय करने पर ।

५२०४ ) ३५७२१ ( ६ घटी

३१२२४

४४९७ × ६० = २६९८२०

५२०४ ) २६९८२० ( ५१ स्वल्पान्तरात । अतः ६ । ५२ वर्त्तमानतिथिका

२६०२० भोग्य मान आया

९६२०

दोनों का योग ५५ । २४ + ६ । ५२ = ६१ । १६ तिथि ११ का मान हुआ ।

विशेष—

समवेत रूप से विभिन्न जातीय दो तीन अवयवों का दो तीन अवयवों के साथ भाग क्रिया में यदि सरलता मालूम पड़ेतो नीचे लिखे अनुसार क्रिया करनी चाहिए । यथा—

भाज्य ४८०४ । ३९ और भाजक ८६ । ४४ है । यहाँ पर प्रथम भाजक का दश गुणित मान पृथक् रख लेना चाहिए । इससे विशेष सुविधा हो जाती है ।

भाजक ८६ । ४४ × १० = ८६० । ४४० = ८६७ । २०

८६।४४ ) ४८०४ । ३९ ( ५५ लब्धि के प्रथमअङ्क को दशगुणित से गुणा करके रक्खा । यथा—

४३३६ । ४०

४६७ । ५९

४३३ । ४०

३४ । १९ × ६०

= २०५९ । ०

८६७ । २० × ५ = ४३३५ । १००

लब्धिअंक = ४३३६ । ४०

८६।४४ ) २०५९ । ० ( २४ द्वितीय लब्धिअंक ५ से गुणा कर

१७३४ । ४०

३२४ । २०

३४६ । ५६ स्वल्पान्तर से लब्धि = ५५ । २४

सामान्य गणितज्ञान में यह विधि कठिन जान पड़ेगी, किन्तु इसका अभ्यास होने पर समय कम लगेगा ।

नक्षत्र विधि :—

शताप्तमृक्षं शतशोधितांशात्

षष्ठ्याहता भुक्ति हृतास्तु नाड्यः ।

राशिः शशाङ्काच्छरजाति लब्धम्

नक्षत्रवत् तद् घटिका भवन्ति ॥२१॥

अन्वयः—( चान्द्रात् ) शशाङ्कात् शतात्तं ऋक्षं, शतशोधितांशात् षष्ट्याहता भुक्तिहृता नाड्यः भवन्ति । तु शरजातिलब्धं राशिः तद् नक्षत्रवत् घटिका भवन्ति

सं० टी०—शशाङ्काच्छताप्तं नक्षत्रं भवति, शतशोधितांशात् शेषात् षष्ट्याहता भुक्तिहृता षष्टिगुणितचन्द्रगतितो हृता नाड्यो ( भुक्तनाड्यो ) भवन्ति, तु शरजाति लब्धं राशिर्भवति, तच्छेषात् नक्षत्रवद् घटिका अंशादयो भवन्ति, एवं सूर्यस्पष्टविधावपि—"राशिस्स्फुटार्काच्छरजातिलब्धं खवह्निनिघ्नादवशेषितोंऽशः" ॥ १३ ॥

भा० टी०—स्फुट चन्द्रमा (भचक्र २७०० से अधिक होय तो भचक्र से शोधित करके) में १०० का भाग देने से लब्धि गत नक्षत्र होता है । शेष को ६० से गुणा कर सवर्णित करके चंद्रगति का भाग देने से वर्तमान नक्षत्र की गत घटी आदि मिलती है, और पूर्व शेष को १०० में घटा कर उसको ६० से गुणा करके सवर्णित करे, बाद उसमें चन्द्रमा की गति का भाग देने से वर्तमान नक्षत्र की

भोग्य घटी आदि होती है। स्फुट चन्द्रमा में २२ का भाग देने से लब्धराशि होती है, अंशादि नक्षत्र की घटी के प्रकार से स्पष्ट करे ॥ १३ ॥

उदाहरण स्फुट चन्द्र १३६०।४९।२४ में १०० का भाग दिया तो फल गतनक्षत्र १३ वाँ हस्त मिला, शेष ६०।४९।२४ को ६० से गुणा करके सजातीय किया तो भाज्य २१८९६४ हुआ और चन्द्रगति ९४ को ६० से गुणा तो भाजक ५६४० हुआ, इसका भाज्य में भाग दिया तो वर्तमान नक्षत्र की भुक्त घड़ी आदि ३८।४९ मिली, पूर्व भाग शेष ६०।४९।२४ को १०० में हीन किया तो शेष ३९।१०।३६ बचा इसको ६० से गुणा करके सजातीय किया तो भाज्य १४१०३६ हुआ इसमें भाजक ५६४० का भाग दिया तो लब्ध वर्तमान नक्षत्र का भोग्य घड़ी २५ पल० मिला गत ऐष्यका योग ६३।४९ हुआ।

स्पष्ट चन्द्र १३६०।४९।२४ में २२५ का भाग दिया तो फल गतराशि कन्या ६ मिली, शेष १०।४९।२४ को ३० से गुणा कर सजातीय किया तो ३४९।२४ हुआ इसमें २२५ का भाग दिया तो फल गत अंशादि १।३३।११ मिला इसमें गतराशि ६ को युत किया तो स्पष्ट चन्द्रमा ६।१।३३।११ हुआ। स्पष्टसूर्य २००।४४।४५ में २२५ का भाग दिया तो फल गतराशि० मिली, शेष २००।४४।४५ को पूर्वोक्त क्रिया करने से अंशादि फल २६।५१।५६ मिला इसमें तग राशि ० युत किया तो स्पष्ट सूर्य ०।२६।५१।५६ हुआ॥ १३ ॥

योग विधिः—

एवं रवीन्दोर्युतितश्च योगाः
सूर्येन्दु भुक्त्यैकहृतस्तु नाड्यः ॥१४॥[1]

अन्वयः—सुगमम्।

सं० टी०—एवममुना प्रकारेण रवीन्दोस्सूर्यचन्द्रयोर्युतितः, योगा भवन्ति च सूर्येन्दुभुक्त्यैकहृतो नाड्यो भवन्ति। एवं रवीन्दोर्युतितश्च योगाः सप्तान्विताश्चन्द्रगतिस्तु हार इत्यपि पाठः॥ १४ ॥

"तिथिनक्षत्रयोगानां वृद्धिःपञ्चरसद्विकम्।
क्रमेणैव तु हृयन्ते रसवेदगजैः क्रमात्" ॥ १ ॥

भा० टी०—इसीप्रकार सूर्यचन्द्र के योग में १०० का भागदेने से फल गत योग होता है, शेषको ६० से गुणाकर सजातीय करके सूर्य चन्द्रमा की भुक्ति के योग का भाग देने से लब्ध वर्तमान योग की भुक्तघड़ी होती है, पूर्व शेष को हर

१—"एवं रवीन्दोयुतितश्चयोगाः सप्तान्विताश्चन्द्रगतिस्तु हारः" इतिपाठान्तरम्।

१०० में हीन कर उसको सजातीय करके भुक्ति के योग का भागदेने से वर्तमान योग की भोग्य घड़ी होती है ॥ १४ ॥

उदाहरण—स्फुटसूर्य २००।४४।४५ है, इसमें स्फुट चन्द्र १३६०।४९।२४ को युत किया तो १५६१।२४।९ हुआ, इसमें १०० का भाग दिया तो लब्ध गतयोग १५ वां वज्र हुआ, शेष ६१।३४।९ को ६० से गुणा करके सजातीय किया तो भाज्य २२१६४९ हुआ, सूर्य की गति ७।१६ है, चन्द्रमा की गति ९४।० हैं, इन दोनों को एक जगह युक्त किया तो १०१।१६ हुआ इसको ६० से गुणा करके सजातीय किया तो भाजक ६०७६ हुआ, इसको भाज्य २२१६४९ में भाग दिया तो वर्तमान सिद्धि योग की भुक्त घडी आदि ३६।२९ मिली, और पूर्व शेष ६१।३४।९ को हर १०० में हीन किया तो शेष ३८।२५।५१ बचा, इसको ६० से गुणा करके सजातीय किया तो भाज्य १३८३५१ हुआ, इसमें भाजक ६०७६ का भाग दिया तो वर्तमान योग की भोग्य घटी आदि २२।४६ मिली, भुक्त ऐष्य नाडी का योग किया तो ५९।१५ हुआ ॥ १४ ॥

करणज्ञानविधिः—

**अर्कोनचन्द्राच्छरवेदहीनात् ततोऽपि शेषाच्च शराब्धिलब्धम् ।**
**सप्तावशेषं करणं बवाद्यम् तन्नाडिकाद्यास्तिथिवद् भवन्ति ॥१५॥**

**अन्वयः**—सुगमम् ।

सं० टी०—अर्कोनचन्द्राच्छरवेदहीनात् ततोऽपि शेषाच्च शराब्धिलब्धं सप्तावशेषं बवाद्य करणं भवति, तन्नाडिकाद्या तिथिवद् भवन्ति ॥ १५ ॥

भा० टी० स्पष्ट चन्द्रमा में स्पष्ट सूर्यको हीन करके फिर उसमें ४५ को घटाकर उसमें ४५ का भाग देने से जो लब्धि मिले उसमें ७ का भाग देनेसे शेष बवादिगत करण होता है, पूर्वभाग शेष को हर में घटाकर वर्तमान करण की भुक्त भोग्य घटी तिथि की घटी की रीति से साधे ॥ १ ॥

उदाहरण—स्फुट चन्द्र १३६०।४९।२४ में स्फुटसूर्य २००।४४।४५ को घटाया तो ११६०।४।३९ बचा इसमें ४५ और घटाया तो १११५।४।३९ बचा इसमें ४५ का भाग दिया तो फल २४ मिला इसमें ७ का भाग दिया तो शेष गतकरण ३ कौलव मिला, पूर्वशेष ३५।४।३९ को ६० से गुणा करके सजातीय किया तो भाज्य १२६२७९ हुआ, चन्द्र गति ९४।० में सूर्य गति ७।१६ को हीन किया तो ८६।४४ हुआ इसको ६० से गुणा करके सजातीय किया तो भाज्य १२६२७९ में भाग दिया तो वर्तमान तैतिल करण की भुक्त घडी आदि २४।१६ मिली। फिर पूर्वशेष ३५।४।३९ को हर ४५ में हीन किया तो शेष ९।५५।२१ बचा इसको सजातीय करने से भाज्य ३५७२१ हुआ इस में भाजक ५२०४ का भाग देने से फल वर्तमान

तैतिल करण की भोग्य घडी आदि ६।५२ मिली, वर्तमान करण का गत ऐष्य योग ३१।८ हुआ ॥ १५ ॥

स्थिरकरणाः—

परे दले कृष्णचतुर्दशी या
तिथ्यर्द्धभोगः शकुनिश्चतुष्पात् ।
नागश्च किन्स्तुघ्नमिति क्रमेण
चत्वारि विद्यात् करणानि नित्यम् ॥ १६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—कृष्णचतुर्दशी या परे दले तिथ्यर्द्धभोगः शकुनी चतुष्पान्नागश्च किन्स्तुघ्नं चेति क्रमेण चत्वारि करणानि नित्यं विद्यात् ॥ १६ ॥

भा० टी०—कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के पर दल से तिथि का आधा भोगने वाला शकुनी, चतुष्पद्-नाग-किंष्तुघ्न नामके करण नित्य होते हैं। अर्थात् चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध में शकुनी-अमावस के पूर्वार्द्ध में चतुष्पद-उत्तरार्द्ध में नाग और प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में किंष्तुघ्न होता है ॥ १६ ॥

अल्पश्रमेण पञ्चाङ्गविधिः—

दिने दिनेऽहर्गणरूपयुक्तः
सप्तैव सूर्ये च खनन्दमिन्दौ ।
खखेन्दवः केन्द्रगणे प्रयोज्याः
प्राग्वत्स्फुटीकृत्यतिथिः प्रसाध्या ॥ १७ ॥

अन्वयः—दिने-दिने अहर्गणे रूपम् । सूर्ये सप्तैव, इन्दौ च खनन्दं केन्द्रगणे खखेन्दवः प्रयोज्याः प्राग्वत् स्फुटीकृत्यतिथिः प्रसाध्या ।

सं० टी०—दिने दिने कोर्थः प्रतिदिनेऽहर्गणः रूपयुक्तः कार्यः सूर्येसप्तैव-इन्दौ चन्द्रे खनन्दं-केन्द्रगणे केन्द्रसमूहे खखेन्दवः प्रयोज्याः प्राग्वत् पूर्ववत् स्फुटीकृत्य तिथिः प्रसाध्या ॥ १७ ॥

भा० टी०—प्रतिदिन दिनगण में १ सूर्य में ७ चन्द्रमा में ९० केन्द्र में १०० को युतकर पूर्ववत् स्पष्ट करके तिथि आदि को साधे, इस श्लोक से और पूर्व के श्लोक से चन्द्र और चन्द्रकेन्द्र में अन्तर पड़ता है। चन्द्रमा में ६०।०।३०। और चन्द्र केन्द्र में १००।१।१२ को प्रतिदिन युत करने से ठीक होता है ॥ १७ ॥

## सूर्यदिनगणसारणीयम् । एकाद्यङ्कानि ( एकाई ) ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | १४ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४९ | ५६ | ६३ | अंश |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | कला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | विकला |

### दशाद्यङ्कानि ( दहाई ) ।

| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७० | १४० | २१० | २८० | ३५० | ४२० | ४९० | ५६० | ६३० | अंश |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | कला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | विकला |

### शताद्यङ्कानि ( सैकड़ा ) ।

| १०० | २०० | ३०० | दिनगण |
|---|---|---|---|
| ७०० | १४०० | २१०० | अंश |
| ० | ० | ० | कला |
| ० | ० | ० | विकला |

## चन्द्रदिनगणसारणीयम् । एकाद्यङ्कानि ( इकाई ) ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९० | १८० | २७० | ३६० | ४५० | ५४० | ६३० | ७२० | ८१० | अंशला |
| ० | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | कला |
| ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | विकला |

### दशाद्यङ्कानि ( दहाई ) ।

| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९०० | १८०० | ० | ९०० | १८०० | ० | ९०० | १८०० | ० | अंश |
| ५ | १० | ५१ | २० | २५ | ३० | ३५ | ४० | ४५ | कला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | विकला |

शताद्यङ्कानि ( सैकड़ा )।

| १०० | २०० | ३०० | दिनगण |
|---|---|---|---|
| ९०० | १८०१ | ० | अंश |
| ५० | ४० | ३० | कला |
| ० | ० | ० | विकला |

चन्द्र केन्द्र दिनगण सारणीयम्। एकाद्यङ्कानि ( इकाई )

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०० | २०० | ३०० | ४०० | ५०० | ६०० | ७०० | ८०० | ९०० | अंश |
| २ | २ | ३ | ४ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | कला |
| १२ | २४ | ३६ | ४८ | ० | १२ | २४ | ३६ | ४८ | विकला |

दशाद्यङ्कानि ( दहाई )।

| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १००० | २००० | ३०० | १३०० | २३०१ | ६०१ | १६०१ | २६०१ | ९०१ | अंश |
| १२ | २४ | ३६ | ४८ | ० | १२ | २४ | ३६ | ४८ | कला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | विकला |

शताद्यङ्कानि ( सैकड़ा )।

| १०० | २०० | ३०० | दिनगण |
|---|---|---|---|
| १९०२ | ११०४ | ३०६ | अंश |
| ० | ० | ० | कला |
| ० | ० | ० | विकला |

भा. टी.--दिन दिन का दिनगण के अनुकूल मध्यम ग्रह जानने के लिये यह दिन गणसारणी तीन विभाग में बनाई गई है, प्रथम विभाग जो ऊपर है उसमें एकादि (इकाई का) अर्थात् एकसे नवतक का अंक लिखा है, दूसरा विभाग

जो प्रथम विभाग के नीचे है उसमें दशादि ( दहाई का ) अंक १०-२०-३० इस प्रकार से ९० तक लिखा है, तीसरा विभाग जो दूसरे विभाग के नीचे है उसमें शतादि ( सैकड़ा का ) अंक एक सौ से तीन सौ तक लिखा है।

जिस दिन का ग्रहस्पष्ट करना हो उस दिन का पहले दिनगण (अहर्गण) बनावे फिर जिस ग्रह को स्पष्ट करना हो उस ग्रह की दिनगण सारणी के अनुकूल अर्थात् दिनगण में जो जो अंक एकादिक का हो उस उस अंक के नीचे जो जो अंशादि फल मिले उसको पृथक् पृथक् लिखता जाय पीछे सभी अक को एक जगह जोड़ देने से जो अंशादिक मिले उसको शास्त्राब्द से लगाये हुए उस ग्रह के ध्रुवा में युक्त करने से उस दिन के सूर्योदय का मध्यम ग्रह होता है ॥ १९ ॥

उदाहरण—श्रीसम्वत् १९६८ शाका १८३३ वैशाखकृष्ण १० गुरुवार के दिन पूर्वोक्त रीति से दिनगण वनाया तो दिनगण ९ हुआ, सूर्य को स्पष्ट करना है और दिनगण में मात्र इकाई के अंकों में से ९ है, इसमें सूर्य की दिनगण सारणी के इकाई में से ९ के नीचे देखा तो अंशादि ६३ । ०। ० मिले, इसको शास्त्राब्द से लाये हुये सूर्य की ध्रुवा ३ । २३ । ५३ में युक्त किया तो उस दिन का मध्यम सूर्य अंशादि ६६ । २३ । ५३ हुआ। श्रीसंवत् १९६८ शाका १८३३ वैशाख शुक्ल १५ शनिवार के दिन दिनगण २९ है, सूर्य को स्पष्ट करना है, दिनगण में इकाई ९ है दहाई दो इससे सूर्य की दिनगण सारणी में इकाई में से नव के नीचे देखा तो अंशादि ६३ । ० । ० मिले, दहाई में दो है इससे वीस के नीचे दहाई के कोष्ठ में देखा तो अंशादि १४० । ० । ० मिले, इन दोनों को जोड़ दिया तो अंशादि २०३।०।० हुआ, इसको सूर्य की ध्रुवा ३।२३। ५३ में युत किया तो मध्यम सूर्य अंशादि २०६ । २३ । ५३ हुआ। श्रीसंवत् १९६८ शाका १८३३ भाद्रपदकृष्ण ५ मङ्गलवार के दिनगण १२३ है, सूर्य स्पष्ट करना है दिनगण में इकाई में से तीन दहाई में से दो सैकड़ा में से एक है, पहिले इकाई में से तीन के नीचे देखा तो अंशादि २१ । ० । ० मिले, दहाई से दो है इससे बीस के नीचे देखा तो अंशादि १४० । ० । ० मिले, सैकड़े में एक है इससे एक सौ के नीचे देखा तो अंशादि ७०० । ० । ० मिले, इन तीनों अंशादि अंकों का योग किया तो अंशादि ८६१ । ० । ० हुआ, इसमें सूर्य की ध्रुवा ३ । २३ । ५३ को युत किया तो अंशादि मध्यम सूर्य ८६४ । २३ । ५३ हुआ। इसी प्रकार से सब ग्रहों को बनाकर वीज देशान्तर का संस्कार करने से बीज देशान्तर संस्कारित मध्यम ग्रह होते हैं ॥

सङ्क्रान्तिविधिः—

शततत्वं शतार्द्धं च पादोनं क्रमशस्त्रिधा ।
द्विहीनं चाब्दगुणितम् रवेस्सङ्क्रमणं भवेत् ॥ १८ ॥

पुनर्द्विनिघ्नाब्दनगेषुचन्द्रैर्लब्धं च घट्यादिषु युक्तमेतत्।
रेखान्तरेणाङ्घ्रियुतोन पूर्वे परोऽथ मेषे खकृतिश्च देवे ॥१९॥

इति श्रीमच्छतानन्दविरचितायां भास्वत्यां पञ्चाङ्गस्पष्टा-
धिकारस्तृतीयस्समाप्तः ॥ ३ ॥

---

अन्वयः—त्रिधाऽब्दः क्रमशः शततत्वं (१२५) शतार्द्धं (५०) पादोनं (शतं) (७५) गुणितं द्विहीनं च कार्यम्। (अन्यत्र) पुनः शास्त्राब्दः नगेषुचन्द्रैः लब्धं च पूर्वघट्यादिषु युक्तम्।

सं० टी०—शततत्वं शतार्द्धं पादोनं क्रमशस्त्रिधाब्दगुणितं शताप्तं जातं वाराद्यं सप्ताधिकं सप्ततष्टं द्विहीनं घट्याद्यं भवन्ति, पुनर्द्विनिघ्नाब्द नगेषुचन्द्र लब्धमेतत्पूर्वं घट्यादिषु युतमथ ख कृतिर्देवे च युक्तं रेखापरेणांघ्रियुतोन पूर्वे परे-अर्थात् कुरुक्षेत्रात् पूर्वे देशान्तरेण युक्तं परे हीनं पुनः स्व स्व क्षेपकाङ्केन युक्तं मेषादि सङ्क्रान्तिर्भवति ॥ १८ ॥ १९ ॥

[1] "अब्दो भवघ्नः पृथगर्कहीनः खागैकलब्धेन युतः खरामैः।
लब्धाधिमासस्य तु योऽस्ति शेषस्सैकोऽर्कसङ्क्रान्ति तिथिस्तु चैत्रे" ॥

[2] "वारे रूपं तिथौ रुद्र नाड्यां पञ्चदशैव हि।
एकत्रिंशत् पले देया जायते सूर्यसङ्क्रमः" ॥ १ ॥
"अष्टाधिमासाः स्युर्नित्यं प्रोच्यन्ते फाल्गुनादयः।
सौम्य पौषौ क्षयं नित्यं भवेतामिति निश्चितम् ॥ २ ॥
क्षयो वाप्यधिमासो वा स्यादूर्जे इति निश्चितम्।
न क्षयो नाधिमासः स्यान्माघो वै परिकीर्तितः ॥ ३ ॥

---

१ उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को ११ से गुणा किया तो ८९३२ हुआ इसको दो जगह रक्खा, एक जगह १२ घटाया तो ८९२० हुआ इसमें १७० का भाग दिया तो लब्धि ५२ मिली, इसको दूसरी जगह ८९३२ में युक्त किया तो ८९८४ हुआ इसमें ३० का भाग दिया तो लब्धि अधिमास २९९ मिली शेष १४ बचे इसमें १ युत किया तो १५ हुआ, चैत्र शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार के दिन घटी २८ पल २५ पर मेष की संक्रान्ति हुई ॥

२ श्रीसंवत् १९६८ साका १८३३ में मेष संक्रान्ति वार ५ तिथि १५ घटी २८ पल २५ पर हुई है, इसमें वार्षिक क्षेपक १।११।१५।३१ को युक्त किया तो शाका १८३४ में मेष की संक्रान्ति वार ६ तिथि २६ घटी ४३ पल ५६ पर हुई इसी प्रकार से वृष आदि सब संक्रान्तियों को स्पष्ट करे ॥

पञ्चमासास्तु वैशाखादधिमासा व्यवस्थिताः ।
भवन्ति चाष्टभिर्वर्षैर्भवै ११ र्वाङ्क निशाकरैः १९ ॥ ४ ॥
तथैव फाल्गुनश्चैव आश्विनः कार्तिकोऽधिका ।
एतेष्विन्द्रैः १४१ शराङ्गै ६५र्वा कदाचिद् गोकु१९ वत्सरे ॥ ५ ॥
मार्गपौषौ क्षयौ स्यातां कदाचित् कार्तिको भवेत् ।
अधिमासस्तदा भाद्रपदो ज्ञेयश्च फाल्गुनः ॥ ६ ॥
क्षयात् प्रागधिमासः स्यान्नित्यं भाद्रपदत्रये ।
आश्विनोर्जौ सदा स्यातामाद्यो भाद्रपदः सकृत् ॥ ७ ॥
द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।
घटिकाणां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ॥ ८ ॥
[1] व्योमाग्निनागै रहितः शकेन्द्रो नवेन्दुभिर्भाजितशेषकाङ्कैः ।
त्रिरुद्रखाष्टाष्टि शराश्च विश्वे द्वि चैत्रमारभ्यसदाधिमासः ॥ ९ ॥
[2] बाणाग्निशक्रोनितशाक मध्ये सूर्याहतावेदयुतामुनीन्द्रैः ।
नवेन्दुभक्ता यदि यत्र शेषश्चैत्रादि मासेषु तदाधिमासः ॥ १० ॥
चन्द्रार्कयोस्तुबिम्बैक्यं प्रतिपद् दर्श सन्धिषु ।
अमान्तादुभयत्रापि रसनाड्योऽर्कमण्डलात् ॥ ११ ॥
तन्मण्डलाच्छशी गच्छेत्ततः सूर्यस्य संक्रमः ।
मासोऽसौ मलिनः प्रोक्तो न तद्धीनोऽधिकः स्मृतः ॥ १२ ॥
असङ्क्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद् द्विसङ्क्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्याद् तदा वर्षमध्येऽधिमास द्वयं च" ॥ १३ ॥

भा० टी० शास्त्राब्द को १२५।५८।७५ से गुणा करके उसमें १०० का भाग देने से क्रमशः वारादिक होते हैं (वार ७ से अधिक हो तो ७ से शेषित करे फिर वार में २ घटा देवे, पुनः शास्त्राब्दका २ से गुणा करके उसमें १५७ का भागदेवे जो फलमिले उसको पूर्व के लाए हुए घट्यादि में युत करे, फिर वारादिमें ०।२१।३२ को युत करके उसमें पूर्व पश्चिम के क्रमसे देशान्तर को धन ऋण करे

---

१ उदाहरण—शाका १८३४ में ८३० को घटाया तो शेष १००४ बचा इसमें १९ का भाग दिया तो शेष १६ बचा अतः आषाढ अधिमास होना चाहिये ।

२ उदाहरण—शाका १८३४ में १४३५ हीन किया तो शेष ३९९ बचा इसको १२ से गुणा किया तो ४७८८ हुआ, इसमें ४ को युत किया तो ४७९२ हुआ इसमें १९ का भाग दिया तो शेष ४ बचा अतः चैत्र से चौथा आषाढ अधिमास हुआ ।

फिर उसमें जिस २ संक्रान्ति ( नक्षत्र ) का क्षेपक युक्त करे वह संक्रान्ति ( नक्षत्र ) स्पष्ट होती है ॥ १८ । १९ ॥

उदाहरण—शाकाब्द ८१२ को १२५।५०।७५ से गुणा तो १०२१९३।१५।० हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो फल वारादि १०२१।५६।६ मिला वार १०२१ में ७ का भाग देने से शेष ६ बचा इसमें २ घटाया तो वारादि ४।५६।९ हुआ हुआ, शाकाब्द ८१२ को २ से गुणा किया तो १६२४ हुआ इसमें १५७ का भाग दिया तो फल घटी आदि १०।२१ मिला इसको पूर्व के लाए हुए वारादि के घटी आदिमें युक्त कियातो वारादि ५।६।३० हुआ, इसमें ०।२१।३२ को युत किया तो वारादि ५।२८।३ हुआ, इसमें स्वदेशका देशान्तर पल ४७ को युत किया सङ्क्रान्ति की ध्रुवा ५।२८।५० हुई, इसमें मेष राशि का क्षेपक ०।०।० को युक्त किया तो मेष संक्रान्ति वारादि ५।२८।५० हुई। ध्रुवा ५।२८।५० में वृष राशिका क्षेपक २।५७।१ को युक्त किया तो वृष राशि की संक्रान्ति वारादि १।२५।५१ हुई, इस प्रकार से ध्रुवा में बारहो राशि अट्ठाइसों नक्षत्र का क्षेपक युक्त करके स्पष्ट करे ॥१८।१९॥

शकाङ्काः ।

| १८३३ | १८५३ | १८७३ | १८९३ | १९१३ | १९३३ | १९५३ | १९७३ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | २ | ६ | ३ | १ | ५ | २ | ६ | वार |
| २८ | ३८ | ४८ | ५९ | ९ | १९ | ३० | ४० | घटी |
| ३ | २३ | ४३ | ३ | २३ | ४३ | ३ | २३ | पल |

| १९९३ | २०१३ | २०३३ | २०५३ | २०७३ | २०९३ | २११३ | २१३३ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | ५ | २ | ६ | ३ | ० | ५ | वार |
| ५० | १ | ११ | २१ | ३२ | ४२ | ५२ | ३ | घटी |
| ४३ | ३ | २३ | ४३ | ३ | २३ | ४३ | ४ | पल |

| २१५३ | २१७३ | २१९३ | २२१३ | २२३३ | २२५३ | २२७३ | २२९३ | शक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ६ | ३ | ० | ४ | २ | ६ | ३ | वार |
| १३ | २३ | ३४ | ४४ | ५४ | ५ | १५ | ३५ | घटी |
| २३ | ४३ | ३ | २३ | ४३ | ३ | २३ | ४३ | पल |

शेषांकाः ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | वार |
| १५ | ३१ | ४६ | २ | १७ | ३३ | ४८ | ४ | १९ | ३५ | घटी |
| ३१ | २ | ३३ | ४ | ३५ | ६ | ३७ | ८ | ३९ | १० | पल |

| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | शेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ० | १ | २ | ४ | वार |
| ५० | ६ | २१ | ३७ | ५२ | ८ | २३ | ३९ | ५४ | १० | घटी |
| ४१ | १२ | ४३ | १४ | ४५ | १६ | ४७ | १८ | ४९ | २० | पल |

सङ्क्रान्ति क्षेपकाङ्काः ।

| मे. | वृ. | मि. | क | सि | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | सं० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | ६ | ३ | ६ | २ | ४ | ६ | १ | २ | ४ | ५ | वार |
| ० | ५७ | २३ | ० | ३० | १० | ५५ | ४८ | १७ | ३६ | ३ | ५३ | घटी |
| ० | १ | १ | ४१ | ४ | २९ | ४८ | ३१ | ११ | ४ | १५ | २१ | पल |

नक्षत्र क्षेपकाङ्काः ।

| अ. | भ. | कृ | रो | मृ. | आ. | पु | पु | श्ले. | म. | नक्ष० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | वार |
| ० | ४१ | ३० | २४ | २३ | २४ | २९ | ३७ | ३२ | ३० | घटी |
| ० | ३४ | ० | ३५ | ३६ | २७ | ३८ | ३९ | ४० | ४ | पल |

| पू. | उ. | ह | चि | स्वा. | वि | अ. | ज्ये. | मू. | नक्ष. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ६ | ५ | ५ | ४ | ३ | ३ | २ | १ | वार |
| १९ | ५ | ४३ | १९ | १६ | ५६ | ५ | १२ | १७ | घटी |
| ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ११ | पल |

| पू. | उ. | अ. | श्र | ध. | श. | पू | उ | रे. | नक्षत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ६ | २ | ५ | ४ | ३ | २ | २ | १ | वार |
| १९ | १९ | ९ | २६ | ३० | ४० | ५१ | ११ | ४२ | घटी |
| ५० | ५१ | ३५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | पल |

भाषावार्तिक—सारणी से संक्रान्ति और नक्षत्र स्पष्ट करने की यह विधि है कि शकांङ्क और शेषाङ्क को युक्त करके उसमें अपने देश के देशान्तर को धन ऋण करने से वर्ष भर की संक्रान्ति या नक्षत्र साधने की ध्रुवा होती है, फिर जिस-जिस राशि का क्षेपक उसमें युक्त किया जायगा उस-उस राशि की संक्रान्ति होगी या जिस-जिस नक्षत्र का क्षेपक युक्त किया जायगा वह-वह नक्षत्र होगा ( संक्रान्ति नक्षत्र का क्षेपक मकरन्दसारणी से लिखा गया है )

उदाहरण—शाका १८३५ में पुस्तकीयशक १८३३ को हीन किया तो शेष २ बचा शकके नीचे वारादि ५।२८।३ शेषांक के नीचे वारादि २।३१।२ है, इन दोनों को एक जगह जोड़ने से इस वर्ष की संक्रान्ति नक्षत्र साधने का वारादि ध्रुवा ०।५९।५ हुआ, इसमें काशी का देशान्तर पल ४७ को युक्त किया तो ०।५९।५२ हुआ, इसमें सिंह राशि का क्षेपक ६।३०।४ युक्त किया तो सिंह संक्रान्ति वारादि ०।२९।५६ स्पष्ट हुई, इस ध्रुवा ०।५९।५२ में हस्त नक्षत्र के क्षेपक ५।४३।४३ को युक्त किया तो हस्त नक्षत्र वारादि ६।४३।३५ स्पष्ट हुआ ( बहुत से लोग काशी का देशान्तर ११९ मानते हैं )।

इति श्रीज्योतिषीन्द्रमुकुटमणि श्रीछत्रधरसूरि सूनुना गणक मातृप्रसादेन विरचितायां भास्वत्यां छात्रबोधिनी नाम टीकायां पञ्चाङ्गस्पष्टाधिकारस्तृतीयस्समाप्तः ॥३॥

# अथ ग्रहस्पष्टाधिकारः

## मध्यमभौम विधिः—

**भौमः स्वरघ्नाद्युगणात् कृताप्तम्**

**पुनर्द्यु वृन्दात् त्रिशताप्त हीनम् ।**

सं० टी०—स्वरघ्नात् सप्तगुणाद् द्युगणाद् दिनगणात् कृताभं चतुर्भिर्भाजितं. पुनर्द्युवृन्दादहर्गणात् त्रिशतात हीनम् ( शास्त्रशरदागत ध्रुवके युतं ) मध्यमः भौमो भवति ॥

भा० टी०—दिनगण को ७ से गुणा करके उसमें ४ का भागदेने से जो फलमिले उसफल में, दिनगण में ३०० के भागदेने से जो फल मिले उसको घटाकर फिर उसको मङ्गलकी ध्रुवा में युक्त करने से उस दिन सूर्योदय काल में मध्यम भौम होता है ।

उदाहरण—दिनगण २७ को ७ से गुणा किया तो १८९ हुआ इसमें ४ का भाग दिया तो फल ४७ । १५ । ० मिला फिर दिनगण २७ में ३०० का भाग दिया तो लब्धि ० । ५ । २४ मिली इसको ४७ । १५ । ० में घटाया तो ४७ । ६ । ३६ हुआ, फिर इसको मङ्गल की ध्रुवा ९०२ । २ । १३ में युक्त किया तो उस दिन सूर्योदय में मध्यम भौम ९४९ । ११ । ४९ हुआ ॥

### भौम दिनगण सारणीयम् । काद्यङ्कानि ( इकाई ) ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ५ | ६ | ८ | १० | १२ | १३ | १५ | अंश |
| ४४ | २९ | १४ | ५९ | ४४ | २८ | १३ | ५८ | ४३ | कला |
| ४८ | ३६ | २४ | १२ | ० | ४८ | ३६ | २४ | १२ | विकला |

### दशाद्यङ्कानि ( दहाई ) ।

| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७ | ३४ | ५२ | ६९ | ८७ | १०४ | १२२ | १३९ | १५७ | अंश |
| २८ | ५६ | २४ | ५२ | २० | ४८ | १६ | ४४ | १२ | कला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | विकला |

शताद्यङ्कानि ( सैकड़ा )।

| १०० | २०० | ३०० | दिनगण |
|---|---|---|---|
| १७४ | ३४९ | ५२४ | अंश |
| ४० | २० | ० | कला |
| ० | ० | ० | विकला |

## बुधशीघ्र विधिः-

**अष्टाष्टशेषः खखरामनिघ्नः**
**पक्षाक्षिभिस्सोमसुतस्यशीघ्रम् ॥ १ ॥**

अन्वयः-अष्टाष्ट शेषः खखरामनिघ्नः पक्षाक्षिभिः ( भक्तः ) सोमसुतस्य-शीघ्रम्, स्यादिति।

सं० टी०—अहर्गणोऽष्टाष्टशेषः ततः खखरामनिघ्नः शतत्रयेण गुणितः पक्षाक्षिभिर्द्वाविंशतिभिर्भजेत् ( शास्त्राब्दागत शीघ्रे युक्ते सति ) सोमसुतस्य बुधस्य शीघ्रं भवति ॥ १ ॥

भा० टी०—अहर्गण में ८८ का भागदेने से जो शेष बचे उसको ३०० से गुणाकर २२ का भागदेने से जो लब्धि मिले उसको शास्त्राब्द से आयेहुए शीघ्रमें युक्त करने से उस दिन सूर्योदय के समय बुधका शीघ्र होता है ॥ १ ॥

उदाहरण—दिनगण २७ में ८८ का भाग देने से शेष २७ बचा, इसको ३०० से गुणा किया, तो ८१०० हुआ फिर इसमें २२ का भागदेने से लब्धि ३६८।१०।५५ मिली, इसको शास्त्राब्द से लाए हुए शीघ्र ४१२।१५।४० में युक्त किया तो बुधका शीघ्र ७८०।२६।१५ हुआ ॥ १ ॥

बुधदिनगण सारणीयम्। एकाद्यङ्कानि ( इकाई )।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३ | २७ | ४० | ५४ | ६८ | ८१ | ९५ | १०९ | १२२ | अंश |
| ३७ | १६ | ५४ | ३२ | १० | ४९ | २७ | ५ | ४३ | कला |
| ११ | १२ | ३२ | ४३ | ५४ | ५ | १६ | २७ | ३८ | विकला |

शताद्यङ्कानि ( दहाई )।

| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३६ | २७२ | ४०९ | ५४५ | ६८१ | ८१८ | ९५४ | १०९० | २७ | अंश |
| २१ | ४३ | ५ | २७ | ४६ | १० | ३२ | ५४ | १६ | कला |
| ४९ | ३८ | २७ | १९ | ८ | ५७ | ४६ | ३५ | २४ | विकला |

शताद्यङ्कानि ( सैकड़ा )।

| १०० | २०० | ३०० | दिनगण |
|---|---|---|---|
| १६३ | ३२७ | ४९० | अंश |
| ३८ | १६ | ५४ | कला |
| १३ | २६ | ३९ | विकला |

मध्यमगुरुविधिः—

गुरुर्गुणघ्नाद्युगणाद्दशाप्तो
वेदाब्धिभिर्लब्ध विवर्जितश्च ।

अन्वयः—द्युगणाः गुणघ्ना दशाप्तः ( यल्लब्धं तत् ) ( द्युगणाः ) वेदाब्धिभिर्लब्धं ( पूर्वलब्धात् ) विवर्जितएष गुरुर्भवति ।

सं० टी०—गुणघ्नाद्युगणात् त्रिभिर्गुणिताद् दिनगणाद् दशाप्तो दशभिर्भक्तश्च पुनर्दिनगणाद् वेदाब्धिभिर्लब्धविवर्जितः ( शास्त्राब्दागतध्रुवके युक्तः ) गुरुर्भवति ॥

भा० टी०—दिनगण को ३ से गुणाकर दश का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको एक जगह रख दे, फिर दिनगण में ४४ का भाग देनेसे जो लब्धि मिले उसको पहले की लब्धि में घटा कर बृहस्पति की ध्रुवा में युक्त करने से मध्यमगुरु होता है ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ३ से गुणा किया तो ८१ हुआ इसमें १० का भाग दिया लब्धि ८ । ६ । ० मिली, फिर दिनगण २७ में ४४ का भाग देने से लब्धि ० । ३६ । ४९ मिली, इसको पूर्व की लब्धि ८ । ६ । ० में घटाया तो ७ । २९ । ११ । बचा इसको बृहस्पति की ध्रुवा ६६४ । ४९ । २० में युक्त किया, यही मध्यम गुरु ६७२ । १८ । ३१ । हुआ ॥

गुरु दिनगण सारणीयम् । एकाद्यङ्कानि ( इकाई ) ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | २ | २ | अंश |
| १६ | ३३ | ४९ | ६ | २३ | ३९ | ५६ | १३ | २९ | कला |
| ३८ | १६ | ५४ | ३२ | ११ | ४९ | २७ | ५ | ४३ | विकला |

दशाद्यङ्कानि ( दहाई ) ।

| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ५ | ८ | ११ | १३ | १६ | १९ | २२ | २४ | अंश |
| ४६ | ३२ | १९ | ५ | ५१ | ३८ | २४ | १० | ५७ | कला |
| २१ | ४३ | ५ | २७ | ४६ | ११ | ३२ | ५४ | ११ | विकला |

शताद्यङ्कानि ( सैकड़ा ) ।

| १०० | २०० | ३०० | दिनगण |
|---|---|---|---|
| २७ | ५५ | ८३ | अंश |
| ४३ | २७ | १० | कला |
| ३८ | १६ | ५५ | विकला |

शुक्र शीघ्रविधिः—

**वेदा हतोऽधोगुण भागयुक्तः**
**सितस्य शीघ्रं सहितः खशक्रैः ॥ २ ॥**

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—वेदाहतश्चतुर्भिर्गुणितो दिनगणोऽधः स्थानद्वये स्थाप्यः-एकत्र गुणाप्तः त्रिभिर्भजेल्लब्धमंशादिरन्यत्र द्वितीय स्थाने युक्तः, पुनर्दिनगणात् खशक्रैः प्राप्त फलेन साहितो युक्तः ( शाखाब्दागत ध्रुवके युक्ते सति ) सितस्य शुक्रस्य शीघ्रं भवति ॥ २ ॥

भा० टी०—दिनगण को ४ से गुणाकर दो जगह रक्खे, एक जगह ३ का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको दूसरे जगह जोड़े, फिर दिनगण में १४० का भाग देने से जो फल मिले, उसको पूर्व अङ्क में युक्त कर शुक्र के ध्रुवा में युक्त करने से शुक्र का शीघ्र होता है ॥ २ ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ४ से गुणा तो १०८ हुआ इसको दो जगह रख के एक जगह ३ का भाग किया, लब्धि ३६ । ० । ० मिली इसको दूसरी

जगह युत किया, १४४ । ० । ० हुआ, फिर दिनगण २७ में १४० का भाग दिया तो फल ० । ११ । ३४ मिला, इसको १४४ । ० । ० में युत किया तो १४४ । ११ । ३४ हुआ, इसको शुक्र के शीघ्रध्रुवा २६३ । २० । ५२ में युत किया तो शुक्र का मध्यम शीघ्रस्पष्ट ४०७ । ३२ । २६ हुआ ॥ २ ॥

शुक्र दिनगण सारणीयम् । एकाद्यङ्कानि ( इकाई ) ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५<br>२०<br>२६ | १०<br>४०<br>५१ | १६<br>१<br>१७ | २१<br>२१<br>४३ | २६<br>४२<br>९ | ३२<br>२<br>३४ | ३७<br>२३<br>० | ४२<br>४३<br>२६ | ४८<br>३<br>५१ | अंश<br>कला<br>विकला |

दशाद्यङ्कानि ( दहाई ) ।

| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५३<br>२४<br>१७ | १०६<br>४८<br>३४ | १६०<br>१२<br>५१ | २१३<br>३७<br>८ | २६७<br>१<br>२५ | ३२०<br>२५<br>४२ | ३७३<br>४९<br>५९ | ४२७<br>१४<br>१६ | ४८०<br>३८<br>३३ | अंश<br>कला<br>विकला |

शताद्यङ्कानि ( सैकड़ा ) ।

| १०० | २०० | ३०० | दिनगण |
|---|---|---|---|
| ५३४<br>२<br>५० | १०६८<br>५<br>४० | ६०२<br>८<br>३० | अंश<br>कला<br>विकला |

मध्यमशनिविधिः—

**शनिर्द्युवृन्दान्नव भाग लब्धं ध्रुवान्वितं रव्युदयस्य मध्याः ।**

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—द्युवृन्दाद् दिन समूहान्नव भाग लब्धं ध्रुवान्वितं शनिर्भवति, रव्युदयस्य सूर्योदयस्य मध्या भौमादिग्रहा भवन्त्येवम् ॥

भा० टी०—दिनगण में ९ का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको शनि की ध्रुवा में युक्त करने से सूर्योदय का मध्यमशनि होता है इस प्रकार से सूर्योदय के समय मङ्गल आदि ग्रह का मध्यम स्पष्ट होता है ॥

उदाहरण—दिनगण २७ में ९ का भाग देने से लब्धि ३।०।० मिली इसको शनि की ध्रुवा ५४।०।० में युत करने से मध्यम शनि ५७।०।० हुआ ॥

शनि दिनगण सारणीयम् । एकाद्यङ्कानि ( इकाई ) ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | अंश |
| ६ | १३ | २० | २६ | ३३ | ४० | ४६ | ५३ | ० | कला |
| ४० | २० | ० | ४० | २० | ० | ४० | २० | ० | विकला |

दशाद्यङ्कानि ( दहाई ) ।

| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | १० | अंश |
| ६ | १३ | २० | २६ | ३३ | ४० | ४६ | ५३ | ० | कला |
| ४० | २० | ० | ४० | २० | ० | ४० | २० | ० | विकला |

शताद्यङ्कानि ( सैकड़ा ) ।

| १०० | २०० | ३०० | दिनगण |
|---|---|---|---|
| ११ | २२ | ३३ | अंश |
| ६ | १३ | २० | कला |
| ४० | २० | ० | विकला |

बुधशुक्रयोर्मध्यम-भौम गुरु शनीनां शीघ्रविधिः—

दिग्घ्नाद् घनोनात् खनगांश हीनात्
त्रिभिर्भृगुज्ञार्किक कुजेज्यशीघ्रम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—दिग्घ्नाद् दशगुणाद् दिनगणाद् घनोनात् सप्तदशभिरूनात् ततः स्थानद्वये धृत्वा, एकत्र खनगांशेन विभाजितफलमन्यत्र हीनात् त्रिभिर्विभाजितं भृगुज्ञमध्यमौ-अर्कि कुजेज्य शीघ्रं बुधशुक्रयोर्मध्यमौ भवतः, भौमगुरुशनीनां शीघ्रं भवति ॥ ३ ॥

भा० टी०—दिनगण को १० से गुणा कर उसमें १७ घटाकर दो स्थान में स्थापित करके एक स्थान में ७० का भाग देने से जो फल मिले उसको दूसरे स्थान में घटाकर फिर उसमें ३ का भाग देने से जो फल मिले वह बुध-शुक्र का मध्यम और मङ्गल-बृहस्पति-शनि का शीघ्र होता है ॥ ३ ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को १० से गुणा किया तो २७० हुआ इसमें १७ घटाने से २५३ हुआ, इसको दो स्थान में स्थापित किया, एक स्थान २५३ में ७० का भाग देने से लब्धि ३।३६।५१ मिली इसको दूसरे स्थ न २५३ में घटाया तो २४९।२३।९ हुआ इसमें ३ का भागदिया तो बुध-शुक्र का मध्यम, मङ्गल-बृहस्पति-शनिका शीघ्र ८३।७।४३ हुआ ॥ ३ ॥

(यहाँ यह विशेषता है कि एकाद्यङ्क सारणी का अंक केवल नवही दिनगण तक रहेगा, दशाद्यङ्क तथा शताद्यङ्क सारणी के साथ दिनगण के एकादि अंङ्क के लिये एक हो वहाँ ३।१७।९ युक्त करे और दो के जगह ३।१७।९ का दूना ६।३४। १८ युक्त करे इसी प्रकार से तीन के जगह ३।१७।९ का तिगुना चार के जगर चौगुना इसी प्रकार से आगे भी क्रिया करे ।

बुधशुक्र मध्यम भौम गुरु शनि शीघ्र दिनगण सारणीयम् ।

एकाद्यङ्कानि ( इकाई ) ।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ४ | ७ | १० | १४ | १७ | २० | २३ | अंश |
| ० | ५९ | १६ | ३३ | ५० | ७ | २४ | ४२ | ५९ | कला |
| ० | ९ | १७ | २५ | ३३ | ४२ | ५० | ५९ | ८ | विकला |

दशाद्यङ्कानि ( दहाई ) ।

| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७ | ५४ | ८१ | १०९ | १३६ | १६३ | १९० | २१८ | २४५ | अंश |
| १६ | ३२ | ४८ | ५ | २१ | ३७ | ५३ | १० | २६ | कला |
| १७ | ३३ | ५० | ७ | २४ | ४० | ५७ | १४ | ३१ | विकला |

शताद्यङ्कानि ( सैकड़ा ) ।

| १०० | २०० | ३०० | दिनगण |
|---|---|---|---|
| २७२ | ५४५ | ८१८ | अंश |
| ४२ | २५ | ८ | कला |
| ४८ | ३६ | २४ | विकला |

भौमादीनां देशान्तरम् ।

| मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | अंश |
| १ | २ | ० | २ | ० | कला |
| २४ | ३८ | १४ | ३० | ६ | विकला |
| ऋ | ऋ | ऋ | ऋ | ऋ | ऋण |

**भौमादीनां वीजाः।**

| म. | बु. | वृ. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | अंश |
| ० | ४ | १५ | २ | ० | कला |
| ११ | १८ | १३ | ४५ | ३ | विकला |
| ध. | ध. | ध. | ध. | ध. | धन |

**भौमादीनां बीजदेशान्तरयोरन्तरम्।**

| मं. | बु. | वृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० |
| १ | १ | १४ | ० | ० |
| १३ | ४० | ५९ | ७ | ३ |
| ऋ. | ध. | ध. | ध. | ऋ. |

भाषावार्तिक—बुध शुक्र के शीघ्र में और मङ्गल-वृहस्पति-शनिके मध्यम में बीज देशान्तर को युक्त अथवा हीन ( अन्तर धन हो तो युक्त, ऋण हो तो हीन ) करने से बीज देशान्तर से संस्कारित ग्रह होते हैं।

उदाहरण—मध्यम भौम ९४९।११।४९ में बीज देशान्तर के अंतर ऋण ०।१।१३ को घटाया तो संस्कारित भौम ९४९।१०।३६ हुआ। ( ऐसे ही बुध आदिक का भी संस्कार करे )।

**बीज देशान्तर संस्कारित मध्यम-शीघ्र भौमादिग्रहाः।**

| मं. | बु.शी. | वृ. | शु.शी. | श. | बु.शु.म.-मं.गु.श.शी. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ९४९ | ७८० | ६७२ | ४०७ | ५६ | ८३ | अंश |
| १० | २८ | ३३ | ३२ | ५९ | ७ | कला |
| ३६ | १५ | ३० | ३३ | ५७ | ४३ | विकला |

पञ्चतारा स्पष्टविधि :—

**अष्टेषु षट् नन्द चतुश्शताढ्याः**
**पृथग् ग्रहाः षड्भ गतैष्य केन्द्राः।**
**षड्भादिकाः चक्रगणाद् विशोध्याः**
**शतेन लब्धाः स्फुटमत्र खण्डाः॥ ४॥**

**रुद्रा नवेन्दु द्वियमा नवेन्दु-**
**रुद्राश्च भोग्योद्भव युक्त हीनाः।**
**षड्भोन केन्द्रे खचरे ऋणं स्यात्**
**षड्भादिके चेत् धनमत्र कार्य्यम्॥ ५॥**

घनाग नाग त्रय सूर्य निघ्नाद्
दशोद्धृतं हीन धनं च मध्ये।
पृथक् स्वशीघ्रोनित केन्द्र खण्डात्
त्रिघ्नात् स्वशीघ्रोनयुतः स्फुटः स्यात् ॥ ६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—बीज देशान्तर संस्कारित भौमादिग्रहाः पृथक् स्थान द्वये स्थाप्या एकत्र, अष्टषु षट् नन्द चतुश्शताढ्याः कर्तव्याः। भौमोऽष्टशताधिकः, बुधः पञ्चशताधिकः, गुरुः षट्शताधिकः, शुक्रो नवशताधिकः, शनिः चतुश्शताधिकः कार्यः, ते षड्भ गतैष्य केन्द्रा भवन्ति, चेत् षड्भाधिकाः चक्रगणाद् विशोध्याः, (द्वादशशताधिके द्वादशशतैः अपवर्त्य शेषं गतगम्य केन्द्रो भवति) अत्र शतेन लब्धाः क्रमशः रुद्रा नवेन्दु द्वियमानवेन्दु रुद्राश्चेति खण्डा स्फुटम् लभ्यत इत्यर्थः, लब्धाङ्क तुल्यगत खण्डको धार्यः तदग्रिम भोग्य खण्डकः स्थाप्यः भोग्योद्भव युक्तहीना भुक्त भोग्य मध्ये यो यस्मिन् पतति सः तस्मिन् पातनीयः शतभागशेषं खण्डान्तरेण संगुण्य शतेन भजेद् यल्लब्धं तद् यदि गतखण्डाद्भोग्य खण्डकोऽधिकः तदा भुक्त खण्डके योज्यं, यदा भुक्तखण्डाद् भोग्य खण्डको न्यूनः तदा भुक्त खण्डके न्यूनं कर्तव्यं, यदान्तिम खण्डको लभ्यते तदान्तिम खण्डैवान्तरो भवति, यदा शतभागात् खण्डा न प्राप्यते तदा प्रथमखण्डैवान्तरो भवति। शतभाग शेषमन्तरेण संगुण्य शतेन भजेल्लब्धमंशादिकं मन्दफलं भवति। तत्फलं घनागनागत्रय सूर्यनिघ्नाद् गुणिताद् दशोद्धृतं दशभिर्विभाजितं फलं षड्भोन केन्द्रे सति मध्ये मध्यमग्रहे ऋणं स्यात्, यत्र षड् भाधिके चेद् धनं कार्यम्, कृते सति मन्दस्फुटा ग्रहा भवन्ति। मन्दस्फुटा ग्रहाः पृथक् स्थान द्वये स्थाप्या एकत्र स्वशीघ्रेणोनाः (यदा न पतति तदा द्वादशशतं संयोज्य पातयेत्) शेषंशीघ्र केन्द्रो भवति। अत्रापि मन्दफलवच्छीघ्रफलं ज्ञेयम्, यत्र शतभागेन पञ्चमखण्डको लभ्यते तत्र लब्धं पृथक् संस्थाप्य शेषं त्रिभिः संगुण्य शतेन हरेद् यल्लब्धं तत्पृथक् स्थापिते संयोज्य योजिते सति यावत्सङ्ख्यको भवति तावत्सङ्ख्यको भुक्त खण्डके प्राप्यते, त्रिगुणिताच्छेषाच्छतभागेन न किञ्चित् प्राप्यते तदा पञ्चमखण्डएव-मन्द स्पष्टग्रहाः शीघ्र फलेन संस्कृताः स्पष्टग्रहा भवन्ति। "भादिः कृतघ्ने" तिवक्ष्यमाण पद्येन—अनुमानं भवतीत्यत्रशतभागेन राश्यादिकाः स्पष्टाग्रहाभवन्ति ॥४।५।६॥

"यदान्त्य खण्ड पतितं तदाशु स एव भोग्य क्रियते फलोनः।
न प्राप्यते यत्र तदा क्रमं च तत्पूर्व खण्डोद् भवमत्र युक्तम् ॥ १ ॥

ग्रहः स्वशीघ्रोनितके यदा स्याद्दणे धने वा शर राशि सङ्ख्यः।
राशि विनाङ्कां त्रिगुणी प्रकुर्यात् तदा ततः शीघ्रफलं प्रसाध्यम्" ॥ २ ॥

भा० टी०—मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि का क्रमशः ८०० । ५०० । ६०० । ९०० । ४०० मन्दोच्च है। संस्कारित मध्यम ग्रहको दो जगह रख कर। एक जगह मन्दोच्च युक्त करने से मन्दकेन्द्र होता है, मन्दकेन्द्र ६०० से अधिक हो तो १२०० में घटाने से जो शेष बचे वह मन्दकेन्द्र होता है, और यदि १२०० से अधिक हो तो उसको १२०० से शेषित करने से शेष मन्दकेन्द्र होता है, मन्दकेन्द्र छः राशि से न्यून हो तो ऋण संज्ञक, छः राशि से अधिक हो तो धन संज्ञक कहाजाता है, ( शीघ्रकेन्द्र में भी ऐसे ही जाने ) मन्दकेन्द्र में १०० का भाग देने से क्रमशः ११।१९।२२।१९।११ खण्डाङ्क होता है ( अर्थात् एक लब्धि में ११ दो लब्धि में १९ तीन लब्धि में २२ चार लब्धि में १९ पांच लब्धि में ११) भुक्त खण्डा के आगे का अंक भोग्य खण्डा कहलाता है, भुक्त भोग्य खण्डा के अन्तर (भुक्त खण्डा से भोग्य खण्डा अधिक हो तो धन, न्यून हो तो ऋण संज्ञक अंतर होता है) उससे शेष को गुणा कर १०० का भाग देने से जो फल मिले उसको खण्डान्तर धन हो तो भुक्त खण्डा में युक्त करने से, खण्डान्तर ऋण हो तो हीन करने से मन्दफल होता है। भौमादिकों के मन्दफल का क्रमशः १७।७।८।३।१२ यह गुणक है। मन्दफल को गुणक से गुणकर १० के भाग से मिले फल को मन्दकेन्द्र छः राशि से न्यून हो तो दूसरे जगह रक्खे हुए मध्यमग्रह में घटाने से और मन्दकेन्द्र छः राशि सेअधिक हो तो दूसरे जगह रक्खे हुए मध्यमग्रह में युक्त करने से मन्दस्पष्ट होता है। मन्दस्पष्ट ग्रह दो जगह रखकर एक जगह शीघ्रोच्च घटाने से शीघ्रकेन्द्र होता है ( न घटे तो मन्दकेन्द्र में १२०० युक्त करके घटावे ) वह शीघ्रकेन्द्र छः राशि से न्यून हो तो उसी में, छः राशि से अधिक हो तो उसको १२०० में घटाकर उसमें १०० का भाग देने से जो लब्धि मिले उस लब्धि के तुल्य भुक्तखण्डा, उसके आगे का भोग्यखण्डा होता है दोनों के अन्तर से शेष को गुण १०० का भाग देने से जो फल मिले उसको भुक्त खण्डा में अन्तर ऋण हो तो घटाने से और यदि अन्तर धन हो तो युक्त कर देने से शीघ्रफल होता है। यदि १०० के भाग से ५ वाँ खण्डा मिले तो शेष को तीन से गुण १०० के भाग से मिले फल को ५ में युक्त करने से भुक्त खण्डा होता है ( आगे पूर्ववत् कर्म करने से शीघ्रफल होता है ) शीघ्रफल को केन्द्र छः राशि से न्यून हो तो दूसरे स्थान में हुए मन्द स्पष्टग्रह में घटाने से यदि छः राशि से अधिक हो तो युक्त करने से संस्कृत स्पष्टग्रह होता है ("भादिः कृतघ्नः" इस श्लोक से अनुमान होता हैं कि संस्कृत स्पष्टग्रह में १०० का भाग देने से राश्यादि स्पष्ट ग्रह होता है) ॥ ४-६ ॥

भौमादीनां मन्दोच्चचक्रम् ।

| मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| ८०० | ५०० | ६०० | ९०० | ४०० | मन्दोच्च |

भौमादीनां मन्दकेन्द्र खण्डाङ्काः ।

| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | सख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ११ | १९ | २२ | १९ | ११ | खण्डा |
| ११ | ८ | ३ | ३ | ८ | ११ | अन्तर |
| ध. | ध. | ध. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ध. ऋ. |

भौमादीनां गुणकाङ्काः ।

| मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| १७ | ७ | ८ | ३ | १२ | गुणक |

शीघ्रखण्डाङ्काः—

भौमस्य खाब्धी नगसप्त खेशा
देवेन्दु जातीन्द्रगगो नगार्थाः ।
बुधस्य भाग्नीषु कुसप्त षट्स्वराः
ततस्त्रिपञ्चाङ्गगुणा नवेन्दवः ॥ ७ ॥
गुरोर्नृपाः खाग्नि गजस्त्रयं च
षड्वह्नयो रामयमा नृपाङ्काः ।
भृगोर्द्विवेदाः कुभजाः खसूर्याः
व्योमाङ्ग नागेन्द्र नभूस्त्रिशैलाः ॥ ८ ॥

शनेर्दिशोऽब्दा कुयमा नवेन्दू
द्विभूमयो मङ्गलमब्धयश्च ।
बीजैस्सुगोप्यैरिहखेचरास्ते
सिद्धान्ततुल्यं खलु संस्कृतं स्यात् ॥ ९ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—भौमस्य खाब्धी नगसप्त खेशा देवेन्दु जातोन्द्रगगो नगार्थाः खण्डाङ्काः, बुधस्य भागतीषु कुसप्त षट् स्वराः ततस्त्रिपञ्चाङ्कगुणा नवेन्दवः खण्डाकाः, गुरोर्जीवस्य नृपा खाग्नि गजस्त्रयं च षड्वह्नयो रामयमा नृपाङ्काः खण्डाङ्काः, भृगोश्शुक्रस्य द्विवेदाः कुगजाः खसूर्याः व्योमाब्ध नागेन्द्र भभूस्त्रिशैलाः खण्डाङ्काः, शनेश्शनिश्चरस्य दिशोऽब्दा कुयमा नवेन्दू द्विभूमयो मङ्गलमब्धयश्च खण्डाङ्का भवन्ति, इह खेचरा ग्रहाः सुगोप्यैर्बीजैः संस्कृतं सिद्धान्त तुल्यं स्यात् ॥ ७–९ ॥

भा० टी०—मंगल का ४०।७७।११०।१३३।१२२।९७।५७ बुध का २७।५३। ७१।७६।५३।३६।१९ बृहस्पति का १६।३०।३८।३६।२३।१६।९ शुक्र का ४२।८१। १२०।१५०।१४८।१२७।७३ शनि का १०।१७।२१।१९।१२।८।४ खण्डाङ्क है। यहां अर्थात् करणशास्त्र में गुप्त बीज से संस्कारितग्रह सिद्धान्त के तुल्य होते हैं ॥ ७–९ ॥

भौमशीघ्रखण्डान्तरचक्रम् ।

| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ४० | ७७ | ११० | १३३ | १२२ | ९७ | ५७ | खण्डा |
| ४० | ३७ | ३३ | २३ | ११ | २५ | ४० | ५७ | अंतर |
| ध. | ध. | ध. | ध. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ध. ऋ. |

## बुधशीघ्रखण्डान्तरचक्रम् ।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | सख्या |
| ० | २७ | ५३ | ७१ | ७६ | ५३ | ३६ | १९ | खण्डा |
| २७ | २६ | १८ | ५ | २३ | १७ | १७ | १९ | अन्तर |
| ध. | ध. | ध. | ध. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ऋ | ध. ऋ. |

## गुरुशीघ्रखण्डान्तर चक्रम् ।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | संख्या |
| ० | १६ | ३० | ३८ | ३६ | २३ | १६ | ९ | खण्डा |
| १६ | १४ | ८ | २ | १३ | ७ | ७ | ९ | न्तरअ |
| ध. | ध. | ध. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ध. ऋ. |

## शुक्रशीघ्रखण्डान्तरचक्रम् ।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | संख्या |
| ० | ४२ | ८१ | १२० | १५८ | १४८ | १२७ | ७३ | खण्डा |
| ४२ | ३९ | ३९ | ३० | २ | २१ | ५४ | ७३ | अन्तर |
| ध. | ध. | ध. | ध. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ध. ऋ. |

## शनिशीघ्रखण्डान्तरचक्रम् ।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | संख्या |
| ० | १० | १७ | २१ | १९ | १२ | ८ | ४ | खण्डा |
| १० | ७ | ४ | २ | ७ | ४ | ४ | ४ | अन्तर |
| ध. | ध. | ध. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ऋ. | ध. ऋ. |

उदाहरण—मध्यम भौम ९४९।१०।३६को दो स्थानमें स्थापित किया, एक स्थान में मंगल का मन्दोच्च ८०० युत किया तो १७४९।१०।३६ हुआ, इसमें १२०० का भाग दिया तो शेष मंगल का मन्दकेन्द्र ५४९।१०।३६ हुआ, इसमें १०० का भाग दिया तो फलगत खण्डा ५ वां मिला पाचवां गत खण्डा ११ है, भोग्य खण्ड के अभाव से यही अन्तर हुआ, भाग शेष ४९।१०।३६ को अन्तर ११ से गुणा तो ५४०।५६।३६ हुआ इसमें १०० का भाग देने से फल ५।२४।३४ मिला इसको भुक्त खण्डा ११ में घटाने से मन्दफल ५।३५।२६ हुआ, इसको १७ से गुणा तो ९५।२।२२ हुआ इसमें १० का भाग देने से लब्धि ९।३०।१४ मिली इसको, केन्द्र छः राशि से न्यून है इससे दूसरे जगह रक्खे हुए मध्यम भौम ९४९।१०।३६ में घटाया तो मन्दस्पष्ट भौम ९३९।४०।२२ हुआ। मन्दस्पष्ट भौम को दो जगह रख एक जगह इस ९३९।४०।२२ में भौम के शीघ्र ८३।७।४३ को घटाया तो भौमका शीघ्रकेन्द्र ८५६।३२।३६ हुआ, इसको १२०० में घटाया तो ३४३।२७। २१ हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो फल ३ मिला तीसरा भुक्तखण्डा ११० भोग्यखण्डा १३३ इन दोनों का अन्तर धन २३ हुआ इससे शेष ४३।२७।२१ को गुणा किया तो ९९९।२९।३ हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो फल ९।५९। ४१ मिला इसको भुक्तखण्डा ११० में युत किया तो शीघ्रफल ११९।५९।५१ हुआ, शीघ्रकेन्द्र छः राशि से अधिक है इससे दूसरे जगह रक्खे हुए मन्दस्पष्ट ९३९। ४०।२२ में शीघ्रफल ११९।५९।४१ को युत किया तो स्पष्ट भौम १०५९।४०।३ हुआ। इसमें १०० का भाग देने से भौम की स्पष्ट राशि आदि १०।१८।६।२ हुई।

मध्यम बुध ८३।७।४३ को दो स्थान में स्थापित करके एक स्थान में बुध के मन्दोच्च ५०० को युत किया तो बुध का मन्दकेन्द्र ५८३।७।४३ हुआ, इसमें १०० का भाग देने से लब्धि ५ मिली तो पांचवां भुक्तखण्डा, ११ है भोग्य खण्डा के अभाव से यही अन्तर हुआ इससे शेष ८३।७।४३ को गुणा किया तो ९१४। १४ ५३ हुआ इसमें १००का भाग देने से फल ९।८।३९ मिला इसको भुक्तखण्डा १० में घटाया तो मन्दफल १।५१।२१ हुआ, इसको ७ से गुणा किया तो १२।५९।२७ हुआ इसमें १० का भाग लेने से लब्धि १।१७।५६ मिली इस लब्धि को, केन्द्र छः राशि से न्यून है अतः दूसरे स्थान में स्थापित मध्यमबुध ८३।७।४३ में घटाया तो मन्दस्पष्ट बुध ८१।४९।४७ हुआ। मन्दस्पष्ट को दो जगह रख एक जगह इस ८१।४९।४७ में बुध के शीघ्र ७८०।२८।१५ को घटाना चाहिये जो नहीं घटता इससे मन्दस्पष्ट में १२०० को युत किया तो १२८१।४९।४७ हुआ इसमें शीघ्र घटाया तो बुध का शीघ्रकेन्द्र ५०१।२१।३२ हुआ इसमें १०० का भाग देने से लब्धि ५ मिली शेष १।२१।३२ को ३ से गुणा तो ४।४।३६ हुआ इसमें १००

का भाग दिया तो फल ० मिला, इसके पूर्व फल ५ में युत करने से ५ ही रहा पाचवां भुक्त खण्डा ५३ भोग्यखण्डा ३६ है इन दोनों का अन्तर ऋण १७ हुआ. इससे शेष ४।४।३६ को गुणा किया तो ६९।१८।१२ हुआ इसमें १०० का भाग देने से फल ०।४१।३५ मिला इसको भुक्त खण्डा ५३ में घटाया तो शीघ्रफल ५२।१८।२५ हुआ, केन्द्र छः राशि से न्यून है इससे दूसरे जगह रक्खे हुए मन्दस्पष्ट ८१।४९।४७ में शीघ्रफल ५२।१८।२५ को घटाया तो स्पष्टबुध २९। ३१।२२ हुआ, इसमें १०० का भाग देने से बुध की स्पष्टराशि आदि ० । ९ । ० । ४९ हुई ।

मध्यम गुरु ६७२।३३।३० को दो जगह रख के एक जगह गुरुके मन्दोच्च ६०० को युत करने से १२७२।३३।३० हुआ इसको १२०० से शेषित किया तो वृहस्पति का मन्दकेन्द्र ७२।३३।३० हुआ, इसमें १०० का भाग दिया तो लब्धि ० मिली इससे भुक्त खण्डा का अभाव है भोग्य खंडा ११ है यही अन्तर भी है । इससे शेष ७२।३३।३० को गुणा किया तो ७९८।८।३० हुआ इसमें १०० का भाग देने से लब्धि ७।५८।५३ मिली भुक्तखण्डा के अभाव से यह मन्दफल हुआ इसको ८ से गुणा तो ६३।५१।४ हुआ इसमें १० का भाग देने से लब्धि ६।२३। ६ मिली इसको केन्द्र छः राशि से न्यून होने से दूसरे जगह रक्खे हुए मध्यम गुरु ६७२।३३।३० में घटाया तो मन्दस्पष्ट वृहस्पति ६६६।१०।२४ हुआ, मन्दस्पष्ट को दो जगह रख के एक जगह इसमें वृहस्पति के शीघ्र ८३।७।४३ को घटाया तो वृहस्पति का शीघ्रकेन्द्र ५८३।२।४१ हुआ, इसमें १०० का भाग दिआ तो लब्धि ५ मिली शेष ८३।२।४१ को ३ से गुणा तो २४९।८।३ हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो लब्धि २ मिली इसको पूर्व की लब्धि ५ में युत किया तो ७ हुआ सातवां भुक्तखण्डा ९ है भोग्यखण्डा के अभाव से यही अन्तर ऋण हुआ, इससे शेष ४९।८।३ को गुणा तो ४४२।१२।२७ हुआ इसमें १०० का भाग देने से फल ४ २५।१९ मिला इसको भुक्त खण्डा ९ में घटाया तो शीघ्रफल ४।३४।४१ हुआ, शीघ्रकेन्द्र के छः राशि से न्यून होने से दूसरे जगह रक्खे हुए मन्दस्पष्ट ६६६। १०।२४ में शीघ्रफल ४।३४।४१ को घटाया तो स्पष्टगुरु ६६१।३५।४३ हुआ, इसमें १०० का भाग देने से वृहस्पति की स्पष्टराशि आदि ६।१८।३९।२५ हुई ।

मध्यम शुक्र ८३।७।४३ को दो जगह रख के एक जगह इसमें शुक्र के मन्दोच्च ९०० को युत किया तो शुक्र का मन्द केन्द्र ९८३।७।४३ हुआ, इसको १२०० में घटाया तो २१६।५२।१७ बचा इसमें १०० का भाग दिया तो २ मिला दूसरा भुक्तखण्डा १९ भोग्यखंडा २२ इन दोनों के अन्तर धन ३ से शेष १६।५२।१७

को गुणा किया तो ५०।३६।५१ हुआ इसमें १०० का भाग देने से लब्धि ०।३०।२२ मिली इसको भुक्तखण्डा १९ में युक्त किया तो मन्दफल १९।३०।२२ हुआ, इसको ३ से गुणा किया तो ५८।३१।६ हुआ फिर इसमें १० का भाग दिया तो लब्धि ५।५१।७ मिली इसको, केन्द्र छः राशि से अधिक है इससे दूसरे जगह रक्खे हुए मध्यम शुक्र ८३।७।४३ में युत कियातो मन्दस्पष्ट शुक्र ८८।५८।५० हुआ, मन्दस्पष्ट को दो जगह रख के एक जगह इसमें शुक्र के शीघ्र ४०७।३२।३३ को घटाने के लिये १२०० मिलाया तो १२८८।५८।५० हुआ इसमें शीघ्र घटाने से शेष शुक्र का शीघ्रकेन्द्र ८८१।२६।१७ हुआ, इसको १२०० में घटाया तो ३१८।३३।४३ बचा अब इसमें १०० का भाग दिया तो लब्धि ३ मिली तीसरा भुक्तखण्डा १२० है, और भोग्यखण्डा १५० हैं, इन दोनों का अन्तर धन ३० हुआ, इससे शेष १८।३३।४३ को गुणातो ५५६।५१।३० हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो लब्धि ५।३४।७ मिली इसको भुक्तखण्डा १२० में मिलाया तो शीघ्रफल १२५।३४।७ हुआ, शीघ्रकेन्द्र छः राशि से अधिक है अतः दूसरे जगह रक्खे हुए मन्दस्पष्ट ८८।५८।५० में शीघ्रफल १२५।३४।७ को युत किया तो स्पष्टशुक्र २१४।३२।५७ हुआ, इसमें १०० का भाग देने से शुक्र की स्पष्टराशि आदि २।४।३१।४६ हुई।

मध्यम शनि ५६।५९।५७ को दो जगह रख के एक जगह इसमें शनि का मन्दोच्च ४०० को मिलाया तो शनि का मन्दकेन्द्र ४५६।५९।५७ हुआ, इसमें १०० का भाग दियातो फल ४ मिला चौथा भुक्तखण्डा १९ है और भोग्य ११ है इन दोनों का अन्तर ऋण ८ हुआ, इससे शेष ५६।५९।५७ को गुणा तो ४५५। ५९।३६ हुआ इसमें १०० का भाग देने से लब्धि ४।३३।३६ मिली इसको भुक्तखण्डा १९ में घटाने से मन्दफल १४।२६।२४ हुआ, इसको ११ से गुणातो १७३। १६।४८ हुआ इसमें १० का भाग देने से लब्धि १७।१९।४१ मिली इस लब्धिको, मन्दकेन्द्र छः राशि से न्यून है अतः दूसरे जगह में रक्खे हुए मध्यमशनि ५६।५९।५७ में घटाया तो मन्दस्पष्ट शनि ३९।४०।१६ हुआ, इस मन्दस्पष्ट शनि को दो जगह रख एक जगह इसमें शनि के शीघ्र ८३।७।४३ को घटाने लगे जो नहीं घटता इससे मन्दस्पष्ट में १२०० को युत किया तो १२३९।४०।१६ हुआ, इसमें शीघ्र ८३।७।४३ को घटाया तो शनि का शीघ्रकेन्द्र ११५६।३२।३३ हुआ, इसको १२०० में घटाया तो ४३।२७।२७ हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो लब्धि ० मिली अतः भुक्तखण्डा के अभाव से भोग्यखण्डा १० ही अन्तर धन हुआ, इससे शेष ४३।२७।२७ को गुणा तो ४३४।३४।३० हुआ इसमें १०० का भाग दिया तो फल ४।२०।४५ मिला भुक्तखंडा के अभाव से ४।२०।४५ ही

शीघ्र फल हुआ, केन्द्र छः राशि से अधिक है अतः दूसरी जगह रक्खे हुए मन्द स्पष्ट शनि ३९।४०।१६ में शीघ्रफल ४।२०।४५ को युत किया तो स्पष्ट शनि ४४।१।१ हुआ इसमें १०० का भाग देने से शनि की स्पष्ट राश्यादि ०।१।३।१२। ३७। हुई ॥ ४-९ ॥

राहु केतु स्पष्ट विधिः—

**अहर्गणं वेदहतं दशाप्तम् ध्रुवार्द्धयुक्तं भवतीह पातः ।**
**खखागनेत्रान्तरितो मुखं स्याच्चक्रार्द्धयुक्तं स्फुट राहु पुच्छः ॥१०॥**

अन्वयः—अहर्गणं वेदहतं दशाप्तं ध्रुवार्द्धयुक्तं खखागनेत्रान्तरितो मुखं इहपातो भवति । ( तच्च ) चक्रार्द्धयुक्तं स्फुट राहु पुच्छः ( भवति ) ॥

सं० टी—अहर्गणं दिनगणं वेद हतं चतुर्भिर्गुणितं दशाप्तं दशभिर्विभाजितं ध्रुवार्द्ध युक्तं ध्रुवार्द्धेन सहितं खखागनेत्रान्तरितो मुखमिह पातोराहुर्भवति, चक्रार्द्धयुक्तं स्फुट राहुपुच्छः केतुः स्यात्, शराकृतिभिर्भक्तो राश्यादिको राहुः केतुश्च भवति ॥ १० ॥

"द्युवृन्दमष्टाहतमत्रदिग्भिर्लब्धं ध्रुवं युगदलितं भचक्रात् ।
संज्ञां धत्ते राहुरयं प्रतीपान्नक्षत्रगो पातगतश्च तद्वत्" ॥ १ ॥

भा० टी०—दिनगण को ४ से गुणा कर उसमें १० का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको पूर्व के लाये हुए ध्रुवा में युक्त करके उसको २७०० में घटाने से राहु होता है, उसमें २२५ का भाग देने से राहु की राशि आदिक होती है। राहु में चक्रार्द्ध १३५० को युक्त करने से केतु होता है। उसमें २२५ का भाग देने से केतु की स्पष्टराशि आदि होती हैं ॥ १० ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ४ से गुणा किया तो १०८ हुआ इसमें १० का भाग देने से लब्धि १०।४८।० मिली, इसको राहु की ध्रुवा ५१३०।२५।३६ के आधे २५६५।१२।४९ में युत किया तो २५७६।०।४९ हुआ इसको २७०० में घटाया तो राहु १२३।५९।११ हुआ, इसमें २२५ का भाग देने से राहु की राशि आदि ०।१६।३९।४७ हुई, राहु १२३।५९।११ में चक्रार्द्ध १३५० को युक्त किया तो केतु १४७३।५९।११ हुआ, इसमें भी २२५ का भाग देने से केतु की स्पष्ट राशि आदि ६।१६।३९।४७ हुई ॥ १० ॥

राहु दिनगण सारणीयम् । एकाद्यङ्कानि ( इकाई )

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | अंश |
| २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | कला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | विकला |

दशाद्यङ्कानि ( दहाई )।

| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | दिनगण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४<br>०<br>० | ८<br>०<br>० | १२<br>०<br>० | १६<br>०<br>० | २०<br>०<br>० | २४<br>०<br>० | २८<br>०<br>० | ३२<br>०<br>० | ३६<br>०<br>० | अंश<br>कला<br>विकला |

शताद्यङ्कानि ( सैकड़ा )।

| १०० | २०० | ३०० | दिनगण |
|---|---|---|---|
| ४०<br>०<br>० | ८०<br>०<br>० | १२०<br>०<br>० | अंश<br>कला<br>विकला |

ग्रहाणांनक्षत्रगताद्राशिगतकरणराशिगतान्नक्षत्रगतकरण विधिः—

**भादिः कृतघ्नोऽङ्कहृतो ग्रहस्तु राश्यादिरङ्कैर्गुणितः कृताप्तः।**
**भादिर्भवेद् भादिषु राशिहारः शराकृती राशिमुखे शतञ्च ॥११॥**

अन्वयः—सुगमम्।

सं० टी०—भादिर्नक्षत्रादिः कृतघ्नोऽङ्कहृतो नवभिर्विभाजितो राश्यादिको भवेत्, एवं राश्यादिको ग्रहोऽङ्कैर्नवभिर्गुणितः कृताप्तश्चतुर्भिर्विभाजितो भादिर्नक्षत्रादि गतग्रहो भवेत् तु भादिषु नक्षत्रादिषु शराकृती राशिहारः, राशिमुखे शतञ्च—अर्थात् नक्षत्रादिषु शरनेत्रकरैर्विभाजिते राश्यादिको भवति राश्यादिषु शतेन विभाजिते राश्यादिको भवतीति ॥ ११ ॥

भा० टी०—नक्षत्रगत ग्रह की स्पष्टी को ४ से गुणा करके उसमें नव का भाग देने से फल राशिगत ग्रह होता है, और राशिगत ग्रह को ९ से गुण के उसमें ४ का भाग देने से फल नक्षत्रगत ग्रह होता है। नक्षत्रगत ग्रह में २२५ का भाग देने से और राशिगत ग्रह में १०८ का भाग देने से ग्रहों की स्पष्ट राशि होती है ( पूर्व की स्पष्टी से कुछ न्यूनाधिक अवश्यमेव होता है ) ॥ ११ ॥

उदाहरण—स्फुट सूर्य २००।४४।४५ को ४ से गुणा किया तो ८०२।५९।० हुआ इसमें ९ का भाग देने से ८९।१३।१३।२० हुआ फिर इसमें १०० का भाग देने से लब्धि स्पष्ट सूर्य की राशि आदि ०।२६।४९।५६।८ हुई, स्फुटभौम १०५९।४०।३ को ९ से गुणा किया तो ९५३७।०।२७ हुआ इसमें ४ को भाग देने से लब्धि २३८४।१५।७ मिली इसमें फिर २२५ का भाग दिया तो लब्धि स्पष्ट

भौम की राशि आदि १०।१७।५६।० हुई, ऐसे ही बुध आदि को भी स्पष्ट करे ॥ ११ ॥

मध्यम गत:—

**रवेः स्वरा खं नवतिः खमिन्दोः**
**केन्द्रे शतं भूस्तमसः खसिद्धौ ।**
**पादोनदृग्राम घनौ खमेघौ**
**त्र्याब्दौ खसप्तावनिजादिकानाम् ॥१२॥**[1]

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—रवेः सूर्यस्य स्वराखं, इन्दोश्चन्द्रस्य नवतिः खं, केन्द्रे शतं भूः, तमसः राहोः खसिद्धौ, अवनिजादिकानां भौमादीनां पादोनदृग्, रामघनौ, खमेघौ त्र्याब्दौ खसप्तौ मध्यमा भुक्तिरस्ति ॥ १२ ॥

भा० टी०—सूर्य की ७।०, चन्द्रमा की १०।०, चन्द्रकेन्द्र की १००।१, राहु की ०।२४, मंगल की १।४५, बुध की ३।१७, गुरु की ०।१७, शुक्र की ३।१७, शनि की ०।७, मध्यम गति है ॥ १२ ॥

मध्यम भुक्ति चक्रम् ।

| सू. | चं. | चं.के. | रा. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | १० | १०० | ० | १ | ३ | ० | ३ | ० |
| ० | ० | १ | २४ | ४५ | १७ | १७ | १७ | ७ |

शीघ्र गति :—

**त्रयोघना विश्वइभानलौ च त्रयोघनाः पञ्च नखा गुणाब्दाः ।**
**कुजादि शीघ्रस्य च भुक्तयः स्युरुक्ताः स्मृतीशैर्गणितप्रवीणैः ॥१३॥**

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—स्मृतीशैर्गणित प्रवीणैः कुजादि मङ्गलादिग्रहाणां शीघ्रस्य भुक्तयश्च त्रयोघना, विश्वइभानलौ, त्रयोघना, पञ्चनखा, गुणाब्दाः स्युरित्युक्ताः कथिताः ॥ १३ ॥

"शनैश्चराचार्य महासुतानां शैघ्रीगतिः स्यात्त्रिघनाकलाद्याः
विश्वाग्निरामाशशिजस्य शैघ्री शुक्रस्य शैघ्री शरपूर्णदस्रा" १॥

१. घन, मेघ, अब्द ये तीनों १७ के पर्यायवाची हैं ।

भा० टी०—धर्मशास्त्र के ज्ञाता गणित में कुशल ऐसे विद्वान् लोगों ने मङ्गल की ३।१७, बुध की १३।३८, वृहस्पति की ३।१७, शुक्र की ५।२० और शनिश्चर की ३।१७ शीघ्र गति कहा है ॥ १३ ॥

शीघ्र गति चक्रम्।

| म. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|
| ३ | १३ | ३ | ५ | ३ |
| १७ | ३८ | १७ | २० | १७ |

मन्द गति विधिः—

घनागनागत्रिरविघ्न भुक्ति-
भोंग्याहताया खशताप्तलब्धम्।
ऊने तु खण्डा सहितान्यथोना
मन्द-स्फुटाभुक्तिरियं कुजादेः ॥१४॥

सं० टी०—भौमादि भुक्तिः घनागनागत्रिरविघ्न भोग्यहताया खशताप्तलब्धं तु खण्डा ऊने ऋणे सहिता, अन्यथा ऊना इयं कुजादेर्मन्द भुक्तिः स्फुटा ।।१४।।

भा० टी०—भौमादि ग्रहों के मध्यमगति को क्रमशः १७।७।८।३।१२ से गुणा करके फिर मन्दखण्डा के अन्तरके से गुणा कर उसमें १००० के भाग से जो लब्धि मिले उसको खण्डा का अन्तर ऋण हो तो मध्यमगति में युत करने से और खण्डा का अन्तर धन हो तो मध्यमगति में हीन करने से मन्दस्पष्ट गति होती है ॥ १४ ॥

उदाहरण—मङ्गल की मध्यमा भुक्ति १।४५ को १७ से गुणा किया तो २९। ४५ हुई, ऐसे ही बुध आदि की गति गुणक से गुणने पर बुध की २२।५९, वृहस्पति की २।१६, शुक्र की ९।५१, शनैश्चर की १।२४ हुई। मंगल की मध्यमा भुक्ति गुणक से गुणने पर २९।४५ हुई है, इसको मन्द खन्डान्तर ऋण ११ से गुणा किया तो ३२७।१५ हुआ इसमें १००० का भाग देने से लब्धि ०।१० मिली इसको, खण्डान्तर ऋण है अतः मध्यमगति १।४५ में युत किया तो मंगल की मन्दगति २।४।३८ हुई। ऐसे ही बुध की ३।२२।१० वृहस्पति की ०।१५।२०, शुक्र की ३।१५।१४ और शनिश्चर की ०।७।५० मन्द स्पष्ट गति हुई॥ १४ ॥

भौमादीनां मन्दस्पष्टगतिः ।

| ११ | ८ | ३ | ३ | ८ | ११ | मन्दखण्डान्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ | २ | भौम |
| २५ | ३० | ३९ | ५० | ५९ | ४ | |
| २१ | ४३ | ३८ | २१ | १६ | ३८ | |
| ५४ | १२ | ४२ | १८ | ४८ | ६ | |
| ३ | ३ | ३ | [illegible] | ३ | ३ | बुध |
| १ | ५ | १२ | २१ | २८ | ३२ | |
| ४३ | ५८ | ५१ | ८ | १ | १० | |
| ५१ | ४ | ४६ | १३ | ५५ | ८ | |
| ३६ | ४८ | ४८ | १२ | १२ | २४ | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | गुरु |
| १५ | १५ | १६ | १७ | १८ | १८ | |
| ३० | ५४ | ३५ | २४ | ५ | २९ | |
| २४ | ४३ | ३१ | २८ | १६ | ३६ | |
| ० | १२ | १२ | ४८ | ४८ | ० | |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | शुक्र |
| १० | १२ | १५ | १८ | २१ | २३ | |
| २३ | १६ | १३ | ४६ | ४३ | ३० | |
| ५६ | १९ | ३७ | २२ | ४० | ३ | |
| २४ | १२ | १२ | ४८ | ४८ | ३६ | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | शनि |
| ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | |
| ४ | १९ | ४४ | १५ | ४० | ५५ | |
| ३३ | ४० | ५२ | ७ | १९ | २६ | |
| ३६ | ४८ | ४८ | १२ | १२ | २४ | |

स्पष्ट गति विधिः—

**मन्दस्फुटा शीघ्रगतौ विशोध्या**
**प्राग्वत् कृता भोग्यगुणाच्छताप्ता ।**
**वह्वल्प भोग्यं स्वमृणं यथा स्याद्**
**वक्रागतिस्याद् विपरीतशुद्धा ॥ १५॥**

अन्वयः—शीघ्रगतौ मन्दस्फुटा विशोध्या प्राग्वत् भोग्य गुणाच्छताप्ता वह्वल्प भोग्यं स्वमृणं यथा स्याद् वक्रागतिः विपरीत शुद्धा स्यात् ॥

सं० टी०—शीघ्रगतौ मन्दस्फुटा विशोध्या शीघ्रकेन्द्र गतिर्भवति शीघ्र केन्द्र गतौ प्रागवत् पूर्ववद् भोग्य गुणाच्छताप्ता वह्नल्प भोग्यं स्वमृणं स्यात् शीघ्रकेन्द्र खण्डान्तरं धनं चेत्तदा प्राप्त फलं मन्दगतौ धनं, ऋणं चेदृणं कर्तव्यम्। यदा वक्र गतिः स्यात् तदाविपरीत शोध्या वक्रीग्रहपरं घटीसम्भवं ऋणं कार्यं पूर्वं घटी सम्भवं धनं कार्यं गतिः स्यात् ( स्पष्टभुक्तिरंशादिकाष्टादशभिर्गुणिता कलादिका भवति, नक्षत्रानयनार्थं राश्यादिकमष्टादशभिस्सङ्गुण्याष्टशतैर्हरेल्लब्धमश्विन्यादि नक्षत्राणि भवन्ति शेषं शतद्वयेन हरेल्लब्धनक्षत्र गत पादाः शेषं गतगम्यं प्रकृत्य त्रिंशांशकराशेः कलादिकया स्फुट भुक्त्या भजेल्लब्धानि गतगम्य दिनसमूहान्यवशिष्टं षष्ट्यासङ्गुण्य तथैवाप्ता घटिकादिका भवन्ति )॥ १५॥

*"इष्टनाडीपरापूर्वा भुक्तिघ्ना षष्ठिभाजिता।
लब्धांशादि धनोनं स्युर्ग्रहास्तत्कालिकाः स्फुटाः" ॥ १॥

भा०टी०—स्पष्ट मन्द गति को शीघ्र में घटाने से शीघ्रकेन्द्र गति होती है, इस शीघ्रकेन्द्र गति को खण्डा के अन्तर से गुणाकरके १०० का भाग देने से जो फल मिले उसको अंतर धन हो तो मन्द भुक्ति में युक्त करने से ऋण हो तो हीन करने से स्पष्टगति होती है। वक्री ग्रह हो तो फल में ही मन्द गति को घटाने से स्पष्ट गति होती है ( शीघ्र में ५, ६, ७, यह खण्ड मिलने पर वक्री पर ध्यान रक्खे और जहां शीघ्रकेन्द्र के पंचमादि राशि हो वहां केन्द्रगति को ३ से गुणा करके तब उसे शीघ्र खंडान्तर से गुणा करके भाजक का भाग देवे )॥ १५॥

उदाहरण—मंगल की शीघ्रगति ३।१७ में मन्दस्पष्ट गति २।४।२८ को घटाया तो मङ्गल की शीघ्र केन्द्रगति १।१२।२२ हुई, इसको खण्डा के अन्तर ऋण २३ से गुणा किया तो २७।४४।२६ हुआ, इसमें १०० का भाग देने से शीघ्रफल ०।१६।२९ को खण्डा के अन्तर धन होने से मन्दगति २।४।२८ में मिलाया तो मङ्गल की

---

* श्रीसंवत् १९६८ शाका १८३३ वैशाख सुदी १३ वार बृहस्पति के सूर्योदय से इष्ट ५।११ पर स्पष्ट करना है, इष्ट ५।११ को सूर्य की गति ५८।१४ से गुणा करके उसमें ६० का भाग देने से फल ०।५।१।१९ मिला, इसको स्पष्ट सूर्य ०।२६।५६।० में युत कियातो तात्कालिक सूर्य ०।२६।५६।५।१९ हुआ॥

स्पष्टगति २।२१।१७ हुई। बुध की शीघ्रकेन्द्र गति १०।५।५० गुरु की ३।१।३० शुक्रकी २।४।४६ शनि की ३।९।२० शीघ्रकेन्द्र गति हुई। बुध का शीघ्रफल १।४२।५९ गुरु का ०।१६।२० शुक्र का ०।३७।२६ शनि का ०।१८।५६ शीघ्रफल हुआ। बुध की स्पष्टगति १।३६।४८ गुरु की ०।३३।३०। शुक्र की २।५२।४० शनि की ०।२६।३६ हुई ॥ १५ ॥

भौमादीनां शीघ्रकेन्द्रगतिः ।

| ११ घ. | ८ घ. | ३ घ | ३ ऋ. | ८ऋ. | ११ऋ. | मन्दखण्डान्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | भौम |
| ५१ | ४६ | ३७ | २६ | १७ | १२ | |
| ३८ | १६ | २१ | ३८ | ४३ | २१ | |
| ६ | ४८ | १८ | ४२ | [illegible] | ५४ | |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | बुध |
| ३६ | ३२ | २५ | १६ | ९ | ५ | |
| १० | १ | ८ | ५१ | ५८ | ४९ | |
| ८ | ५५ | १३ | ४६ | ४ | ५१ | |
| २४ | १२ | १२ | ४८ | ४८ | ३६ | |
| ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | बृहस्पति |
| १ | १ | ० | ५९ | ५८ | ५८ | |
| २९ | ५ | २४ | ३५ | ५४ | ३० | |
| ३६ | १६ | २८ | ३१ | ४३ | २४ | |
| ० | ४८ | ४८ | १२ | १२ | ० | |
| २ | २ | २ | २ | १ | १ | शुक्र |
| ९ | ७ | ४ | १ | ५८ | ५६ | |
| ३० | ४३ | ४६ | १३ | १६ | ३९ | |
| ३ | ४० | २२ | ३० | १९ | ५६ | |
| ३६ | ४८ | ४८ | १२ | १२ | २४ | |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | शनि |
| १० | १० | १० | ९ | ९ | ९ | |
| ५५ | ४० | १५ | ४४ | १९ | ४ | |
| २६ | १९ | ७ | ५२ | ४० | ३३ | |
| २४ | ११ | १२ | ४८ | ४८ | ३६ | |

## भौमस्पष्टगतिः ।

| मंद खंडांतर | ४० घ. | २७ घ | २३ घ. | २३ घ. | ११ ऋ. | २५ ऋ. | ४० ऋ. | ५७ ऋ | शीघ्रखंडांतर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ० | १ | |
| | १० | ६ | २ | ५१ | १३ | १ | ४७ | ४५ | |
| | १ | ४० | १२ | २ | ४५ | ३८ | ३५ | ३१ | |
| ११ | ८ | ६ | १६ | २७ | ७ | २० | ४९ | ५१ | गति |
| | २४ | ४१ | २२ | ४६ | ३२ | ३० | १२ | ३ | |
| घ. | ० | १२ | ४८ | ४८ | २४ | ० | ० | ३६ | |
| | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ० | १ | |
| | १३ | १० | ५ | ५५ | १९ | ११ | ३६ | ३१ | |
| | १२ | २ | ४७ | ९ | १ | ० | ४८ | १ | |
| ८ | ५५ | ३६ | ३२ | ४७ | ४५ | ३६ | ५७ | ७ | गति |
| | १२ | ५४ | ३८ | २ | ७ | ० | ३६ | ४० | |
| घ. | ० | ० | २४ | २४ | १२ | ० | ० | ४८ | |
| | २ | २ | २ | २ | १ | ० | ० | ० | |
| | १८ | १५ | ११ | २ | २८ | २६ | १६ | ६ | |
| | ३५ | ३९ | ४६ | २ | ५६ | ५५ | १० | ३९ | |
| ३ | १३ | ५८ | २० | ११ | ९ | ४२ | ५१ | ५५ | गति |
| | १२ | ५१ | ४४ | ५६ | ५ | ३० | ३६ | २२ | |
| घ. | ० | ३६ | २४ | २४ | ४५ | ० | ० | १८ | |
| | २ | २ | २ | २ | १ | ० | ० | ० | |
| | २५ | २२ | १८ | १० | ४० | ४१ | ६ | ३७ | |
| | ० | २४ | ५५ | १७ | ५० | २१ | ३२ | ४८ | |
| ३ | ४६ | ४९ | ४ | ० | २ | १६ | ५२ | २८ | गति |
| | ४८ | ८ | १५ | ३ | ३४ | ३० | ३० | ४३ | |
| ऋ. | ० | २४ | ३६ | ३६ | ४८ | ० | ० | १२ | |
| | २ | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ० | |
| | ३० | २८ | २४ | १७ | ५० | ० | २६ | १३ | |
| | २२ | १ | ५५ | ९ | ४३ | ५९ | ० | ३७ | |
| ८ | ४ | ५० | ३९ | २० | ५० | २४ | ५७ | १६ | गति |
| | ४८ | २ | २१ | ९ | ५२ | ० | ३६ | १९ | |
| ऋ. | ० | २४ | ३६ | ३६ | ४८ | ० | ० | १२ | |
| | २ | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ० | |
| | ३३ | ३१ | २८ | २१ | ५६ | १० | ३७ | ० | |
| | ३४ | २४ | ३० | १६ | ४० | २१ | ५७ | ५३ | |
| ११ | ५१ | ३६ | १९ | ४४ | २९ | ४० | ४९ | २७ | गति |
| | ३६ | १० | ४ | १३ | २७ | ३० | १२ | ३ | |
| ऋ. | ० | ४८ | ४८ | १२ | ३६ | ० | ० | ३६ | |

## बुधस्पष्टगतिः ।

| मंदखंडांतर | २७ घ. | २६ घ. | १८ घ. | ५ घ. | २३ ऋ. | १७ ऋ. | १७ ऋ. | १९ ऋ. | शीघ्र खण्डान्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ५ | ५ | ४ | ३ | ० | २ | २ | ३ | |
| | ५३ | ४७ | ५६ | ३३ | ३५ | २२ | २२ | ० | |
| ११ | ३५ | १४ | २० | ३८ | ३० | ३६ | ३६ | ५१ | |
| | ४७ | ६ | २९ | २२ | ४३ | ४१ | ४१ | ७ | गति |
| | ५२ | ३७ | १० | १ | ३५ | ४ | ४ | ११ | |
| घ. | ४ | २६ | ५५ | १२ | ५२ | २ | २ | ५६ | |
| | ४८ | २४ | २ | ० | ४८ | २४ | २४ | ४८ | |
| | ५ | ५ | ४ | ३ | ० | २ | २ | २ | |
| | ५६ | ५० | ५९ | ३६ | ४१ | १६ | १६ | ५४ | |
| ८ | ३६ | १७ | ४४ | ४० | ३० | ३२ | ३२ | १७ | |
| | ५९ | ४५ | १ | १० | २ | ५ | ५ | २७ | गति |
| | ५४ | ५७ | ३२ | ३३ | १८ | ५७ | ५७ | १५ | |
| घ. | १४ | ७ | ९ | ३६ | १४ | ७ | ५ | ५० | |
| | २४ | १२ | ३६ | ० | २४ | १२ | १२ | २४ | |
| | ६ | ५ | ५ | ३ | ० | २ | २ | २ | |
| | १ | ५५ | ५ | ४४ | ४९ | ५ | ५ | ३७ | |
| ३ | ३८ | २३ | २३ | ७ | ४ | ५७ | ५७ | २७ | |
| | ५९ | ५५ | १५ | ११ | ५३ | २४ | २४ | ५३ | गति |
| | ५७ | १ | ३४ | २७ | २१ | ४ | ४ | ११ | |
| घ. | ५० | ५५ | ३३ | ३६ | ५० | ५५ | ५५ | २६ | |
| | २४ | १२ | ३६ | ० | २४ | १२ | १२ | २४ | |
| | ६ | ६ | ५ | ३ | १ | १ | १ | २ | |
| | ७ | १ | १२ | ५१ | ५९ | ५३ | ५३ | ३० | |
| ३ | ४१ | ३१ | १० | ५८ | १५ | २७ | २७ | २८ | |
| | २४ | ३२ | २० | ४८ | ३० | ४६ | ४६ | २९ | गति |
| | २ | ५८ | २५ | ३२ | ३८ | ५८ | ५८ | ४० | |
| ऋ. | ९ | ३३ | २६ | २४ | ९ | ४ | ४ | ३३ | |
| | ३६ | ३६ | २४ | ० | ३६ | ४८ | ४८ | ३६ | |
| | ६ | ६ | ५ | ३ | १ | १ | १ | १ | |
| | ११ | ६ | १७ | ५८ | ७ | ४३ | ४३ | १९ | |
| ५ | ३१ | ३७ | ४९ | ३१ | ४४ | ३ | ३ | २ | |
| | २४ | २५ | ३४ | ४९ | २१ | ६ | ६ | ५९ | गति |
| | ५ | १४ | २७ | २६ | ४१ | २ | २ | ८ | |
| ऋ. | ४५ | ५२ | ५० | २४ | ४५ | ५२ | ५२ | ९ | |
| | ३६ | ४८ | २४ | ० | ३६ | ४८ | ४८ | ३६ | |

| मंदखंडांतर | २७ घ. | २६ घ. | १८ घ. | ५ घ. | २३ ऋ. | १७ ऋ. | १७ ऋ. | १९ ऋ. | शीघ्र खण्डा-अन्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ६ | ६ | ५ | ४ | १ | १ | १ | २ | |
| | १५ | ९ | २१ | २ | १२ | ३६ | ३६ | १३ | |
| ११ | ४५ | ४१ | १३ | २७ | ४९ | ४८ | ४८ | ९ | |
| | ७ | ६ | ६ | ३७ | ४० | १७ | १७ | १६ | गति |
| | ५९ | १३ | ५३ | ५८ | १९ | १८ | १८ | ४८ | |
| घ. | ३१ | ३३ | १६ | ४८ | ५५ | ५७ | ५७ | ४३ | |
| | १२ | ३६ | ४८ | ० | १२ | ० | ० | १२ | |

## गुरुस्पष्टगतिः ।

| मंदखंडांतर | १६घ. | १४घ. | ८घ. | २ऋ. | १३ऋ | ७ऋ. | ७ऋ. | ९ऋ. | शीघ्र खण्डान्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | ४४ | ४० | ३० | १३ | ८ | २२ | २२ | ३३ | |
| ११ | ३२ | ५४ | १ | ४ | ५ | ३६ | ३६ | २९ | |
| | ४४ | ५६ | ३४ | ३६ | १४ | २४ | २४ | ४७ | गति |
| घ. | ९ | ३८ | ४ | २८ | ५२ | ५७ | ५७ | ३१ | |
| | ३६ | २४ | ४८ | ४८ | ४८ | ३६ | ३६ | १२ | |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | ४४ | ४१ | ३० | १२ | ११ | २२ | २२ | ३२ | |
| ८ | ५३ | १५ | २५ | १७ | १५ | ६ | ६ | ५९ | |
| | ९ | ५१ | ५२ | २४ | ४ | ५९ | ५९ | ५४ | गति |
| | ५३ | ३३ | ४० | ५१ | १९ | १९ | १९ | २० | |
| घ. | १६ | ७ | ४८ | ५० | १२ | ४० | ४० | १२ | |
| | ४८ | १२ | ० | २४ | ० | ४८ | ४८ | ३६ | |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | ४५ | ४१ | ३१ | १२ | २१ | २१ | २१ | ३२ | |
| ३ | २७ | ५० | १ | ५९ | १४ | १४ | १४ | ७ | |
| | २६ | ५६ | २८ | १ | ३७ | ३७ | ३७ | ५ | गति |
| | १२ | ४९ | ४२ | ४९ | २ | २ | २ | २२ | |
| घ. | २८ | ५५ | १४ | २६ | ५२ | ५२ | ५२ | ३ | |
| | ४८ | १२ | २४ | २४ | ४८ | ४८ | ४८ | ३६ | |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | ४६ | ४२ | ३१ | १३ | ५ | २० | २० | ३१ | |
| ३ | ८ | ३३ | ४६ | ४८ | ५६ | १९ | १९ | ४ | |
| | ३३ | ३ | ३१ | ५८ | २० | ३२ | ३२ | ५४ | गति |
| | ४७ | १० | १७ | १० | १५ | ४५ | ४५ | ३७ | |
| ऋ. | ३१ | ४ | ४५ | ३३ | २१ | ७ | ७ | ६ | |
| | १२ | ४८ | ३६ | ३६ | ३६ | १२ | १२ | २४ | |

| म.दखंडतर | १६ध. | १४ध. | ८ध. | २.ऋ | १३ऋ | ७ऋ. | ७ऋ. | ५ऋ. | शी.खं. अन्त. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | ४७ | ४३ | ३२ | १४ | ५ | १९ | ११ | ३० | |
| ८ | ४२ | ८ | २४ | ३० | १० | २९ | २९ | १३ | |
| | ५० | ८ | ३ | ३५ | १४ | ० | ० | ५ | गति |
| | ६ | २६ | २७ | ८ | ० | ४० | ४० | ३१ | |
| ऋ. | ४३ | ५२ | २१ | ९ | ५७ | ११ | १९ | ५० | |
| | १२ | ४८ | ३६ | ३६ | ३६ | १२ | १२ | २४ | |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ११ | ४७ | ४३ | ३२ | १५ | ४ | १८ | १८ | २१ | |
| | ३ | २१ | ४६ | ५१ | ४२ | ५९ | ५९ | ४१ | गति |
| | १७ | ४ | २६ | २३ | ४६ | ३७ | ३७ | १४ | |
| ऋ. | १४ | ४५ | ३७ | ३१ | ३१ | ८ | ८ | ३४ | |
| | २४ | ३६ | १२ | १२ | १२ | २४ | २४ | ४८ | |

शुक्रस्पष्टगतिः ।

| मंदखडांतर | २४ध. | १९ध. | ३९ध. | ३०ध. | २ऋ. | २१ऋ. | ५४ऋ. | ७३ऋ. | शीघ्रखण्डान्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | १ | ० | १ | |
| | ४ | ० | ० | ४१ | ७ | ४८ | १९ | ३१ | |
| ११ | ५१ | ५४ | ५४ | २० | ४५ | ५४ | १७ | ६ | |
| | २१ | १५ | १५ | ५७ | १२ | ४८ | ३३ | २९ | गति |
| | ५४ | ४८ | ४८ | ० | १९ | ७ | २५ | २९ | |
| ध. | ७ | १४ | १४ | २८ | ४० | ५५ | ५५ | २ | |
| | १२ | २४ | २४ | ४८ | ४८ | १२ | १२ | २४ | |
| | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | १ | ० | १ | |
| | ५ | २ | २ | ५० | ९ | ५१ | १४ | २७ | |
| ८ | ५४ | ५ | ५ | ३५ | ४२ | ४८ | ३८ | २६ | |
| | ४१ | ८ | ८ | २५ | २ | १२ | ५० | ४८ | गति |
| | ४४ | १७ | १७ | २६ | १५ | १ | २९ | २१ | |
| ध. | ९ | २५ | २५ | ६ | ० | ४५ | ५१ | ७ | |
| | ३६ | १२ | १२ | ० | २४ | ३६ | ३६ | १२ | |
| | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | १ | ० | १ | |
| | ७ | ३ | ३ | ५२ | १२ | ५६ | ६ | १८ | |
| ३ | ३८ | ५२ | ५२ | ३९ | ४३ | ३७ | ५४ | १ | |
| | १ | १८ | १८ | ३२ | ५३ | १२ | १८ | ३३ | गति |
| | २६ | २१ | २१ | २ | ३२ | २ | ५६ | ७ | |
| ध. | ५७ | ११ | ३१ | २४ | १८ | ९ | ९ | ५५ | |
| | ३६ | १२ | १२ | ० | ३४ | ३६ | ३६ | १२ | |

| मंद खंडांतर | ४२ घ. | ३९ घ | ३९ घ. | २० घ. | २ऋ. | २१ऋ. | ५४ऋ. | ७६ऋ. | शीघ्रख. अन्त |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | २ | ० | १ | |
| | ९ | ६ | ६ | ५५ | १६ | २ | २ | १ | |
| | ४१ | ३ | ३ | ८ | २० | २४ | २३ | ४२ | |
| ३ | १८ | ५ | ५ | २८ | ४५ | ९ | ६ | ५० | गति |
| | १ | ३० | ३० | ५७ | २७ | ३३ | ५६ | ५२ | |
| ऋ. | २६ | २८ | २८ | ३६ | २१ | ५० | ९ | ४ | |
| | २४ | ४८ | ४८ | ० | ३६ | २४ | ३६ | ४८ | |
| | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | २ | ० | ० | |
| | १२ | ७ | ७ | ५७ | १९ | ५ | १० | ४७ | |
| | १८ | ५१ | ५१ | १२ | २१ | ५१ | ७ | १७ | |
| ८ | ८ | १४ | १४ | ३४ | ४५ | ५९ | १९ | १५ | गति |
| | ३ | ४१ | ४१ | २५ | १२ | ५४ | ३५ | ३८ | |
| ऋ. | ५० | १६ | १६ | ३६ | ५७ | १४ | ४५ | ५२ | |
| | २४ | ४८ | ४८ | ० | ३६ | २४ | ३६ | ४८ | |
| | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | २ | ० | ० | |
| | १२ | ८ | ८ | ५८ | २२ | १० | १४ | ४८ | |
| | २४ | ५६ | ५६ | २७ | १० | ६ | ४६ | ३६ | |
| ११ | ५० | ८ | ८ | २ | १५ | २३ | २१ | ५४ | गति |
| | ३ | ११ | ११ | ३१ | ४० | ५५ | २६ | ३० | |
| ऋ. | १६ | ४५ | ४५ | १२ | १९ | ४ | ५५ | ५७ | |
| | ४८ | ३६ | ३६ | ० | १२ | ४८ | १२ | ३६ | |

## शनिस्पष्टगतिः।

| मंदखंडांतर | १०घ | ९घ. | ४घ. | ६ऋ. | ७ऋ. | ४ऋ. | ४ऋ. | ४ऋ. | शीघ्रखण्डान्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | २५ | १९ | १३ | २ | ७ | १६ | १६ | १६ | |
| | १० | २६ | ४२ | १५ | १७ | ५० | ५० | ५० | |
| ११ | ६ | ६६ | ४६ | २७ | १९ | ५ | ५ | ५ | गति |
| | १४ | २६ | ३९ | ४ | १३ | ३४ | ३४ | ३४ | |
| घ. | २४ | ५२ | २१ | १९ | ७ | ४ | ४ | ४ | |
| | ० | ४८ | ३६ | १२ | १२ | ४८ | ४८ | ४८ | |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | २५ | १९ | १३ | २ | ७ | १६ | १६ | १६ | |
| | २३ | ४० | ५७ | ३० | १ | ३३ | ३३ | ३३ | |
| ८ | ४२ | ३० | १७ | ५२ | ८ | ९ | ९ | ९ | गति |
| | ४३ | ८ | ३४ | १४ | ४२ | ३० | ३० | ३० | |
| घ. | १२ | ३८ | ४ | ४७ | ३८ | १४ | १४ | १४ | |
| | ० | २४ | ४८ | ३६ | २४ | २४ | २४ | २४ | |

| मंदखंडांतर | १० घ. | ७ घ. | ४ घ. | २ ऋ. | ७ऋ. | ४ऋ. | ४ऋ. | ४ऋ | शी. खं. अन्त |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | २५ | २० | १७ | २ | ६ | २५ | २१ | २५ | |
| ३ | ४६ | ३ | २१ | ५६ | ३४ | ४ | ४ | ४ | गति |
| | २३ | ५६ | ३० | ३४ | १० | ५९ | ५९ | ५९ | |
| | ३१ | २१ | ४ | ४१ | ४५ | २ | २ | २ | |
| घ. | १२ | ५० | ४८ | ३८ | ५० | २४ | २४ | २४ | |
| | ० | २४ | ० | २५ | ४ | ० | ० | ० | |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | २६ | २० | १४ | ३ | ६ | १५ | १५ | १५ | |
| ३ | १६ | ३३ | ५१ | २८ | ३ | ५ | ५ | ५ | |
| | ५ | ४८ | ३० | ५५ | ३३ | २ | २ | २ | गति |
| | ४१ | ८ | ३५ | ३० | ४४ | ५९ | ५९ | ५९ | |
| | १६ | २९ | ४२ | ८ | ३९ | ८ | ८ | ८ | |
| ऋ. | ४८ | ४५ | ४३ | ३८ | ४५ | ९ | ९ | ९ | |
| | ० | ३६ | १२ | २४ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | १६ | २० | १५ | ३ | ५ | १५ | १५ | १५ | |
| ८ | ३६ | ५५ | १४ | ५३ | ३४ | २ | २ | २ | गति |
| | १७ | २९ | ४१ | ७ | ५१ | ४६ | ४६ | ४६ | |
| | १६ | ५१ | २५ | ३५ | २७ | ३३ | ३१ | ३३ | |
| ऋ. | ४८ | २१ | ५५ | २ | २१ | ४५ | ४५ | ४५ | |
| | ० | ३६ | १२ | २४ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| | २६ | २१ | १५ | ४ | ५ | १४ | १४ | १४ | |
| ११ | ४९ | ९ | २९ | ८ | १८ | ४५ | ४५ | ४५ | गति |
| | ५३ | १३ | १३ | ३२ | ४० | ५४ | ५४ | ५४ | |
| | ४५ | ३३ | २० | ५५ | ४५ | १६ | १६ | १६ | |
| ऋ. | ३६ | ७ | ३८ | ४० | ७ | ५५ | ५५ | ५५ | |
| | ० | ११ | २४ | ४८ | १२ | १२ | १२ | १२ | |

भा० वा०—जिस ग्रहका जो मन्द खंडान्तर हो उसके समान मन्द स्पष्टगति के चक्र में देखने से मन्द स्पष्टगति मिलेगी, और शीघ्रकेन्द्र गति के चक्र में देखने से शीघ्रकेन्द्र गति मिलेगी। मन्द खंडान्तर और शीघ्र खंडान्तर इन दोनों की जहां समानता हो वहां स्पष्टगति के चक्र में देखने से स्पष्ट गति मिलेगी ( अन्तर धन है, या ऋण इसका भी स्मरण रक्खे ) स्पष्टगति को १८ से गुणने से कलादि स्पष्ट गति होती है ॥

उदाहरण—मंगल का मन्द खंडान्तर ऋण ११ है, इसके समान मन्दस्पष्ट भुक्ति चक्र में देखने से मन्दस्पष्ट गति २।४।३८।६ मिली, और इस अन्तर के समान शीघ्र केन्द्र गति के चक्र में देखने से शीघ्र केन्द्र गति १।१२।२१।५४ हुई, मन्द खंडांतर ११ है, और शीघ्र खंडांतर धन २३ है, इन दोनों के समान कोष्ठ में देखने से स्पष्टगति ०।२१।१६।४४।१३।१२ मिली, इसको १८ से गुणा करने पर कलादि स्पष्ट गति ४२।२३।१।१५।५७।३७ हुई ॥

सूर्य्यादिस्पष्टग्रह चक्रम्।

| सू. | च | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. | के. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ६ | १० | [illegible] | ६ | ५ | ० | १ | ७ | राशि |
| २६ | १ | १८ | ९ | १८ | ४ | १३ | १६ | १६ | अंश |
| ५१ | ३३ | ६ | ८ | ३९ | ३१ | १२ | ३९ | ३९ | कला |
| ५६ | ११ | १ | ४९ | २१ | ४६ | ३७ | ४७ | ४७ | विकला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | प्रतिविक |
| ५८ | ७५२ | ४२ | २१ | १० | ६९ | ७ | ३ | ३ | कलादि गति |
| १४ | ० | २३ | ८ | ३ | ७ | ५८ | १० | १० | |
| १४ | ० | १ | २४ | ० | ५१ | ५३ | ४५ | ४५ | |

भौमादीनां चक्रादपरचक्रार्द्धमाससंख्या च वक्रमार्ग

दिनादि ज्ञानविषयः—

विश्वाश्विगन्धर्वदशाङ्गमासैश्चक्रार्द्धचक्रं क्षितिजादिषूह्यम्।
षड्वह्नयो द्वादश तर्कबाण वेदाश्विनः सप्तरसाः क्रमेण ॥१६॥
स्वशीघ्रकेन्द्रस्य च मण्डलार्द्धात् पूर्वापरावक्रगताश्च राशेः।
षष्ट्यष्टि भूपाङ्क गुणाःकुदस्राचक्रादितः प्राक्परतोऽस्तगः स्यात्॥१७॥
एवं ज्ञभृग्वो वसुपञ्चषड्भात् प्रागूनखेटः परतोधिकोऽर्कात् ॥१८॥

अन्वयः—क्षितिजादिषु विश्वाश्विगन्धर्वदशाङ्ग मासैः चक्रार्द्धचक्रमूह्यम्। स्वशीघ्रकेन्द्रस्य च मण्डलार्द्धात् पूर्वापरा षड्वह्नयो द्वादश तर्कबाण वेदाश्विनः सप्तरसाः क्रमेण राशेः वक्रगताश्च। चक्रादितः प्राक्परतः षष्ट्यष्टि भूपाङ्क गुणाः कुदस्रा अस्तगः स्यात्। एवंषड्भात् ( चक्रार्द्धात् ) ज्ञभृग्वो वसु पञ्च ( क्रमेण ) अर्कात् प्रागून खेटः परतोधिकः ( स्यात् )।

सं० टी०— क्षितिजादिषु विश्वाश्विगन्धर्व दशाङ्गमासैश्चक्रार्द्धं चक्रमूह्यम्, चक्रं द्वादशशतानि तदर्धं चक्रार्द्धं भौमस्य शीघ्रकेन्द्रो यदा पूर्णचक्रं भवति तस्मात् त्रयोदसे मासे चक्रार्द्धं ज्ञातव्यम्-एवं बुधस्य ३ गुरोः ७ भृगोः १० शनेः ६ मासे चक्रार्द्धं भवति, स्वशीघ्रकेन्द्रस्यच मण्डलार्द्धात्पूर्वापरा षड्वन्हयो द्वादशतर्क बाणवेदाश्विनः सप्तरसाः क्रमेण वक्रगवासरा भवन्ति भौमस्य यस्मिन् दिनेषट्शतं शीघ्रकेन्द्रं भवति तद्दिवसात् प्राग् षट्त्रिंशद्दिनैर्भौमो वक्र गतिर्भवति, चक्रात् परतः षट्त्रिंशद्दिनैर्मार्गगो भवति, एतेन भौमस्य वक्रदिनानि ७२ बुधस्य २४ गुरोः ११२ शुक्रस्य ४८ शनेः १३४ चक्रादितः प्राग् परतः षाट्स्यष्टिभूपाङ्क गुणाब्दस्त्रास्तगः स्यात्, यस्मिन् दिवसे चक्रं द्वादशशतपरिमितं भवति तस्मात् चक्रात्प्राग्षष्टिदिनैर्भौमोऽस्तः चक्रात् परतः षष्टि दिनैरुदयः-एवं गतगम्यदिनानि सर्वेषां ज्ञेयः मङ्गलस्य १२० बुधस्त ३२ जीवस्य ३२ शुक्रस्य ७८ मन्दस्य ४२ अत्र चक्रेण भौमेज्यमन्दानां पश्चादस्तः प्रागुदयः, चक्रेण बुध शुक्रयोः प्रागस्तः पश्चादुदयः एवं षड्भाद् चक्रार्द्धाद् ज्ञभृग्वोर्वसुपंचदिनानि प्रागस्तः पश्चादुदयः यस्मिन् दिने षट्शत परिमितं चक्रं भवति तद्दिनात् प्राग् वसुदिनै-र्बुधस्यास्तगः-आगामि वसुदिनैरुदयः शुक्रस्य षट्शत परिमित चक्रात् प्राग् पञ्चदिनैरस्तः परतः पञ्चदिनैरुदयः, अत्र बुधशुक्रयोश्चक्रार्द्धेन पश्चादस्तं प्रागुदयः, प्रागूनखेटःऽर्कादून ग्रहः प्रागस्तं याति, अर्कादधिकः परतः पश्चादस्तं याति गणितागतग्रहो यदि रवेराश्यादिभिरूनो भवति तदा तस्य प्रागस्तं योऽधिकोभवति तस्य पश्चादस्तं याति, अस्तं ग्रहाणामदृश्यत्वंदृश्यत्वमुदयः ॥ १६–१८ ॥

"भौमो गच्छति वक्रतां शुचिशराङ्के वै स्वशीघ्रोनिते
तद्वच्चन्द्र सुतस्त्रयोदश मुनौ जीवोऽरिषट् पर्वते ।
शुक्रः खेषुरसे खरांशुतनयो वह्नीन्दु नागे पुनः
कौटिल्यं परिहृत्य पुस्कलगतिर्मार्गीभवेच्छोधिते" ॥ १ ॥

भा० टी०—१२०० को और चक्रार्द्ध ६०० को कहते हैं, मङ्गलका अपने चक्र से १३ वें मास में बुधका ३ रे वृहस्पतिका ७ वें शुक्रका १० वें शनिका ६ वें मास में चक्रार्द्ध होता है, चक्रार्द्धके पूर्व भौमादिक क्रमशः ३६।१२।५६।२४ ६७ दिन वक्री होते हैं और इतना इतना ही दिन तक चक्र के बाद वक्री रह कर फिर मार्गी होते हैं, अर्थात् मंगल ७२ दिन, बुध २४ दिन, वृहस्पति ११२ दिन, शुक्र ४८ दिन, शनि १३४ दिन, तक वक्री रहते हैं, मंगल आदि अपने अपने पूर्ण चक्र के पहिले क्रमशः ६०।१६।१६।३९।२१ दिन अस्त होते हैं, और इतना इतनाहि दिन

चक्र के वाद अस्त रहकर उदय होते हैं, अर्थात् मंगल १२० दिन, बुध ३२ दिन वृहस्पति ३२ दिन, शुक्र ७८ दिन, शनि ४२ दिन, अस्त रहते हैं। मङ्गल वृहस्पति-शनिश्चर पश्चिम दिशा में अस्त होकर पूर्व दिशा में उदय होते हैं, और बुध शुक्र पूर्वदिशा में अस्त होकर पश्चिम दिशा में उदय होते हैं। चक्रार्द्ध के पहले बुध ८ शुक्र ५ दिन पश्चिम दिशा में अस्त और इतना इतनाहि दिन चक्र के वाद अस्त रहकर पूर्व दिशा में उदय होते हैं, अर्थात् बुध १६ दिन, शुक्र १० दिन, अस्त रहते हैं, ग्रहों का नियम किए हुए अंश आ जावे वह यदि सूर्य की राशि अंशादि से न्यून हो तो सूर्य के राश्यादि के पहले अस्त हो, और सूर्य से ग्रहकी राशि आदि अधिक हो तो सूर्य की राश्यादिक के बाद ग्रह अस्त होते हैं। ॥ १६-१८ ॥

भौमादि ग्रहाणां चक्र-चक्रार्द्ध वक्र मार्गबोधक चक्रम्।

| मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| २६ | ४ | १४ | २७ | १२ | चक्रमास |
| १३ | २ | ७ | १० | ६ | चक्रार्द्धमास |
| ० २ १२ | ० २४ | ० ३ २२ | ० १ १८ | ० ४ १४ | व. मा. दि. } वक्र |
| १ ११ १८ | ० ३ ६ | ० १० ८ | १ ६ १२ | ० ७ १६ | व. मा. दि. } मार्ग |

भौमादीनांवक्रमार्गांशवोधक चक्रम्

| मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| ६५५ | ७१३ | ७६६ | ६५० | ८१३ | वक्रांश |
| ५४५ | ४८७ | ४३४ | ५५० | ३८७ | मार्गांश |

भौमादीनामस्तोदय बोधक चक्रम् ।

| मं | बु. | वृ | शु | श. | | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | व. | पश्चिमास्त |
| ४ | ० | १ | ० | १ | मा. | |
| ० | १६ | २ | १० | १२ | दि. | |
| १ | ० | १ | ० | ० | व. | पूर्वोदय |
| १० | १ | ० | ८ | १० | मा. | |
| ० | ६ | २८ | १६ | १८ | दि | |
| ० | ० | ० | ० | ० | व. | पूर्वास्त |
| ८ | १ | ० | २ | ० | मा. | |
| ० | २ | ० | १८ | ० | दि. | |
| ० | ० | ० | ० | ० | व. | पश्चिमोदय |
| ० | १ | ० | ८ | ० | मा. | |
| ० | ६ | ० | १६ | ० | दि. | |

ग्रहाणामस्तोदयांश ज्ञानविधिः-

भौमोऽस्तं दहनग्रहे खजलदे सौम्योऽरिवेदा गुरुः
व्योमाष्टैर्भृगुजो यमो रिपुरसैः केन्द्रे स्वशीघ्रोनिते ।
लब्धास्तं शशिजस्त्रिपन्नगरसैः काष्ठारिपौ भार्गवः
तस्मिन् चक्र विशोधिते समुदयंयान्ति ध्रुवं खेचराः ॥ १९ ॥

अन्वयः—दहनग्रहे ९३ भौमः, खजलदे १७० बुधः, अरिवेदा ४६ गुरुः, व्योमाष्टे ८० भृगुजः, रिपुरसे ६६ यमः ( केन्द्रांशे ) अस्तं ( याति )। त्रिपन्नगरसै शशिजः, काष्ठारिपौ भार्गवः लब्धः प्राप्तोऽस्तं यान्ति । तस्मिन् ( एतस्मिन्नेव ) चक्रविशोधिते खेचराः ध्रुवं समुदयं यान्ति ॥

सं० टी०—दहनग्रहे भौमोऽस्तं खजलदे सौम्योबुधः, अरिवेदा गुरुः, व्योमाष्टै भृगुजःशुक्रः, रिपुरसैर्यमः शनिः, त्रिपन्नगरसैः शशिजो बुधः, काष्ठारिपौभार्गवः शुक्रो लब्धः प्राप्तोऽस्तं यान्ति, एतस्मिन्नेव स्वशीघ्रे चक्र १२०० शोधिते खेचरा ग्रहाध्रुवं समुदयं यान्ति, भौमः ९३ बुधः १७० गुरुः ४६ शुक्रः ८० शनिः ६६ केन्द्रांशगतेऽस्तं मङ्गलः ११०७ बुधः १०३० गुरुः ११५४ शुक्रः ११२० शनि ११३४ केन्द्रांशगते-उदयः भौमेज्यशनीनां पश्चादस्तः प्रागुदयः ज्ञशुक्रयोः प्रागस्तः पश्चादुदयः बुधः ६८३ शुक्रः ६१० केन्द्रांशे पश्चादस्तः, बुधः ५१७ शुक्रः ५६० केन्द्रांशे प्रागुदयः ॥ १९ ॥

भा० टी०—मंगल ९३ बुध १७० बृहस्पति ४६ शुक्र ८० शनि ६६ केन्द्रांश होने पर अस्त होते हैं। मंगल बृहस्पति-शनि पश्चिम दिशा में अस्त होते हैं, और बुध-शुक्र पूर्वदिशा में अस्त होते हैं, इसको चक्र में शोधने से मिले अंशों पर मंगल-बृहस्पति-शनि पूर्वदिशा में उदय होते हैं, और बुध-शुक्र पश्चिम दिशा में उदय होते हैं अर्थात् मङ्गल ११०७ बुध १०३० बृहस्पति ११५४ शुक्र ११२० शनि ११३४ अंश पर उक्त दिशा में उदय होते हैं, और बुध ६८३ शुक्र ६१० अंश पर पश्चिम में अस्त होते हैं, इसको चक्र से शोधे अंश पर अर्थात् बुध ५१७ शुक्र ५९० अंश पर पूर्व में उदय होते हैं॥ १९॥

भौमादीनामस्तोदयांशज्ञानचक्रम्।

| मं | बु. | बृ. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| ९३ | ६८३ | ४६ | ६१० | ६६ | पश्चिमास्तांश |
| ११०७ | ५१७ | ११५४ | ५९० | ११३४ | पूर्वोदयांश |
| ० | १७० | ० | ८० | ० | पूर्वास्तांश |
| ० | १०३० | ० | ११२० | ० | पश्चिमोदयांश |

अगस्त्योदयविधिः—

पलप्रभा द्वित्रिहता खखाङ्क-
युता स्फुटार्केण समो यदि स्यात्।
याम्ये तदा स्यादुदयो निशान्ते
मुनेरगस्त्यस्य सुरारिहन्तुः॥२०॥

इति श्रीमच्छतानन्दविरचितायां ग्रहस्पष्टाधिकारश्चतुर्थः॥

अन्वयः—पलप्रभा द्वित्रिहता खखाङ्कयुता याम्ये स्फुटार्केण समो यदि स्यात् तदा निशान्ते सुरारिहन्तुरगस्त्यस्य मुनेरुदयः (स्यात्)॥

सं॰ टी०--पलप्रभा द्वित्रिहता द्वाविषद्गुणिता खखाङ्कयुता (पुनरष्टगुणिता षष्टि विभाजिता ) याम्ये स्फुटार्केण समो यदि स्यात् तदा निशान्ते तत्समानराश्यादिके सुरारिहन्तुरगस्त्यस्य मुनेरुदयः स्यात् ॥ २० ॥

* "पलभाष्टावधोन संयुता गजशैलावसुखेचरा लवा ।
इह तावति भास्करे कमाद् घटजोऽस्तंह्यु दयं च गच्छते" ॥ १ ॥

"चन्द्रशृङ्गोन्नतिज्ञानम्—
मीने मेषे गतश्चन्द्रः सततं दक्षिणोन्नतः ।
अन्येषूत्तरशृङ्गं स्यात् समं च वृषकुम्भयोः" ॥ १ ॥

भा॰ टी०—पलभाको ३२ से गुणाकर उसमें ९०० को मिलावे फिर उसको ८ से गुणाकर ६० का भाग देने से अंशादि फल मिलते हैं, उसमें ३० का भाग देने से जो राशि आदि मिले उसके समान सूर्य की राशि होने पर दक्षिण में देवता के शत्रु ओंके नाश करने वाले अगस्त्य मुनिजी उदय होते हैं। ( आठ से गुणाकर साठ का भाग लेना यह सूर्य की स्पष्टी से अनुवर्तन किया जाता है ) ॥ २० ॥

उदाहरण—श्री काशीजी की पलभा ५।४५ को ३२ से गुणा किया तो १८४।० हुआ इसमें ९०० को मिलाया तो १०८४।० हुआ फिर इसको ८ से गुणा किया तो ८६७२।० हुआ इसमें ६० का भाग दिया तो फल अंशादि १४४।१२ मिला, अंश १४४ में ३० का भाग दिया तो ४।२४।१२ हुआ, सिंहराशि के २४ अंश १२ कला पर श्री १०८ अगस्त्य जी का उदय स्पष्ट हुआ ॥ २० ॥

इति आचार्यरामजन्म मिश्रेण संशोधितः श्रीज्योतिषीन्द्रमुकुटमणि श्रीछत्रधर-
सूरिसूनुना गणकमातृप्रसादविरचितायां भास्वत्याः छात्रबोधिनीनाम
टीकायां ग्रहस्पष्टाधिकारश्चतुर्थः ॥

---

* उदाहरण—श्रीकाशीजी की पलभा ५।४५ को ८ से गुणा किया तो ४६।० हुआ इसको दो जगह रखकर एक जगह के अंक को ७८ में हीन किया तो अगस्त्य के अस्त का अंश ३२ मिला, दूसरे जगह ९८ को युत किया तो उदय का अंश १४४ हुआ, ३२ अंश में ३० का भाग देने से राशि १ अंश २ पर अगस्त्यजी का अस्त और १४४ में ३० का भाग देने से राशि ४ अंश २४ पर अगस्त्यजी का उदय स्पष्ट हुआ ॥

## त्रिप्रश्नाधिकारः

अयनांशविधिः—

शकेन्द्रकालात्खशराब्धिहीनात्

षष्ट्याप्तशेषे ह्ययनांशकाः स्युः ।

अहर्गणं तैर्युतमेव कुर्याद्

भवेद्द्युवृन्दं द्युनिशोः प्रमाणे ॥ १ ॥

अन्वयः—खशराब्धिहीनात् शकेन्द्रकालात् षष्ट्याप्तशेषे ह्री अयनांशकाः स्युः । तैः अहर्गणं युतं एव कुर्याद् द्युनिशो प्रमाणे ( सायनं ) द्युवृन्द्रं भवेद् ॥

सं० टी०—खशराब्धिहीनात्साद्धं चतुश्शतै रहिताच्छकेन्द्रकालाच्छकेन्द्रसमयात् षष्ट्याप्तशेषे-अयनांशकाः स्युः, तैरयनांशकैरहर्गणं दिनगणं युतं मिलितमेव कुर्य्याद् द्युनिशोः प्रमाणे द्युवृन्दं दिनरात्रिमानज्ञानार्थं सायनाख्यदिनगणं भवेत् ॥ १ ॥

भा० टी०—शालिवाहन के बीते हुए शाकाब्द में ४५० को घटाकर ६० का भाग देने से अयनांश होता है। अहर्गण को अयनांश में युक्त करने से दिनरात्रि का प्रमाण जानने के लिये सायन दिनगण होता है ॥ १ ॥

उदाहरण—शाका १८३३ में ४५० को घटाया तो १३८३ हुआ, इसमें ६० का भाग देने से अयनांश २३ । ३ हुआ । इसको दिनगण २७ में युत किया तो सायन दिनगण ५० । ३ हुआ ॥ १ ॥

चरविधिः—

द्युवृन्दतोऽगाष्टकुभिर्गजाम्बुदैः स्वल्पं गतैष्योत्तरदक्षिणे तु ।

ततः खराम क्रमशश्च दद्यात् साद्धं सषष्टं च दलं चरार्द्धम् ॥ २ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—द्युवृन्दतः सायनदिनगणाद् अगाष्टकुभिर्गतगम्यं कृत्वा स्वल्पं ग्राह्यं सौम्यगोलसम्बन्धि चरदलं सौम्यं भवति, यद्यगाष्टि कुभ्योऽधिको दिनगणो भवति, तदागाष्टकुभिर्हीनं विधाय अवशिष्टं गजाब्दैर्गम्यं कृत्वा स्वल्पं ग्राह्यं तत्सम्बन्धि चरदलं भवति, ततः खरामाप्तः क्रमशः त्रिंशत् सार्द्धं पञ्चचत्वारिंशत् सषष्टं पञ्चत्रिंशच्च दलं पञ्चदशं लब्धफलं ग्राह्यम्, भागशेषं भोग्यखण्डकेन गुणितं पुर्ववत् खरामाप्तं, भुक्तखण्डकेषु युक्तं याम्योत्तरसम्बन्धि चरदलम् जातम् ॥ २ ॥

भा० टी०—सायन दिनगण को १८७ में हीन करने से सौम्य शेष होता है, यदि न घटे तो दिनगण में १८७ हीन करके उसको १७८ में घटाने से याम्य शेष होता है, सौम्य शेष में सौम्य शेष और सायन दिनगण में से जो न्यून हो उसमें और याम्य शेष में दोनों शेष में से जो न्यून हो उसमें ३० का भाग देने से क्रम से भुक्तखण्ड ४५।३५।१५ होता है, शेष को भोग्यखण्डा से गुणा करके उसमें ३० का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको भुक्तखण्डा में हीन करनेसे चर होता है ॥ २ ॥

उदाहरण—सायन दिनगण ५०।३ को १८७ में घटाया तो सौम्य शेष १३६।५७ बचा, सौम्य शेष से सायन दिनगण अल्प है इससे सायन दिनगण ५०।३ में ३० का भाग दिया तो फल १ मिला पहला गत खण्डा ४५ हुआ, शेष २०।३ बचा इसको भोग्यखण्डा ३५ से गुणा किया तो ७०१।४५ हुआ इसमें ३० का भाग देने से फल २३।२३।३० मिला, इसको भुक्तखण्डा ४५ में मिलाया तो सौम्यचर ६८। २३।३० हुआ, कल्पित सायन दिनगण २२५।३ है, यह १८७ में नहीं घटता इससे दिनगण में १८७ को घटाया तो याम्य शेष ३८।३ बचा, इसको १७० में घटाया तो शेष १३१।५७ बचा, दोनों शेषों में पूर्वशेष ३८।३ अल्प है, इसमें ३० का भाग दिया तो फल १ मिला, पहला गत खण्डा ४५ हुआ शेष ८।३ को भोग्यखण्डा ३५ से गुणा किया तो २८१।४५ किया हुआ इसमें ३० का भाग देने से लब्धि ९।२३।३० मिली इसको भुक्त खण्डा ४५ में युक्त करने से याम्यचर ५४।२३।३० हुआ ॥ २ ॥

## चरसारणीयम्।

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चा.घ. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | शेष |
| १<br>३० | १<br>३० | ३<br>० | ४<br>३० | ६<br>० | ७<br>३० | ९<br>० | १०<br>३० | १२<br>० | १३<br>३० | १५<br>० | चर |
| चा.घ. | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | शेष |
| १<br>३० | १६<br>३० | १८<br>० | १९<br>३० | २१<br>० | २२<br>३० | २४<br>० | २५<br>३० | २७<br>० | २८<br>३० | ३०<br>० | चर |
| चा.घ. | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | शेष |
| १<br>३० | ३१<br>३० | ३३<br>० | ३४<br>३० | ३६<br>० | ३७<br>३० | ३९<br>० | ४०<br>३० | ४२<br>० | ४३<br>३० | ४५<br>० | चर |
| चा.घ. | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | शेष |
| १<br>१० | ४६<br>१० | ४७<br>२० | ४८<br>३० | ४९<br>४० | ५०<br>५० | ५२<br>० | ५३<br>१० | ५४<br>२० | ५५<br>३० | ५६<br>४० | चर |
| चा.घ. | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | शेष |
| १<br>१० | ५७<br>५० | ५९<br>० | ६०<br>१० | ६१<br>२० | ६२<br>३० | ६३<br>४० | ६४<br>५० | ६६<br>० | ६७<br>१० | ६८<br>२० | चर |
| चा.घ | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | शेष |
| १<br>१० | ६९<br>३० | ७०<br>४० | ७१<br>५० | ७३<br>० | ७४<br>१० | ७५<br>२० | ७६<br>३० | ७७<br>४० | ७८<br>५० | ८०<br>० | चर |
| चा.घ. | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | शेष |
| ०<br>३० | ८०<br>३० | ८१<br>० | ८१<br>३० | ८२<br>० | ८२<br>३० | ८३<br>० | ८३<br>३० | ८४<br>० | ८४<br>३० | ८५<br>० | चर |
| चा.घ. | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | शेष |
| ०<br>३० | ८५<br>३० | ८६<br>० | ८६<br>३० | ८७<br>० | ८७<br>३० | ८८<br>० | ८८<br>३० | ८९<br>० | ८९<br>३० | ९०<br>० | चर |
| चा.घ. | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | शेष |
| ०<br>३० | ९०<br>३० | ९१<br>० | ९१<br>३० | ९२<br>० | ९२<br>३० | ९३<br>० | ९३<br>३० | ९४<br>० | ९४<br>३० | ९५<br>० | चर |

भाषावार्तिक—सौम्य शेष और सायन दिनगण में जो न्यून हो उसके तथा याम्य में दोनों शेषों में जो अल्प हो उसके तुल्य चर सारणी में देखने से जो चर स्पष्ट मिले उसे एक स्थान में लिखे, फिर शेष के दूसरे अङ्क को पहला चर जिस कोष्ठ का हो उसके चालन से गुणा करने से जो गुणनफल हो उसको एक स्थान हटाकर पूर्व चर में युक्त करने से स्पष्ट चर होता है।

उदाहरण—दूसरे श्लोक के उदाहरण में सौम्य शेष ११६।५० है, और सायन दिनगण ५०।३ है, इन दोनों में सायन दिनगण अल्प है अतः इसके तुल्य चरसारणी में ( यहाँ सायन दिनगण का शेष संज्ञा कार्य साधन के लिये है ) देखने से अर्थात् सायन दिनगण के प्रथम अंक ५० के सामने देखने से ६८।२० मिला, और चालन घन १।१० है इससे शेष के दूसरे अंक ३ को गुणा किया तो ३।३० हुआ, इसको एक स्थान हटाकर चर ६८।२० में युक्त करने से स्पष्टचर ६८।२३।३०

दिन रात्रिमान नतविधयः—

पलप्रभाघ्नं चरषड्यमाप्तम्
पञ्चेन्दुतस्तत् स्वमृणं स्वगोलात् ।
अहर्दलं व्यस्तमितोनिशार्द्धम्
तयोर्गतैष्यान्तरितं नतं च ॥३॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—पलप्रभाघ्नं चरं शरषड्यमाप्तं फलं तत् पञ्चेन्दुतः स्वमृणं प्रकुर्य्यात् पञ्चदशमध्ये सौम्य याम्यगोलत्वाद् घनमृणं कृतेसति, अहर्दलं दिनार्द्धं भवति तद्द्विगुणितं दिनमानं भवति दिनार्द्धं त्रिशन्मध्ये व्यस्तं निशार्द्धं भवति तद्द्विगुणितं रात्रिमानं भवति ततस्तयोर्गतैष्यान्तरितं पूर्वं परनतं च भवति ॥ ३ ॥

भा० टी०—चर को पलभा से गुणाकर उसमें २६५ का भाग देने से जो फल मिले वह सूर्य सौम्यगोल में हो तो १५ में युक्त और यदि सूर्य याम्यगोल में हो तो १५ में हीन करने से दिनार्द्ध होता है, दिनार्द्ध को दूना करने से दिनमान होता है, दिनार्द्ध को ३० में घटाने से रात्र्यर्द्ध होता है, और रात्र्यर्द्ध को दूना करने से रात्रिमान होता है तथा दिनार्द्ध रात्र्यर्द्ध का अन्तर नत होता है, वह दिनार्द्ध अधिक हो तो सौम्य नत, रात्र्यर्द्ध अधिक हो तो याम्य नत होता है ॥३॥

उदाहरण—चर ६८।२३ को पलभा ५।४५ से गुणा किया तो ३१९३१२ हुआ इसमें २६५ का भाग दिया तो फल १।२९ मिला सूर्य सौम्य गोल में हैं अतः इसको १५ में युत किया तो दिनार्द्ध १६।२९ हुआ इसको दो से गुणा किया तो दिनमान ३२।५८ हुआ, दिनार्द्ध १६।२९ को ३० में घटाया तो रात्र्यर्द्धमान १३।३१ हुआ,

इसको दूना किया तो रात्रिमान २७।२ हुआ, दिनार्द्ध रात्र्यर्द्ध का अन्तर करने से सौम्यनत २।४२ हुआ॥ ३॥

प्रभाविधि

**षड्घ्नं चरार्द्धं दशभागहीनम् याम्ये तु रामांशयुतं दशाप्तम्।**
**तदक्षिहीनाक्षवियुक्तयुक्तम् भानोरुदग् दक्षिणतः प्रभा स्यात्॥४॥**

अन्वयः—सुगमम्।

सं०टी०—सौम्यं चरार्द्धं षड्घ्नं षड्गुणितं स्वदशभागहीनं स्वदशमांशे रहितं दशाप्तं तदक्षिमध्ये ६०।२२ हीने कृते भानोः सूर्यस्योदकमध्यप्रभा भवेत् तु षड्गुणितं चरार्द्धं स्वरामांशयुतं दशाप्तं तदक्षिमध्ये ५८।२२ युते कृते सूर्यस्य दक्षिणतः प्रभा भवेत्॥ ४॥

भा० टी०—चर को ६ से गुणाकरके दो जगह रक्खे एक जगह १० का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको दूसरी जगह घटावे फिर उसमें दश का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको ६०।२२ में घटाने से सौम्यगोल के सूर्य में प्रभा होती है और याम्यगोल में चर को ६ से गुणा करके अपने तृतीयांश से युत करे फिर उसमें १० का भाग देने से जो लब्धि मिले उसको ५८।२२ में युत करने से प्रभा होती है॥ ४॥

उदाहरण चर ६८।२३ को ६ से गुणा किया तो ४१०।१८ हुआ इसको दो जगह रक्खे एक जगह इसमें सौम्यगोल में सूर्य है इससे १० का भाग दिया तो लब्धि ४१।२ मिली इसको दूसरी जगह ४१०।१८ में घटाया तो ३६९।१६ वचा इसमें १० का भाग देने से लब्धि ३६।५५ मिली इसको ६०।२२ में हीन किया तो सौम्यप्रभा २३।२७ हुई॥ ४॥

शङ्कुघटी विधिः—

**छायादशघ्ना शतसंयुता च मध्यप्रभोना भवतीह शङ्कुः।**
**शताहताहर्दलतस्तदाप्तमहर्गतैष्यो घटिकादिकालः॥ ५॥**

अन्वयः—दशघ्ना छाया शतसंयुता च (कार्या सा) मध्य प्रभोना इह शङ्कुः भवति। शताहतमहर्दलं (यज्जातं) तत्तदाप्तं शङ्कुना विभाजितं अहः गतैष्यो घटिकादिकालः (भवति)।

सं० टी०—दशघ्नादश गुणिता छाया शतसंयुता च पुनः मध्यप्रभोनेह शङ्कु र्भवति। अहर्दलं दिनार्द्धं शताहतं यज्जातं शङ्कुना विभाजित महर्गतैष्योघटिकादिकालो भवति॥ ५॥

भा० टी०—इष्ट छाया को १० से गुणाकरके उसमें १०० का युतकर फिर उसमें मध्य प्रभा घटाने से शङ्कु होता है। दिनार्द्ध को १०० से गुण के उसमें सवर्णित शङ्कु का भाग देने से फल गत भोग्य ( मध्याह्न के पूर्व गत मध्याह्न के बाद भोग्य ) घटी होती है ॥ ५ ॥

उदाहरण—कल्पित इष्ट छाया १० है, इसको १० से गुणा किया तो १०० हुआ इसमें १०० मिलाया तो २०० हुआ, इसमें प्रभा २३।२७ को घटाया तो शङ्कु १७६।३३ हुआ। दिनार्द्ध १६।२९ को १०० से गुणा किया तो १६४८।२० हुआ, इसको ६० से गुणाकरके सवर्णित किया तो ९८९०० हुआ, इसमें सजातीय शङ्कु १०५९३ का भाग दिया तो घटी आदि ९।२० हुई ॥ ५ ॥

छाया विधिः—

खखेन्दुनिघ्नाद्युदलागतैष्यनाड्याप्त-मध्य-प्रभया समेतम् ।
शतोनितं तद्दशभिर्विभक्तम् लब्धांगुलाद्या भवतीप्सिताभा ॥६॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—खखेन्दु निघ्नाच्छतगुणिताद्युदलाद्दिनार्धाद् गतैष्यनाड्याप्तफलं मध्यप्रभयासमेतं शतोनितं शतहीनं यत् तद्दशभिर्विभक्तं लब्धाङ्गुलाद्या-इप्सिताभा भवति ॥ ६ ॥

भा० टी०—दिनार्द्ध को १०० से गुणाकरके इसमें भुक्त या भोग्य घटी जो हो उसका भाग देने से जो फल मिले उसमें मध्य प्रभा को युक्त करके उसमें १०० को घटाने से जो शेष बचे उसमें दश का भाग देने से अभीष्ट छायाहोती है ॥ ६ ॥

उदाहरण—दिनार्द्ध १६।२९ को १०० से गुणा किया तो १६३५।० हुआ इसको सजातीत किया तो ९८१०० हुआ इसमें घटी ९।२० के सजातीय पल ५६० का भाग दिया तो लब्धि १७५।११ मिली ( लब्धि १० मिलती है परन्तु घटी ९।२० से कुछ अधिक होने से ११ ही ठीक है ) इसमें मध्यप्रभा २३।२७ युत किया तो १९८।३८ हुआ, इसमें १०० को घटाया तो ९८।३८ हुआ, इसमें १० का भाग देने से लब्ध इष्टछाया स्वल्पान्तरात् १०।० अंगुलादि हुई ॥ ६ ॥

लङ्कावधिदक्षिणाक्षविधि :—

लग्नं तु सूर्योदयतः प्रसाध्य
स्वभोदयैस्सौरदिनानुपातात् ।
चन्द्राश्विनिघ्नापक्रमार्द्धिता च
लङ्कावधेस्स्यादिह दक्षिणोक्षः ॥ ७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

सं० टी०—स्वभोदयैः स्वदेशमानैः स्वदेशीय उदयमानैरित्यर्थः सौरदिनानुपातात् सूर्योदयतः लग्नं प्रसाध्य चन्द्राश्विनिघ्ना, एकविंशतिगुणिता पलभा, अर्द्धिता लङ्कावधेरिह दक्षिणाक्षः स्यात् ॥ ७ ॥

भा० टी०—सायन सूर्य के स्वदेशोदयमान से अनुपात से लग्न को स्पष्टकरे ( अनुपात से लग्न बनावे इससे यह विदित हुआ कि इसके आगे का ४ श्लोक क्षेपक है ) पलभा को २१ से गुणा करके उसको आधा करने से यहाँ लङ्का के अवधि से दक्षिणाक्ष होता है ॥ ७ ॥

उदाहरण—श्री काशीजी की पलभा ५।४५ को २१ से गुणा किया तो १२०।४५ हुआ, इसको आधा किया तो लंका के अवधिका दक्षिणाध्रुवा ६०।२२।३० हुआ ( थोड़े दिन से कोई विद्वान् काशी की पलभा ५।४० मानते हैं इसके अनुसार दक्षिणाक्ष ५८।२० हुआ ) ॥ ७ ॥

लग्नस्पष्टविधिः—

तत्कालिकोऽर्कोऽयन भागयुक्तः
तद्भोग्य भागैरुदयोहतः स्वः ।
खाग्न्युधृतस्तद्रविभोग्यकालम्
विशोधयेदिष्टघटीपलेभ्यः ॥ ८ ॥

तदग्रतो राश्युदयाश्च शेष-
मशुद्धहृत् खाग्निगुणं लवाद्यम् ।
अशुद्धपूर्वैर्भवनैरजाद्यै-
र्युक्तं तनुस्यादयनांशहीनम् ॥ ९ ॥

सं० टी०—अयन भाग युक्तः तात्कालिकोऽर्कः सायनाऽर्कः । तद् भोग्य भागैस्व—उदयोहतः गुणितः तत् खाग्न्युद्धृतो रविभोग्य कालः स्यात्, भोग्य कालमिष्टघटी पलेभ्यो विशोधयेत् तदग्रतो राश्युदयाश्च विशोधयेत् शेषं खाग्निगुणितमशुद्धहृतं लवाद्यमशुद्धपूर्वैरजाद्यैर्भवनैर्युक्तं ततोऽयनांशहीनं तनुः स्यात् ॥ ८-९ ॥

"१ भोग्यतोऽल्पेष्टकालात् खरामाहतात् ।
स्वोदयाप्तांशयुग् भास्करःस्यात्तनुः" ॥

१. उदाहरण—शका १८३३ वैशाख शुक्ल १३ बृहस्पति के दिन सूर्य के ७ भा०

भा॰ टी॰—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का सूर्य स्पष्ट करके उसमें अयनांश युत करने से सायन सूर्य होता है, फिर उस सायनसूर्य को छोड़ करके अंशादि को ३० में घटाने से भोग्य अंश आदि होते हैं, फिर जो सूर्य की राशि छोड़ दी थी उस राशि के अपने देश के उदय से उन भुक्त भोग्य अंश आदि को गुणाकरके उसमें ३० का भाग देने से भुक्त भोग्यकाल होता है, फिर इष्टकाल के घटी को पलात्मक बनाकर, उसमें ( भुक्त ) घटावे, घटाने से जो शेष बचे उसमें सायन सूर्य के राशि के बाद की जितनी राशि घटे उनको घटा देवे फिर ऐसे घटाने से जो अंक शेष रहे उसको ३० से गुणके उसमें अशुद्धोदय अर्थात् घटो हुई राशियों के आगे की जो राशि हो उसके मान से भाग देवे उससे जो अंश आदि फल मिले उसमें जिस राशि के मान तक का उदय इष्ट पल में घटा हो उस राशि का मेष से जितनी संख्या हो संख्या को राशि के स्थान में युक्त करे फिर उसमें अयनांश घटाने से स्पष्ट लग्न होता है। ( जो भुक्त लग्न बनावे जिस राशि के मान से गुणा करे उस उदय से पिछले उदय को घटावे और बाद पूर्ववत् क्रिया करके अंशादि फल कर ले फल में अशुद्ध लग्न राशि के स्थान पर युक्त करें उस राशि की संख्या में से एक अंक की संख्या घटाकर अंश आदि को घटावें फिर शेष में अयनांश को घटाने से स्पष्ट लग्न होता है ) ॥ ८९ ॥

उदाहरण—सं॰ १९६८ शाका १८३३ वैशाख शुक्ल १३ बृहस्पति के सूर्योदय से इष्ट घटी ५ पल ११ है, इस समय लग्न साधन करना है, सूर्य ०।२६।५४।५७ इसमें अयनांश २३।३ को युत किया तो सायन सूर्य १।१९।५७।५७ हुआ, इसकी राशि वृष को अलग रख दिया अंशादिकों को ३० में घटाया तो भोग्यांश आदि १०।-२।३ हुआ इसको वृष के उदय २८३ से गुणा किया तो २५३८।३८।३९ हुआ इसमें ३० का भाग दिया तो भोग्य काल ८४।३०।१७ हुआ, इष्ट घटी ५ पल ११ को ६० से गुणा करके सवर्णन किया तो ३११ हुआ इसमें भोग्यकाल ८४।३०।-१७ को घटाया तो २२६।२२।४३ शेष बचा इसमें इसके आगे की राशि मिथुन का

---

उदय से ० घटी ४८ पल पर इष्टलग्न साधन करना है। स्पष्ट सूर्य ०।२६।५०।४२ है, इसमें अयनांश २३।३ जोड़ा तो सायन सूर्य १।१९।५३।४२ हुआ, इस पर से कही हुई रीति के अनुसार अर्थात् सायन सूर्य के भुक्त अंशादि ३० से घटाया तो भोग्यांश १०।६।१८ हुआ इसको वृष के उदय २५३ से गुणा करके ३० के भाग से भोग्यकाल ८५।१३।८ मिला, इससे पलात्मक इष्टकाल ०।४८ न्यून है इसलिए इसको ३० से गुणा किया तो १४४० हुआ इसमें सायन सूर्य के वृष राशि के उदय २५३ का भाग किया तो अंशादि फल ५।४१।३० मिला इसको सूर्य ०।२६।५०।४२ में युत किया तो स्पष्ट लग्न १।२।३२।१२ हुआ ॥

उदय ३०४ नहीं घटता इससे उक्त शेष २२६।२२।४३ को ३० से गुणा किया तो ६७९१२१।३० हुआ अशुद्ध लग्न मिथुन के उदय ३०४ का भाग दिया तो लब्धि २२।२०।२४ मिली इसमें शुद्ध लग्न वृष की संख्या मेष से दो हुई, इसको युत किया तो २।२१।२०।२४ हुआ इसमें अयनांश २३।३ को घटाया तो स्पष्ट लग्न १।२९।१७।२४ हुआ ॥ ८-९ ॥

चरखण्डविधिः—

**द्विगुणा विषुवच्छाया विभजेत् क्रमशस्त्रिधा ।**
**सूर्याद्रिः षड्गुणैर्लब्धम् चर खण्डापला भवेत् ॥ १० ॥**

सं० टी०—विषुवच्छाया पलभा द्विगुणिता त्रिधा स्थाप्या सूर्याद्रिः षड्गुणैर्द्वादशपञ्चदशषट्त्रिंशद्भिः क्रमशः विभजेत् एवं कृतेसति चर खण्डापला भवेत् ॥ १० ॥

भा. टी.—पलभा को २ से गुणा करके तीन जगह रक्खे तीनों जगह में क्रम से १२।१५।३६ का भाग देने से फल चर खण्डा होता है ॥ १० ॥

उदाहरण—काशी की पलभा ५।४५को २से गुणा तो ११।३० हुआ, इसको सजातीय किया तो ६९० हुआ इसको तीन जगह रक्खा पहले जगह १२का भाग दिया तो फल ५७ मिला, दूसरे जगह १५ का भाग दिया तो ४६ मिला, तीसरे जगह ३६ का भाग दिया तो फल १९ मिला एवं काशी का चरखण्डा ५७।४६।१९ हुआ॥१०॥

लङ्कामानंतन्मानात्स्वदेशमानविधिः—

**वस्वक्षं नन्दनन्दाक्षि त्रिरदं च क्रमोत् क्रमात् ।**
**चरखण्डोनितं युक्तं विनाड्यो नाडिकादयः ॥११॥**

सं० टी०—वस्वक्षं नन्दनन्दाक्षित्रिरदं चरखण्डाभिः क्रमोत् क्रमाद्धूनितं युक्तं च मेषादीनां विनाड्यो नाडि कादयो भवन्ति ॥ ११ ॥

भा० टी०—लंका में मेष का २७८ वृष का २९९ मिथुन का ३२३ पलमान है इसका विपरीत करने से कर्क का ३२३ सिंह का २९९ कन्या का २७८ मान हुआ, इन छःओं को उत्क्रम याने उलटा करने से तुलादि छःराशि का मान होता है। मेष आदि तीन राशि के मान में चर खण्डा हीन करने से मेष आदि तीन राशि का स्वदेश मान होता है और युत करने से कर्क आदि तीन राशि का स्वदेश मान होता है उसके उलटा करने से तुला से मीन राशि तक का स्वदेशीय मान होता है ॥ ११ ॥

उदाहरण—लंका में मेषादि तीन राशि का मान २७८।२९९।३२३है,इसमें काशी का चरखण्डा हीन किया तो मेषादि तीन राशि का स्वदेशमान २२१।२५३।३०४ हुआ और खंडा युत किया तो कर्कादि तीन राशि का मान ३४२।३४५।३५५ हुआ इसको व्युत्क्रम करने से तुलादि का मान ३३५।३४५।३४२।३०४।२५३।२२१ हुआ ॥ ११ ॥

| लंकोदयराश्युदयः | | |
|---|---|---|
| मेष | २७८ | मीन |
| वृष | २९९ | कुम्भ |
| मिथु | ३२३ | मकर |
| कर्क | ३२३ | धनुः |
| सिंह | २९९ | वृश्चि |
| कन्या | २७८ | तुला |

| काश्यांराश्युदयः | | |
|---|---|---|
| मेष | २२१ | मीन |
| वृष | २५३ | कुम्भ |
| मिथु | ३०४ | मकर |
| कर्क | ३४२ | धनुषः |
| सिंह | ३४५ | वृश्चिक |
| कन्या | ३३५ | तुला |

इति श्रीज्यौतिषीन्द्रमुकुटमणि श्रीछत्रधरसूरि सूनुना गणक मातृ प्रसादेन विरचितायां भास्वत्याः छात्रबोधिनि नाम टीकायां त्रिप्रश्नाधिकारः पञ्चमः ॥ ५ ॥

| काठमाण्डौको उदयमान | | |
|---|---|---|
| मेष | २१५ | मीन |
| वृष | २४९ | कुम्भ |
| मिथुन | ३०२ | मकर |
| कर्कट | ३४४ | धनु |
| सिंह | ३४९ | वृश्चिक |
| कन्या | ३४१ | तुला |

# अथ चन्द्रग्रहणाधिकारः

द्विगुणितरवौपर्वकालसंस्कार तत्कालिकराहु स्पष्टशरविषयः—

द्विघ्नो रविः पर्वकृताप्तयुक्तो
दिग्भिस्तमोऽष्टघ्नदिनं ध्रुवाढ्यम् ।
तमो युतार्कात् खखभाप्तसौम्यम्
याम्यं शरोऽल्पः स्वदशांशहीनः ॥ १ ॥

सं० टी०—द्विघ्नो रविः द्विगुणितसूर्यः पर्वकृताप्तयुतः तत्कालिकोऽर्को भवति । दिनं दिनगणमष्टघ्नं दिग्भिर्विभाजितं तद्ध्रुवकं आढ्यं युक्तं च तमो-राहुःस्यात्. अर्काद्युतस्तम् खखभात सप्तविंशतिशतैर्विभाजितं फलं सौम्ययाम्यशरः ( एकेन त्रिभिर्याम्यः, द्वाभ्यां शून्येन सौम्यः ) खखभैर्भक्ते सप्तविंशति-शतेन गत गम्यं कृत्वा यदल्पं भवेत्तद्ग्राह्यं स्वदशांशेनहीनः स्पष्टशरो भवति ॥ १ ॥

भा० टी०—स्पष्ट सूर्य को दूना करके उसमें पर्वान्त नाड़ी का चतुर्थांश युत करने से पर्वकाल संस्कारित द्विगुणित सूर्य होता है। दिनगण को ८ से गुण के उसमें १० का भाग देने से जो लब्धि मिले वह राहु के ध्रुवा में युत करने से राहु होता है। पर्वकाल से संस्कारित द्विगुणित सूर्य में राहु को युक्त करके २७०० का भाग देने से फल ( १।३ मिले तो ) याम्य ( ०।२।४ मिले तो ) सौम्यशर होता है ( जिस दिशा का शर होता है उसी दिशा का ग्रास भी होता है) शेष को २७०० में हीन करने से जो शेष बचे वह और पूर्व शेष इन दोनों में जो न्यून हो उसको अपने दशांश से हीन करने से स्पष्टशर होता है ॥ १ ॥

उदाहरण—श्रीसंवत् १९६९ शाका १८३४ चैत्रशुक्ल पूर्णिमा के दिन चन्द्र ग्रहण का साधन करते हैं।

सूर्य २६१३।३०।२५ को दूना किया तो ५२२७।०।५० हुआ, पर्वकाल ५३ घटी २१ पल में चार का भाग दिया तो लब्धि १३।२०।४५ मिली, इसको द्विगुणित सूर्य ५२२७।०।५० में युत किया तो पर्वकाल संस्कारित द्विगुणित सूर्य ५२४०-।२१।३५ हुआ। दिनगण ३५३ को ८ से गुणा तो २८२४ हुआ, इसमें १० का भाग देने से फल २८२।२४।० मिला इसके राहु की ध्रुवा ५१३०। २५।२९ में युत किया तो तत्कालिक राहु ५४१२।४९।२९ हुआ। पर्व काल

संस्कारित द्विगुणित सूर्य ५२४०।२१।३५ है इसमें राहु ५४१२।४९।३९ को युत किया तो राहु पर्वकाल संस्कारित सूर्य १०६५३।११।१४ हुआ, इसमें २७०० का भाग दिया तो फल ३ मिला इससे याम्य शर हुआ शेष २५५३।११।१४ बचा इसको २७०० में हीन किया तो शेष १४६।४८।४६ बचा इन दोनों शेषों में दूसरा शेष १४६।४८।४६ न्यून है अतः इसमें दशमांश १४।४०।५२ को घटाया तो स्पष्ट याम्य शर १३२।७।५४ हुआ ॥ १ ॥

चन्द्र राहु मान ग्रास विषय:—

**मानं हिमांशोर्गतिरग्निहीना**
**द्विघ्नं चतुर्भिश्चतमः प्रमाणम् ।**
**तद्योगतोऽर्द्धं शरवर्जितं च**
**ग्रासःसुधांशोःस्फुटपर्वसन्धौ ॥ २ ॥**

सं० टी०—हिमांशोश्चन्द्रस्याग्निहीना वह्निरहितागतिर्हिमांशो मानं भवति, इदं दशघ्नं दिग्गुणितं चतुर्भिर्विभाजितं तम प्रमाणं राहुमानं भवति तद्योगतोऽर्द्धं मानयोर्योगार्द्धं शरवर्जितं च सुधांशोः चन्द्रस्य स्फुटपर्वसन्धौ ग्रासःस्फुटः स्पष्टः स्यात् ॥ २ ॥

"छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभा-
छादकछाद्यमानैक्यखण्डं कुरु ।
तच्छरोनं भवेच्छन्नमेतद्यदा-
ग्राह्यहीनावशिष्टं तु खच्छन्नकम्" ॥ १ ॥

भा० टी०— चन्द्रमा की गति में ३ को घटाने से चन्द्रमान होता है । चन्द्रमान को १० से गुण के उसमें ४ का भाग देने से जो फल मिले वह तमोमान होता है । चन्द्र-राहु मान के योग के आधे में शर घटाने से ग्रास होता है । (न घटे तो ग्रहण नहीं लगेगा यह जाने ॥ २ ॥

उदाहरण—चन्द्रमा की गति १०२ में ३ को घटाया तो चन्द्रमान ९९ हुआ । चन्द्रमान ९९ को १० से गुणा किया तो ९९० हुआ इसमें ४ का भाग देने से फल तमोमान २४७।३० हुआ । चन्द्रमा के मान का और राहु के मान का योग किया तो ३४६।३० हुआ इसका आधा किया तो योगार्द्ध १७३।१५ हुआ इसमें शर १३२।७।५४ को घटाया तो ग्रास ४१।७।६ हुआ ॥ २ ॥

स्थित्यर्द्ध स्पर्श-मध्य मोक्षकालविधयः—

स्थित्यर्द्धमंगाहतमिन्दुखण्डम्
खपञ्चयुक्खण्डफलं विमर्दम् ।
हीनं धनं पर्वणि शीतरश्मेः
स्पर्शोऽथमुक्तिश्च तदिष्टकालः ॥ ३ ॥

सं० टी०—इन्दुखण्डमेकत्राङ्गहतं षड्गुणितं, अन्यत्र खपञ्च युक् खण्डविखण्डितं पञ्चाशद् युक्तेन ग्रासेन विभाजितं स्थित्यर्द्धं भवति, तद्दिनमान हीन पूर्णिमा घटिकासु हीनं धनं स्पर्श मोक्षकालौ भवतः, पर्व घटिकासु हीने कृते सति स्पर्शकालः पर्वघटिकासु युते सति मोक्ष कालो भवति पर्व घटिकैव मध्यकाल इति ॥ ३ ॥

भा० टी०—ग्रास मानको दो जगह रख के एक जगह के अंक को ६ से गुणा सजातीय कर लेवे फिर दूसरी जगह रक्खे हुए अंक में ५० को जोड़ सजातीय करके इसका सजातीय षट् गुणित ग्रास में भाग देने से फल स्थित्यर्द्ध होता है। पर्वकाल में स्थित्यर्द्ध को घटाने से स्पर्शकाल होता है और युक्त करने से मोक्षकाल होता है, तथा पर्वान्त के समान मध्यकाल होता है ॥ ३ ॥

उदाहरण—ग्रास ४१।७।६ है, इसको दो जगह रक्खे एक जगह के अंक को ६ से गुणा किया तो २४६।४२।३६ हुआ, इसका एक राशि किया तो ८८८१५६ हुआ, दूसरे जगह ग्रास ४१।७।६ रक्खा है इसमें ५० को युत किया तो ९१।७।६ हुआ, इसको सजातीय किया तो ३२८०२६ हुआ इसका ८८८१५६ में भाग दिया तो फल स्थित्यर्द्ध २।४२ हुई। पर्वकाल ५३।२३ में स्थित्यर्द्ध २।४२ से हीन किया तो स्पर्शकाल ५०।४१ हुआ, पर्व काल में स्थित्यर्द्ध युत किया तो मोक्षकाल ५६।५ हुआ पर्व काल के तुल्य ५३।२३ मध्य काल हुआ ॥ ३ ॥

शरकृतिविधि—

खखेन्दुवेदाधिक भास्करस्य
भागवद्भचक्राप्तदिशः शरश्च ।
तत् खाष्ट भागस्य कृतिः सुधांशो-
र्यथा दिशं व्यस्तमितः खरांशोः ॥४॥

सं० टी०:—खखेन्दु वेदाधिकभास्करस्य पर्वकालसंस्कारितद्दिघ्न सूर्यस्य भागवत् पूर्ववत् भचक्राप्तदिशः शरश्च तत् खाष्टभागस्य सुधांशोश्चन्द्रस्य यथा

दिशं कृतिः, इतः खरांशोः सूर्यस्य अस्तं चन्द्रग्रहणे याम्यशरे याम्या सौम्यशरे सौम्याकृतिः सूर्यग्रहणे याम्यशरे सौम्या सौम्य शरे याम्याकृतिरिति ॥ ४ ॥

भा० टी०—पर्वकाल से संस्कारित द्विगुणित सूर्य में ४१०० को युत करके उसमें २७०० का भाग दें पूर्ववत् याम्य सौम्य दिशा का शर, स्पष्ट करे और ०।२।४ मिले ( अर्थात् १७०० का भाग देने से लब्धि १।३ मिले तो याम्यशर और ०।२।४ तो सौम्य शर होता है। फिर शेष २७०० में गत गम्य करने से जो शेष बचे वह और पूर्व शेष इनमें से जो न्यून हो उसके अपने दशमांश से हीन करने से स्पष्ट-शर होता है ) स्पष्टशर में ८० का भाग देने से जो फल मिले उसकी कृति ( वर्ग ) बनावे। चन्द्रग्रहण में जिस दिशा का शर रहता है उसी दिशा में कृति होती है, और सूर्यग्रहण में याम्यशर में सौम्य कृति और सौम्यशर में याम्यकृति होती है ॥४॥

उदाहरण—पर्वकाल से संस्कारित द्विगुणित सूर्य ५२४०।२१।३५ है इसमें ४१०० को युत किया तो ९३४०।२१।३५ हुआ इसमें २७००का भाग दिया तो फल ३ मिला इससे याम्यशर हुआ शेष १२४०।२१।३५ को २७०० में हीन किया तो १४५९।३८।२५ बचा। इन दोनों शेषों में पहला शेष न्यून है अतः उसमें उसके दशमांश १२४।२।९ को हीन किया तो स्पष्ट याम्यशर १११६।१९।२६ हुआ। इसमें ८० का भाग देने से फल १३।५७।१४ मिला इसकी कृति याम्य १६४।३० हुई ॥ ४ ॥

नत वलनविधी—

मध्यं दिनात् प्राक् परतश्चसौम्यम्
याम्यं नतं स्यादथ तत् कृतिश्च ।
कृत्यस्तु तुल्यान्यदिशोः क्रमेण
योगान्तरं वा वलनं रवीन्दोः ॥५॥

इति श्रीमच्छातानन्द विरचितायां भास्वत्यां
चन्द्रग्रहणाधिकारःषष्ठः।

---

सं० टी०—सूर्यग्रहणे दिनार्द्धं मध्यदिनं चन्द्रग्रहणे दिनमानयुतं निशार्द्धं पर्वकालः मध्यदिनात् मध्यरात्रेः प्राक् सौम्यं परतःयाम्यं नतम् पर्वकालदिनार्धयो रात्र्यर्धयोर्वान्तर कृते यदवशिष्ठं तन्नतं स्यात्। पर्वकालमध्यदिन मध्यरात्रि तुल्यतायां नताभावः। अथ तत् कृतिश्चनतकृतिः पूर्वकृति तुल्यान्यदिशो क्रमेण योगान्तरं कार्यम्-रवीन्दोःसूर्यसोमयोः याम्यसौम्य वलनं स्यात् ॥५॥

भा० टी०—मध्य दिन या मध्य रात्रि के पूर्व का पर्वकाल हो तो सौम्य, पर का हो तो साम्य अर्थात् दिनार्द्ध, मध्यरात्रि में पर्वकाल घटे तो सौम्यनत होता है और यदि पर्वकाल में दिनार्द्ध या मध्यरात्रि घटे तो याम्यनत होता है। नतका कृति बनावे यदि यह कृति और पूर्वकृति एक दिशा की हो तो योग करने से अन्य दिशा की हो तो गत गम्य करने से सूर्यचन्द्र का वलन होता है ॥ ५ ॥

उदाहरण—दिनमान ३०।४८ रात्रिमान २९।१२ अर्द्धरात्रि १४।४६ है; अतः दिन मान ३०।४८ में रात्रिमान का आधा युत किया तो मध्यरात्रि ४५।२४ हुई, पर्वकाल ५३।२३ इसके बाद का है इससे पर्वकाल में मध्यरात्रि का मान घटाया तो याम्यनत७।५९ हुआ इसकी याम्यकृति ६३।४४ हुई पहले की भी याम्यकृति ९४।१७ दोनों के एक दिशा में होने से योग किया तो याम्यवलन २८८।२१ हुआ ॥ ५ ॥

इति श्रीज्योतिषोद्रमुकुट मणि श्री६छत्रधर सूरिसूनुना गणक मातृप्रसाद विचितायां भास्वत्याः छात्रबोधिनीनाम टीकायां चन्द्रग्रहणाधिकारःषष्ठः ॥ ६ ॥

# अथ सूर्यग्रहणाधिकारः

## लम्बन विधिः

नताद् दशघ्ना जिनयुक् नताप्तम्
तल्लम्बनं तेन युतं नतं च।
तत्खाङ्क निघ्नोन युतस्य भानोः
प्राचीप्रतीच्योश्च शरः प्रसाध्यः ॥ १ ॥

सं० टी०—पूर्वानीत प्रकारेणानीतं नतं स्थानद्वये स्थाप्यमेकत्र दशघ्नान्नतात् अन्यत्रजिनयुक् नताप्तं चतुर्विंशति युतेन नतेन प्राप्तलब्धं लम्बनं, एवं पुनः पुनः कृतेसति स्थिरलंबनं भवति, तत् स्थिरलंबनं तेननतं युतं खांकघ्नं पर्वान्तसंस्कृत द्विघ्न रवौ सौम्यनतत्वात् खांङ्कनिघ्नेन नतेन हीनं याम्यनतत्वाद् युक्तं भचक्राप्तादिक्रियाभिः प्राचीप्रतीच्योः शरः प्रसाध्यः चेति ॥ १ ॥

"तत् खांङ्क निघ्नेतु ऋणेऽधिकेऽर्कादर्केशतघ्नाकृतयश्चदेया ! तत्खांङ्कहीनादथ चार्कहीनाच्छोध्यःशरो दृग्गुणितं यदल्पः" ॥ १ ॥

भा० टी०—नतको दो जगह रखके एक जगह के नत को १० से गुणे उसमें दूसरे जगह रक्खे हुए नत में २४ युक्त करके भाग देवे तो प्रथम लम्बन होता है, अब प्रथम लम्बन में नत को युत करके दो जगह रख कर एक जगह १० से गुण करके उसमें दूसरे जगह २४ को युत करके भाग देने से फल द्वितीय लंबन होगा ऐसे ही दूसरे बलन में नत को युत करके उक्त क्रिया करने से तृतीय बलन होगा, फिर जब तक स्थिर लंबन न आवे तब तक इसी प्रकार स्थिर लंबन बनाने का प्रयत्न करता रहे ( जिसके आगे उक्त क्रिया करने से न्यूनाधिक न हो उसको स्थिर लंबन कहते हैं ) स्थिर लबन में नत युक्त करके उसको ९० से गुणा करे गुणनफल को सौम्य नत हो तो पर्व काल से संस्कारित द्विघ्नरवि में हीन करे ( न घटे तो ५४०० युत करके घटावे ) याम्य नत हो तो युक्त करे, फिर चन्द्रग्रहणाधिकार के प्रथम श्लोक के अनुसार शरस्पष्ट करे, वह शर उक्त अधिकार से कहे हुए दिशा का होता है यहां पर प्राचीप्रतीची का जो नाम लिया है उसका सम्बन्ध विशेष करके परिलेखाधिकार के दूसरे श्लोक से है अर्थात् वहां पर इसको स्पष्ठ रीति से दर्शाया जायगा ॥ १ ॥

उदाहरण—श्री संबत् १९६८ शका १८३३ कार्तिक बदी ३० रविवार के ४घट १६ पल पर सूर्यग्रहण साधते हैं। दिनगण २९१ पर्वान्त ४।१६ सूर्य १३८४।५२।४ सूर्य की गति ७।२६ अन्तर ५ चन्द्र १३५८।४४।४६ चन्द्रमा की गति ९५।० अन्तर ५ दिनार्द्ध १४।८ है। दिनार्द्ध १४।८ में पर्वान्त ४।१६ को घटाया तो सौम्यनत ९।५२ हुआ, इसको दो जगह रक्खे एक जगह के अंक को १० से गुणा किया तो ८।४० हुआ इसको एक राशि किया तो भाज्य ५९२० हुआ, दूसरी जगह के अंक में २४ को युत किया तो ३३।५२ हुआ इसको सजातीय किया तो भाजक २०३२ हुआ, इस भाजक का भाज्य ५९२०में भाग देने से प्रथम लंबन २।५४ हुआ, इसको नत में युक्त करके पूर्ववत् क्रिया करनेसे द्वितीय ३।२८ तृतीय ३।३४चतुर्थ ३।३५पञ्चम लंबन ३।३५हुआचतुर्थ लंबनके समान है, अतः चतुर्थ लम्बनस्थिर लम्बन हुआ,स्थिर लंबननत ९।५२को युत किया तो१३।२७ हुआ फिर इसको ९०से गुणा तो१२१०।३० हुआ, सूर्य १३८४।५२।४ पञ्चम लंबन ४ को दूना किया तो द्विगुणित सूर्य २७६९।-४४।८ हुआ, पर्व ४।१६में भाग देनेसे फल १।४ मिला इसको द्विगुणित सूर्य २७६९-।४४।८ में मिलाया तो पर्वकाल संस्कारित द्विगुणित सूर्य २७७०।४८।८ हुआ, इसमें पूर्वनत होने से ९०से गुणे हुए स्थिर लम्बन १२१०।३० को घटाया तो १५६०।१८-।८ बचा इसमें २७०० का भाग दिया तो फल० सौम्यशर हुआ, शेष १५६०।१८।८ को हर २७०० में घटाया तो शेष ११३९।४१।५२ बचा इन दोनों शेषों में दूसरा शेष न्यून है अतः इसमें इसके दशमांश ११३।५८।११ को घटाया तो सौम्यशर १०२५।४३।४१ हुआ ॥ १ ॥

नतिलम्बनस्य रवौसंस्कारसूर्यमागविधिः—

पृथक् शतांशाधिकरुद्रभक्त-
स्तदक्षयोगान्तरितो नतिः स्यात् ।
तल्लम्बनं दिग्गुणितं गुणाप्तम्
हीनं धनं प्राक्परयोः खरांशोः ॥ २ ॥
ततस्तमः संप्रयुताच्छरश्च
शरावनत्यान्तरयुक् स्फुटः स्यात् ।
मानं रवेर्भोग्ययुताङ्गनन्दा
तद्ग्राहकोऽधःस्थित एवचन्द्रः ॥ ३ ॥

सं० टी०—सशरः पृथक् स्थानद्वये स्थाप्य एकत्र शतांशाधिकरुद्रभक्तोऽन्यत्र फलं तदक्षयोगान्तरितः, यदा याम्य फलं तदा योगः यदा सौम्य फलं तदान्तरितो नतिः स्यात् पूर्वानीतस्थिरलम्बनं दिग्गुणितं गुणाप्तं प्राक् परयोःसौम्ययाम्ययोः खरांशोः हीनं धनं सौम्यनते हीनं याम्यनते धनं कार्यम्। ततस्तमः संप्रयुतात् पर्वकालसंस्कारितद्विघ्नभास्कराच्छरः साध्यः (स च शून्येन द्वाभ्यां च सौम्यः, एकेनत्रिभिर्याम्यः) शरावनत्यान्तरयुक् शरावनत्योरेकदिशो योगः भिन्नदिशोरन्तरकृते स्फुटः स्यात्। भोग्ययुताङ्कनन्दारवेर्मानं तद्राहुकोधः स्थितएवचन्द्रः ॥ २ ॥ ३ ॥

भा० टी०—शर को दो जगह रखके एक जगह के अंक में १०० का भाग देने से जो फल मिले उसमें ११ युत करके उसका दूसरे जगह रक्खे हुए अंक में भाग देने से जो फल मिले उसको "तदक्ष" में हीन युत करने से नति होती है। स्थिर लंवन को १० से गुणके उसमें ३ का भाग देने से जो फल मिले उसको सौम्य नत होय तो पर्वकाल संस्कारित द्विघ्न रवि में हीन याम्यनत होय तो युक्त करे, फिर उसमें उस दिन के राहु को स्पष्ट करके युत करने से सूर्ययुत राहु होता है। सूर्ययुत राहु से स्पष्ट शर पूर्व कही हुई रीति से बनावें। सूर्य के खण्डान्तर को ९६ में युक्त करने से सूर्य का मान होता है, आगे कहे हुए प्रकार से चन्द्रमान आदि बनाकर ग्रास स्पष्ट करे (मान योग के आधे में शर न घटे तो जाने ग्रहण नहीं लगेगा)॥२-३॥

उदाहरण—शर १०२५।४३।४१ को दो जगह रक्खे एक जगह इसमें १०० का भाग दिया तो फल १०।१५ मिला इसमें ११ को मिलाया तो २१।२५ हुआ इसका दूसरे जगह रक्खे हुए १०२५।४३।४१ में भाग दिया तो सौम्यफल ४८।१६ मिला इसको "तदक्ष" ६०।२२ में हीन किया तो सौम्य नति १२।६ हुई, स्थिरलंवन ३।३५ को १० से गुणा किया तो ३५।५० हुआ, इसमें ३ का भाग दिया तो फल ११।५७ मिला, इसको सौम्यनत होने से पर्वकाल संकारित द्विघ्न सूर्य २७७०।४८।८ में घटाया तो २७५८।५१।८ हुआ इसमें स्पष्टराहु ५२८३।१४।३९ को युत किया तो सूर्य युत राहु ८०४२।५।४७ हुआ। इसमें २७०० का भाग देने से फल सौम्यशर २ हुआ, शेष २६४२।५।४७ को हर २७०० में घटाया तो शेष ५७।५४।१३ बचा पूर्व शेष से यह शेष अल्प है इससे इसको अपने दशांश ५।४७ से हीन किया तो सौम्य शर ५२।७।१२ हुआ। नति और शर एक दिशा का होने से दोनों का योग किया तो स्पष्टशर ६४।१३।१२ हुआ। सूर्य के खण्डान्तर ७ को ९६ में मिलाया तो सूर्य मान १०३ हुआ, और चन्द्रभुक्ति ९५ में ३ हीन किया तो चन्द्रमान ९२ हुआ। दोनों मानों का योग किया तो मानयोग १९५ हुआ, इसको आधा किया तो

मान योगार्द्ध ६७।३० हुआ. इसमें स्पष्टशर ६४।१३।१२ को घटाया तो ग्रास ३३।१६।४८ हुआ ॥ २ ॥ ३ ॥

स्थितिविधिः–

ग्रासाच्चतुर्घ्नात् सवितुः खराम
ग्रासैक्यलब्धं स्थितिमर्दनार्द्धम् ।
इतीहसूर्यग्रहणे विशेषः
शेषस्तु चन्द्रग्रहवद् विचिन्त्यः ॥ ४ ॥

इति श्रीमच्छतानन्द विरचितायां भास्वत्यां
सूर्यग्रहणाधिकारः सप्तमः ॥ ७ ॥

---

सं० टी०—सवितुः सूर्यस्यचतुर्घ्नाद् ग्रासात् खरामग्रासैक्यलब्धं स्थितिमर्दनार्द्धम् ( पूर्वानीतग्रासः स्थानद्वये स्थाप्य एकत्रचतुर्भिर्गुणितोऽन्यत्र त्रिंशद् युक्तेन विभाजितं स्थित्यर्द्धं तत् स्थानद्वये स्थाप्यमेकत्र दशघ्नमन्यत्र चतुर्विंशतियुक्तेन भक्तं पूर्वानीतस्थित्यर्द्धे युक्तं जातं स्पष्टस्थित्यर्द्धम् ) सूर्यग्रहणे इतीह विशेषः शेषस्तु चन्द्रग्रहणवत् विचिन्त्यः ॥ ४ ॥

भा० टी०—ग्रास को दो स्थान में स्थापित करके एक स्थान के अंक को ४ से गुणा करै द्वितीय स्थान के अक में ३० को युक्त करके चार से गुणे हुए गुणनफल में भाग देने से लब्ध स्थिति मर्दनार्द्ध होती है, ( इसको दो स्थान में रख के एक स्थान के अंक को १० से गुणे दूसरे स्थान के अंक में २४ को युक्त करके १० से गुणे हुए स्थित्यर्द्ध के गुणनफल में भाग देने से जो फल मिले उसको पूर्व के स्थित्यर्द्ध में युक्त करने से स्पष्ट स्थित्यर्द्ध होता है ) यहाँ सूर्यग्रहणाधिकार में यही इतना विशेष कहा है शेष चन्द्रग्रहण के समान जाने ॥ ४ ॥

उदाहरण—ग्रास ३३।१६।४८ को दो जगह रक्खे एक जगह के अंक को ४ से गुणा किया तो १३३।७।१२ हुआ, दूसरे स्थान में रक्खे हुये अंक ३३।१३।४८ में ३० को युक्त किया तो ६३।१६।४८ हुआ इसका चार से गुणे हुए ग्रास १३३।७।१२ में भाग दिया तो फल स्थित्यर्द्ध २।६ हुई, स्थित्यर्द्ध को दो जगह रख के एक जगह स्थितिमर्दनार्द्ध २।६ को १० से गुणा किया तो २१।० हुआ, दूसरे जगह रक्खे हुए स्थितिमर्दनार्द्ध २।६ में २४ को युत किया तो २६।६ हुआ इसका दश से गुणी हुई स्थितिमर्दनार्द्ध में भाग दिया तो लब्धि ०।४८ मिली इसको स्थितिमर्दनार्द्ध में युत किया तो स्पष्ट स्थित्यर्द्ध २।५४

हुई। इस स्थित्यर्द्ध २।५४ को पर्वकाल ४।१६ में हीन किया तो स्पर्श काल १।२२ हुआ, स्थित्यर्द्ध २।५४ को पर्वकाल ४।१६ में युत किया तो मोक्षकाल ७।१० हुआ पर्वकाल के समान मध्यकाल ४।१६ हुआ। पूर्वानीत पर्वकाल संस्कारित द्विघ्न सूर्य २७००।४८।८ है, इसमें ४१०० को युत किया तो ६८१०।४८।८ हुआ इसमें २७०० का भाग दिया तो फल सौम्य शर का सूचक २ मिला, शेष १४७०।४८।८को १७००में हीन किया तो शेष १२२६।११।१२ बचा, पूर्व शेष से यह दूसरा शेष न्यून है इससे इसमें इसके दशमांश १२२।५५।११ को हीन किया तो सौम्य शर ११०६।१६।४१ हुआ, इसमें ८० का भाग दिया तो लब्धि १३।४२ मिली यह याम्य कृति १९।५४ हुई, और सौम्यनत ९।५२ इसकी सौम्य कृति ९९।२१ दोनों कृति भिन्न-भिन्न दिशा की हैं इससे अन्तर किया तो याम्य वलन ९३।३३ हुआ॥

इति श्रीज्यौतिषीन्द्र मुकुटमणि श्रीछत्रधर सूरिसूनुना गणक मातृप्रसादेन विरचितायां भास्वत्यां छात्रबोधिनी नाम टीकायां सूर्यग्रहणाधिकारः सप्तमः॥७॥

# अथ परिलेखाधिकारः

शरादेरङ्गुलादि मानविधिः—

मानं शरादेस्वनतस्य पञ्च-
भागोनदिक् शेषहृताङ् गुलाद्याः ।
चन्द्रार्कमानाङ गुलसंगुणा सा
खखागभक्ता वलनाङ्गुलानि ॥ १ ॥

सं० टी०---स्वनतस्य पञ्चभागोन दिक्शेषो हरः भाजकः स्यात्, शरादेः शेषहृताङ्गुलाद्याः मानं स्यात्, चन्द्रार्कमानाङ्गुल संगुणा सा खखागभक्ता वलनाङ्गुलानि भवेयुः ॥ १ ॥

"ग्राह्योनखण्डारससंगुणाच्चखपञ्चयुक्खण्डफलंविमर्दम् ।
हीनंघनंपर्वणिचन्द्रमानोर्निमीलनोन्मिलनकौभवेताम् ॥"

"स्फुट तिथ्यावसाने तु मध्यग्रहणमादिशेत् ।
स्थित्यर्द्धनाडिकाहीने ग्रासं मोक्षं तु संयुते ॥ १ ॥
निमीलनोन्मीलनाख्ये भवतां सकलग्रहे ।
तद्वदेव च मर्दार्द्धं नाडिकाहृनिशं युतर्मिति" ॥ २ ॥

भा० टी०—नत के पञ्चमांश को १० में हीन करने से हर (भाजक) होता है, इसका चन्द्रग्रहण में शर चन्द्रमान-राहुमान और ग्रास में भाग देने से, और सूर्य ग्रहण शर-सूर्यमान चन्द्रमान और ग्रास में भाग देने से शरादिकों का अङ्गुलादिक मान होता है । सूर्यग्रहण में वलन का सूर्य के मानांगुल से और चन्द्र ग्रहण में चन्द्रमा मानांगुल से गोमूत्रिका की रीति से गुणाकर उसमें ७०० का भाग देने से अंगुलादिचलन होता है ॥ १ ॥

उदाहरण—चन्द्र ग्रहण में नत ७।२९ है, इसमें ५ का भाग दिया तो लब्धि १।३६ मिली इसको १०से हीन किया तो हर ८।२४ हुआ ! शर १३२।७ है, इसको सजातीय किया तो ७९२७ हुआ इसमें सजातीय हर ५०४ का भाग दिया तो चन्द्रमान का अंगुल आदि १५।४३ मान हुआ । चन्द्रमान ९९।० है, इसको सजातीय किया तो ५९४० हुआ इसमें सजातीय हर ५०४ का भाग दिया तो चन्द्रमान अंगुल आदि ११।४७ मान हुआ । राहुमान २४७।३० है, इसको सजातीय किया तो १४८५० हुआ इसमें सजातीय हर ५०४ का भाग दिया तो राहुमान का अंगुलादि

२९।८८ मान हुआ। ग्रास ४११७ है, इसको सजातीय किया तो २४६७ हुआ इसमें सजातीय हर ५०४ का भाग दिया तो ग्रास का अंगुलादि ४।५३ मान हुआ, वलन २५८।२१ को चन्द्रमा के मान अंगुल ११।१७ से गुणा किया तो ३४४।४७ हुआ इसमें ७०० का भाग दिया तो फल अंगुलादि वलन ४।२१ हुआ।

सूर्यग्रहण में नत ९।५२ है, इसका पंचमांश १।५८ होता है इसको १० से हीन किया तो हर ८।२।। हुआ। शर ६९।१३ है, इसको सजातीय किया तो ३८५३ हुआ इसमें सजातीय हर ४८२ का भाग दिया तो शर का अंगुल आदि ७।५९ मान हुआ सूर्यमान १०३।० है, इसको सजातीय किया ६१८० हुआ इसमें सजातीय हर ४८२ का भाग दिया तो सूर्य का अंगुल आदि १२।४९ मान हुआ। चन्द्रमान ९२।० है, इसको सजातीय किया तो ५५२० हुआ इसमें सजातीय हर ४८२ का भाग दिया तो चन्द्रमान अंगुल आदि ११।२७ हुआ। ग्रास ३३।१७ है, इसको सजातीय किया तो १९९७ हुआ सजातीय हर ४८२ का भाग दिया तो ग्रास का अंगुलादि ४।८ मान हुआ। वलन ९३।३३ है, इसको सूर्य के मान अंगुल १२।९ से गुणा तो ११-६६।२० हुआ इसमें ७०० का भाग दिया तो वलन का अंगुल आदि ४।१३ मान हुआ ॥ १ ॥

### वलनदानविधिः

**चन्द्रार्कयोर्दिक्समण्डलस्य सव्यापसव्ये वलनाग्रसूत्रे।**
**मध्यादुदग्दक्षिणतः शरान्तात् तमोर्द्ध सूत्रेत्र रवीन्दुखण्डः॥२॥**

सं० टी०— रवीन्दुखण्डः मध्या दुदग्दक्षिणतः चन्द्रार्कयोर्दिक्सममण्डलस्याग्रसूत्रे सव्यापसव्येन वलनं देयं, शिलातले भूमौ वा मण्डलं कृत्वा केन्द्रमध्ये दक्षिणोत्तररेखां कुर्यात् तत्रेन्दुमण्डले पूर्वभागस्सौम्यः पश्चिमभागो याम्यः, अर्कमण्डले रेखापश्चिमभागस्सौम्यः रेखा पूर्वभागो याम्यः, यदि याम्यशरस्तदादक्षिणे वलनदानं, यदि सूर्यस्य सौम्य शरस्ततोदिक्सममण्डलादुत्तरभागे वलनदानं यदि याम्यशरस्तदादिक सममण्डलाद्दक्षिणेभागे वलनदानं देयं ततश्चन्द्रस्य सूर्यस्य वा मण्डलमध्याद् वलनमार्गेण शराङ्गुलानिदद्यात्, यत्र शरान्तात्तमोर्द्धं शरस्यान्तस्तत्रराहोर्मध्यान्तः (राहुशब्देन छादक ग्रहणं ज्ञेयम्)। राहोर्मध्ये मामांगुलार्द्धं धृत्वा सूत्रं भ्रामयेत् तेन सूत्रेण चन्द्रस्य यावत्यङ्गुलान्याच्छाद्यन्ते तावन्ति ग्रासाङ्गुलानि वाच्यानीति, यत्र सूर्यग्रहे शरस्यान्तस्तत्र चन्द्रस्य मध्यान्तः तस्मिन् चन्द्रमध्ये मानाङ्गुलार्द्धं धृत्वा सूत्रं भ्रामयेत् तेनकस्य यावत्यङ्गुलानि छाद्यन्ते तावन्ति ग्रासाङ्गुलानि वाच्यानीति, ततो वलनदानं-यदि याम्यवलनं सौम्यशरस्तदा पश्चिमाभिमुखे वलनं देयं, यत्र सौम्यवलनं याम्य

शरस्तत्र पूर्वाभिमुखे वलनं देयं, सूर्यग्रहणे विपरीतं ज्ञातव्यमिति ॥ २ ॥

"शरवलनयोः स्यातामेक राशौ यदा शशी ।
वलनं हि तदा पूर्वं भिन्ने जातौ तु पश्चिमे" ॥ १ ।

भा० टी०—चन्द्रमा या सूर्य के मानैक्य खण्डको मण्डल करके केन्द्रके मध्य में उत्तर दक्षिण रेखा करे, चन्द्रमण्डल में पूर्वभाग सौम्य पश्चिमभाग याम्य, और सूर्य-मण्डल में पश्चिमभाग याम्य संज्ञक होता है । चन्द्र का या सूर्य का सौम्यशर हो तो उत्तर वलनदान याम्यशर हो तो दक्षिण वलनदान करे, जहां पर शर का अन्त होता है, वहां राहु (छादक) का मध्यान्त होता है राहु के मध्य में मानाङ्गुलार्द्ध के सूत्रको पावे उससे चन्द्रमा का जितना अंगुल ढंके उतने ग्रास के अंगुल कहे, सूर्यग्रहण में जहां शर का अन्त होता है अथवा चन्द्रमा का मध्यान्त होता है उस चन्द्रमा के मध्य में मानाङ्गुलार्द्ध रखके सूत्र को घुमावे उससे सूर्य के जितने अंगुल ढंके उतने ग्रास के अंगुल कहे, चन्द्रग्रहण में यदि वलन दक्षिण का और शर उत्तर का हो तो पश्चिम वलन को देवे, यदि वलन उत्तर का शर दक्षिण का हो तो पूर्व में वलन को देवे सूर्यग्रहण में इसके विपरीत अर्थात् यदि वलन को देवे सूर्य ग्रहण में इसके बिपरीत अर्थात् यदि वलन दक्षिण का और शर उत्तर का हो तो पूर्व में वलन को देवे यदि वलन उत्तर और शर दक्षिण का हो तो पश्चिम में वलन को दें ॥ २ ॥

चन्द्रसूर्ययोर्मानाङ्गुलस्पष्ट करणविधिः

स्थित्यर्द्धनिघ्नै रसवेदभक्तै-
र्मानाङ्गुलैः प्राक्परतस्तदग्रात् ।
स्पर्शोथ मुक्तिश्च तदिष्टकाला-
दिग्दुग्रहेऽर्कग्रहणे प्रतीपात् ॥ ३ ॥

सं० टी०-चन्द्रमानाङ्गुलानि सूर्यमानाङ्गुलानि च स्थित्यर्द्धनिघ्नै रसवेद-भक्तैर्लब्धानि स्पर्श मोक्षाङ्गुलानि स्युः, अथ स्पर्शोऽमुक्तिश्च तदग्रात् प्रगपरतः दातव्यानीति, वलनाग्रात् स्पर्शे पूर्वभागे दातव्यानि मोक्षाङ्गुलानि परतःपश्चि-मभागे दातव्यानीति तदिष्टकालादिन्दु ग्रहे तत्पूर्वोक्त स्पर्शकालो वा मोक्षकालो ज्ञातव्यः, आर्कग्रहणे प्रतीपात् पश्चिमभागे स्पर्शकालः पूर्वभागे मोक्ष काल इति ॥ ३ ॥

*"ग्रासं नखहतं कृत्वा बिम्बमानेन भाजितम् ।

*उदाहरण—चन्द्रमा का ग्रास ४१।७।३८ को २० से गुणा किया तो ८२२।

लब्धं विशोपका ज्ञेया ग्रहणे सूर्यचन्द्रयोः" ॥ १ ॥
"धूम्रः कृष्णः पिङ्गलोऽन्शार्धसर्वं ग्रस्तश्चन्द्रोऽर्कस्तु कृष्णः सदैव" ।
*"स्थान त्रये स्थाप्य कलेर्गताब्दानत्यं भजेच्चन्द्रगुणैः फलोनः ।
द्विस्थस्तदष्टेन्दु लवे तद्युक्तस्त्रिस्थः द्विनिघ्नोऽङ्गयुतोऽद्रिभक्तः ॥ १ ॥
शेषे भवन्तीन्दु रविग्रहेऽस्मिन् पर्वाधिनाथाः शद्दशाः फलैश्च ।
ब्रह्मेन्दु शक्रोत्तरदिक्पपाशि कुबेरयोन्यन्तकृतः क्रमेण" ॥ २ ॥

भा० टी०—चन्द्रग्रहण में चन्द्रमा के मानाङ्गुल को स्थित्यर्द्ध को स्थित्यर्द्ध से गुणा करके उसमें ६ का भाग देने से और सूर्यग्रहण में सूर्य के मानांगुल को अपने स्थित्यर्द्ध से गुणा करके उसमें ४ का भाग देने से लब्धि स्पर्श-मोक्ष के अङ्गुलादि मान होते हैं, यह वलन के आगे से स्पर्श काल के अंगुल को पूर्व भाग देवे मोक्षकाल के अंगुल को पश्चिम भाग में देवे, सूर्यग्रहण में पश्चिम भाग में स्पर्शकाल पूर्व भाग में मोक्षकाल देवे ॥ ३ ॥

उदाहरण —चन्द्रमानाङ्गुल ११।४७ को २।४२ से गुणा किया तो ३१४१ हुआ इसमें ६ का भाग देने से लब्धि अङ्गुलादि ५।१८ मिली सूर्यमानाङ्गुल १२।४९

---

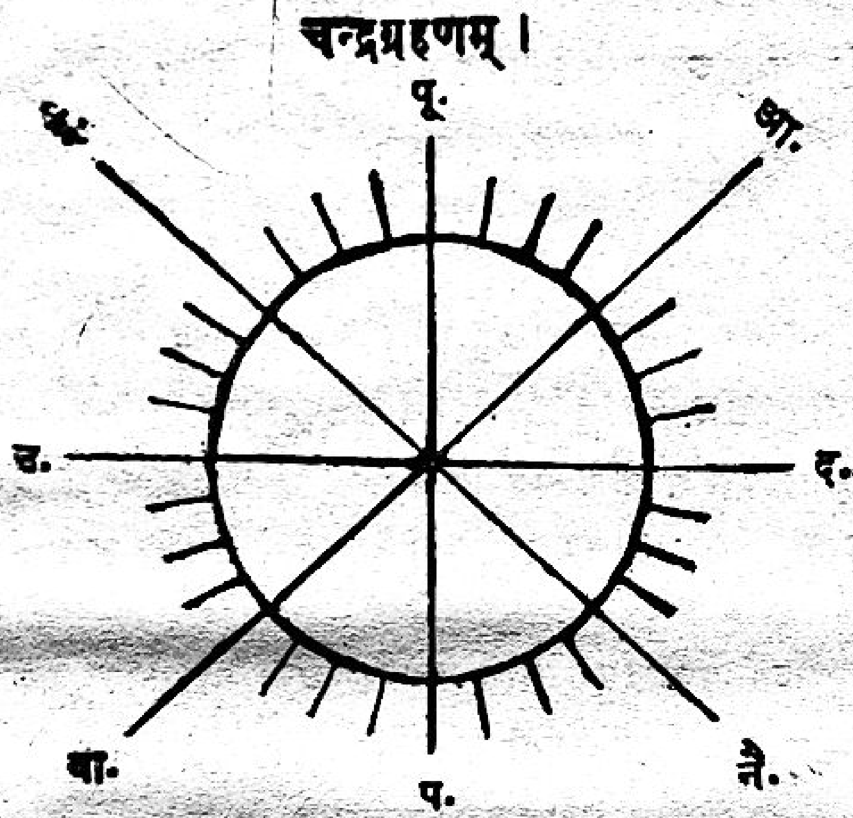
३३।४० हुआ इसमें बिम्ब १९ का भाग दिया तो लब्ध ८ विशोपका हुआ। सूर्यका ग्रास ३३ । १६ । ४८ को २० से गुणा तो ६६५।३६ हुआ इसमें बिम्ब १०३ का भाग दिया तो लब्ध ६ का बिशोपका हुआ ॥

* उदाहरण—चन्द्रग्रहण-संवत् १९६९ का है, यहां कलि की गताब्द संख्या ५०१३ है इसको तीन जगह में स्थापित किया। तीसरे जगह में ३१ का भाग दिया तो लब्धि १६१ मिली इसको दूसरे स्थान के अंक ५०१३ में घटाया तो ४८५२ हुआ इसमें १८ का भाग दिया तो २६९ मिली इसको प्रथम स्थान में स्थापित किये हुये अंक ५०१३ में युत किया तो ५२८२ हुआ इसको २ से गुणा तो १०५६४ हुआ इसमें ६ को युत किया तो १०५७० हुआ इसमें ७ का भाग देने से शेष ७ बचा इससे सातवां पर्वाधिप यम हुआ ॥

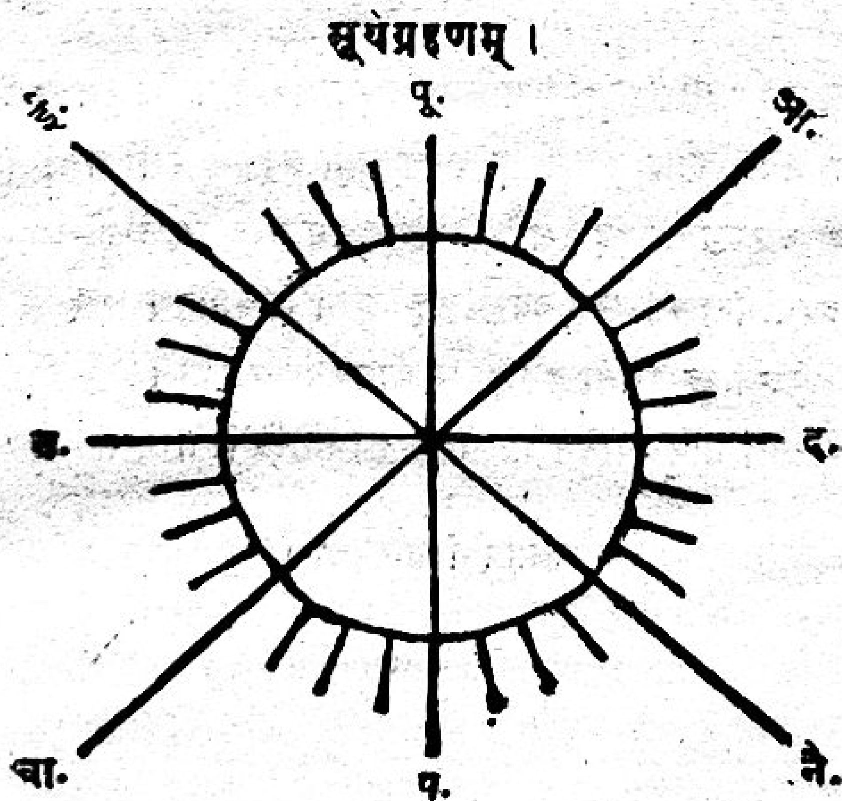
सूर्य ग्रहण-संवत् १९६८ का है यहां कलिगताब्द संख्या ५०१२ है इसको तीन जगह रक्खे तीसरे जगह के अंक ५०१२ में ३१ का भाग दिया तो लब्धि १६१ मिली इसको दूसरे जगह में रक्खे हुए ५०१२ में हीन किया तो ४८५१ हुआ इस १८ का भाग दिया तो लब्धि २६९ मिली इसको पहले जगह में रक्खे हुए ५०१२ युत किया तो ५२८१ हुआ इसको २ से गुणा किया तो १०५६२ हुआ इस में ६ को युत किया तो १०५६८ हुआ इसमें ७ का भाग देने से शेष ५ बचा इससे पाँचवां पर्वाधिपति वरुण हुआ ॥

को स्थित्यर्द्ध २।५४ से गुणा किया तो २७।१० हुआ इसमें ४ का भाग देने से लब्धि अंगुलादि ९।१७ मिली ॥ ३ ॥

चन्द्रग्रहणम् ।




सूर्यग्रहणम् ।



ग्रन्थनिर्माणकालज्ञानम्

खखाश्विवेदोपगते युगाब्दे दिव्योक्तितः श्रीपुरुषोत्तमस्य ।
श्रीमाञ्छतानन्द इतीदमाह सरस्वतीशङ्करयोस्तनूजः ॥ ४ ॥

इति श्रीमाञ्छतानन्द विरचितायां भास्वत्याः परि-
लेखाधिकारोऽष्टमः ॥ ८ ॥



सं० टी० —सरस्वती शङ्करयोस्तनूजः श्रीमाञ्छतानन्द इति खखाश्विवेदी-पगते युगाब्दे श्रीपुरुषोत्तमस्य सूर्यस्य दिव्योक्तित इदमाह ॥ ४ ॥

भा० टी०—सरस्वती शङ्कर के पुत्र जो श्रीमान् शतानन्द वह श्री सूर्य भगवान् की दिव्य उक्ति से ४२०० युगाब्द ( शाका १०२१ ) में इस भास्वती पुस्तक को बनाया ॥ ४ ॥

इति श्रीज्यौतिषीन्द्रमुकुटमणि श्री१छत्रधर सूरिसूनुना गणक-
मातृप्रसाद विरचितायां भास्वत्याः छात्रबोधिनीनाम
टीकायां परिलेखाधिकारोऽष्टमः ॥ ८ ॥



श्री १०८ सांकृत्य कुले मनीषि मुकुटो विश्वेश्वरोऽभूत्ततः
श्री १०८ कालीचरणोऽङ्ग दर्शन बुधो सद्धर्म वेत्ता ततः ।
श्री ६मच्छत्रधराद् धरैक गणकान्मातृ प्रसादोऽस्तियस्-
त्र्यग्रोभेन्दुलसच्छके व्यरचयत् टीकां शिवप्रीतये ॥ १ ॥
पञ्चाङ्ग रचना क्लेश निश्शेषकरणोन्मुखी ।
कृता मातृप्रसादेन भास्वत्यां छात्रबोधिनी ॥ २ ॥

समाप्तेयं भास्वती ।



# श्लोकानुक्रमणिका

—०:०:०—